RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹:20

केशव संवाद

चैत्र-बैशाख विक्रम सम्वत् 2079 (अप्रैल -2022)

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
नव संवत्सर
विक्रम संवत् 2079

अप्रैल 2022, चैत्र - वैशाख विक्रम सम्वत् 2079 हिन्दी पंचांग

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
*युगादी, गुड़ी पड़वा विक्रम सम्वत 2079 प्रारंभ	सम्पर्क सूत्र @ 9313536451				1 चैत्र अमावस्या चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या	2 प्रथम नवरात्र नववर्ष प्रारंभ* चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा
3 मत्स्य जयन्ती चैत्र शुक्ल पक्ष द्वितीया	4 गौरी तृतीया गणगौर चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया	5 लक्ष्मी पंचमी चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	6 चैत्र शुक्ल पक्ष पंचमी	7 यमुना छठ चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी	8 चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	9 श्री दुर्गा अष्टमी चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी
10 श्री राम नवमी चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	11 चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	12 कामदा एकादशी चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी	13 चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	14 मेष संक्रान्ति महावीर जयंती वैशाखी चैत्र शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	15 चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	16 हनुमान जयंती गंगास्नान पूर्णिमा चैत्र पूर्णिमा पूर्णिमा
17 शुक्र उदय वैशाख कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	18 वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया	19 श्री गणेश चतुर्थी वैशाख कृष्ण पक्ष तृतीया	20 वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्थी	21 वैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी	22 वैशाख कृष्ण पक्ष षष्ठी	23 वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी/अष्टमी
24 वैशाख कृष्ण पक्ष नवमी	25 वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी	26 बरूथिनी एकादशी वैशाख कृष्ण पक्ष एकादशी	27 वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	28 वैशाख कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	29 वैशाख कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	30 वैशाख अमावस्या वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या

अप्रैल 2022 त्यौहार

चैत्र - वैशाख 2079

01 शुक्रवार	चैत्र अमावस्या, इष्टि	02 शनिवार	युगादी, गुड़ी पड़वा, चैत्र नवरात्रि, चन्द्र दर्शन	03 रविवार	मत्स्य जयन्ती
04 सोमवार	गौरी पूजा, गणगौर	05 मंगलवार	लक्ष्मी पञ्चमी	07 बृहस्पतिवार	यमुना छठ
10 रविवार	राम नवमी, स्वामीनारायण जयन्ती	12 मंगलवार	कामदा एकादशी	13 बुधवार	वैष्णव कामदा एकादशी
14 बृहस्पतिवार	मेष संक्रान्ति, सोलर नववर्ष, प्रदोष व्रत	16 शनिवार	हनुमान जयन्ती, चैत्र पूर्णिमा, अन्वाधान	17 रविवार	इष्टि
19 मंगलवार	विकट संकष्टी चतुर्थी	26 मंगलवार	बरूथिनी एकादशी	28 बृहस्पतिवार	प्रदोष व्रत
		30 शनिवार	दर्श अमावस्या, अन्वाधान, वैशाख अमावस्या		

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

अप्रैल, 2022
वर्ष : 22 अंक : 04

अणंज कुमार त्यागी
अध्यक्ष
प्रे. शो. सं. न्यास

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

संपादक मंडल
डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. अखिलेश मिश्र,
डॉ. नीलम कुमारी, रामकुमार शर्मा
डॉ. मनमोहन सिंह, अनीता चौधरी
अनुपमा अग्रवाल

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301
फोन न. 0120 4565851, 2400335
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernanews.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से
मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा
चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि.
नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन
105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड
मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

नव संवत्सर का महत्व	– आर.एस.डी. चातक	05
हिन्दू संवत की वैज्ञानिक तथा आधुनिकता	– प्रो. बी.एस. राजपूत	06
नव संवत्सर और विक्रमादित्य	– डॉ. वेद प्रकाश शर्मा	08
हिन्दू नव वर्ष को कितना समझते हैं आज के युवा	– मोहित कुमार	09
सृष्टि में उत्सव नवसंवत्सरोत्सव	– ज्योति सिंह	10
आत्मशुद्धि का साधन नवरात्र	– डॉ. प्रताप निर्भय सिंह	12
हिन्दू नव वर्ष	– पवन कुमार	14
हिन्दुत्व व सामाजिक न्याय की विजय	– प्रो. (डॉ.) अनिल निगम	15
हमारा प्रखर राष्ट्रवाद	– नरेन्द्र भदौरिया	16
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा – अपना नवषर्व	– मृत्युंजय दीक्षित	17
वैश्विक ज्ञानदा नालंदा विश्वविद्यालय	– प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह	18
संस्कृत के साथ उचित व्यवहार की अपेक्षा	– प्रमोद भार्गव	20
जल ही जीवन है	– प्रशांत त्रिपाठी	22
विश्व मानचित्र पर भारत का बढ़ता प्रभाव	– पंकज जायस्वाल	24
कश्मीर फाइल्स के बहाने	– देवांशु झा	25
परहित सरिस धर्म नहीं भाई परपीड़ा सम नहि अधिमाई	– अनुपमा अग्रवाल	26
उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड में अप्रैल में बोए जाने...	– डॉ. एस. के. त्यागी	27
महानगर वाले मुम्बई में सब गांव वाले	– नीलम भागी	28
भारत का पहला ई-कचरा इको पार्क	– रंजना मिश्रा	30
आईआईटी खड़गपुर के तथ्यात्मक एवं...	– प्रणय कुमार	31
पर्यावरण संरक्षण कितना जरूरी	– राहुल अरोडा	33
पत्रिका के मार्च अंक की समीक्षा	– डॉ. प्रियंका सिंह	35

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail-com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

कालखंड से ही समय समय पर भगवा ने भारत के भाग्य के अध्याय को स्वर्णिम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उत्तर प्रदेश में योगी राज के दूसरे अध्याय के शपथ ग्रहण समारोह के लिए जब मंच सजा तो वो दृश्य ये साफ संकेत दे रहा था कि भगवा के अस्तित्व को मिटाना इतना आसान नहीं है।

शपथ से पहले ही जो तस्वीरें सामने आ रही थीं वो बता रहीं थी कि जनता ने रामराज्य के जिस परिकल्पना के साथ एक भगवाधारी योगी के ऊपर जो विश्वास जताया, वो उन्हें कम से कम उन्हें सुरक्षा और विकास की गारंटी तो प्रदान करेगा ही। अपराधी तथा गुंडे बुलडोजर वाले बाबा की डर से थाने की दौड़ लगा रहे हैं। बहुआयामी विकास समाज के हर जनमानस को भी अपनी भूमिका तय करने के लिए प्रेरित कर रहा है। चारों दिशाओं में चर्चा भले उत्तर प्रदेश की हो रही है लेकिन प्रभाव पूरे भारत पर इसका है। इस शपथ के साथ ही एक बार फिर भगवा यानी केसरिया रंग से लिखे जाने वाले स्वर्णिम युग की शुरुआत हो चुकी है। केसरिया एक रंग ही नहीं अपितु एक भावना है जो त्याग और समर्पण का प्रतीक है। इस रंग से ओतप्रोत प्रकृति भी मानो खिलखिलाती हुई सी इस स्वर्णिम युग का आगाज कर रही है।

'चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि' हिन्दू नववर्ष (विक्रम संवत् 2079) का प्रारम्भ 2 अप्रैल चौत्र मास शुक्लपक्ष प्रतिपदा से प्रारम्भ होगा। चूंकि 2 अप्रैल का दिन शनिवार है इसलिए शनिदेव का विशेष महत्व पूरे वर्ष रहेगा। प्रथम दिन से आदि शक्ति पर्व नवरात्र अपने आप में आध्यात्मिकता और ऊर्जा से परिपूर्ण है। चारों ओर सकारात्मकता का प्रवाह होता है। संपूर्ण प्रकृति नवयौवना सी दृष्टिगोचर होती है। चैत्रशुक्ल प्रतिपदा ऋतुराज बसन्त के आगमन की पहली तिथि होती है। सम्पूर्ण भौतिक जगत, वृक्ष, लता, जल, आकाश व वायुमण्डल सभी में परिवर्तन होने लगता है। वेदों में इस संवत्सर को प्रजापति (ब्रह्मा) ही कहा गया। इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। इतना ही नहीं सतयुग में चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को भगवान् विष्णु ने मत्स्य रूप में अवतार लिया। हिन्दू सवंत् की वैज्ञानिकता व इसके महत्व से हमारी आने वाली पीढ़ी अनभिज्ञ है। अप्रैल के इस अंक में प्रकाशित लेख तथ्यों के आधार पर हिन्दू नववर्ष का वर्णन किया गया है।

सभी सुधी पाठकों को हिन्दू नववर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। आइये हम सभी उत्साह के साथ चैत्र प्रतिपदा का स्वागत करें तथा हिन्दू संस्कृति के सच्चे संवाहक बनें।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

नव संवत्सर का महत्व

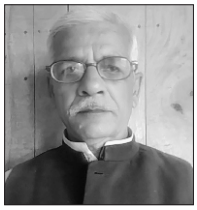

आर.एस.डी. 'चातक'

सृष्टि की निरन्तरता ही समय है। यह एक अनवरत काल–चक्र है जो कभी समाप्त नहीं हो सकता, जो कभी स्थिर नहीं रह सकता, इसकी पुनरावृत्ति नहीं हो सकती। किसी काल विशेष या इतिहास विशेष की भूमिका इंगित करने के लिए ऋषियों और कालजयी विद्वत् विभूतियों ने इसे विभिन्न शीर्षकों से सम्बोधित किया है जैसे कल्प, युग, शताब्दी आदि। आध्यात्मिक और राजनैतिक सन्दर्भ में किसी ऐतिहासिक महापुरुष के नाम पर भी इन काल–खण्डों का नामकरण किया जाता रहा है। यह प्रथा वेद, शास्त्र, पुराण आदि के समय में भी थी या नहीं, यह गहन शोध का विषय है तथापि वैदिक युग या पौराणिक युग इसी तथ्य का संकेत देते हैं। इसी सन्दर्भ में सम्वतसर का शीर्षक एक महापुरुष के निश्चित काल–खण्ड के प्रारम्भ का संकेत देता है। हमारे भारत देश में सर्वाधिक मान्यता प्राप्त विक्रम संवत एक ऐसे काल–खण्ड का प्रारम्भ है जो अपनी प्रासंगिक व तत्कालीन मान्यताओं और सामाजिक मूल्यों के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

विक्रम संवत अत्यन्त प्राचीन सम्वत है साथ ही यह गणित की दृष्टि से अत्यन्त सुगम और सर्वथा उपयुक्त आकलन प्रस्तुत करता है। किसी नवीन संवत को प्रारम्भ करने की शास्त्रीय विधि यह है कि जिस नरेश को अपना संवत प्रारम्भ करना हो उसे संवत प्रारम्भ करने से पूर्व कम से कम अपने पूरे राज्य में जितने भी लोग किसी के ऋणी हों, उनका ऋण अपनी ओर से चुका देना चाहिए। विक्रम संवत के प्रणेता सम्राट विक्रमादित्य को माना जाता है। कालिदास इस महान सम्राट के रत्न कहे जाते हैं। कहना नहीं होगा कि भारत के बाहर इस नियम का कही पालन नहीं किया गया। भारत में भी महापुरुषों के संवत उनके अनुयायियों ने श्रद्धावश ही चलाये किन्तु भारत का सर्वमान्य सम्वत 'विक्रम संवत' ही है और सम्राट विक्रमादित्य ने देश के सम्पूर्ण ऋण को, चाहे वह जिस व्यक्ति का और कैसा भी रहा हो, स्वयं चुका कर अपने नाम के इस सम्वत को प्रारम्भ किया।

प्रजा अथवा जन सामान्य के लिए यह उदारता पूर्ण सत्कर्म हमारे लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है और यह भी इस संवत की एक विशेष महानता है। इस संवत के महीनों के नाम विदेशी संवत की भाँति देवता, मनुष्य या संख्या वाचक कृत्रिम नाम नहीं हैं। यही नियम तिथि तथा अंश (दिनांक) के सम्बन्ध में भी है जो विशेष महत्त्व की है। इस संवत के नाम सूर्य, चन्द्र की गति पर आश्रित हैं। सारांश यह कि यह संवत अपने अंग–उपांगों के साथ पूर्णतः वैज्ञानिक सत्य पर स्थित है। सम्राट विक्रमादित्य की न्यायप्रियता, उनकी धार्मिक आस्था, उनका मानवीय दृष्टिकोण एक पवित्र काल–खण्ड का स्मरण कराता है। यह एक ऐसा संवत है जिसमें संस्कार और संस्कृति की समस्त गुणवत्ता समाहित है। इस संवत के अनुसार किसी काल–खण्ड को इंगित करने वाला अभिलेख हिन्दू पंचांग के नाम से भी प्रसिद्ध है। जैसा कि नाम से स्पष्ट है इस संवत के पञ्चाङ्ग में हिन्दू धर्म के अनुसार वे समस्त सूचनायें अंकित हैं। यह एक ऐसे काल–खण्ड के प्रारम्भ की विशद सूची है जिसमें भारतीय संस्कृति के समस्त उन्नत सोपान सृजित किये गये हैं। साहित्यिक उन्नयन की दृष्टि से हिन्दी और संस्कृत भाषा का परिष्कृत स्वरुप इसी संवत में हुआ है।

इस संवत का प्रारम्भ वार्षिक समय के आधार पर चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होता है। यद्यपि इस संवत के निर्धारण के सन्दर्भ में विद्वानों में मतभेद भी हैं किन्तु हमारे हिन्दुत्व का प्रतीक यह संवत अपनी विशुद्ध समयसारिणी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। विक्रम संवत का नाम लेते ही हमारे मन में प्राच्य संस्कृति का एक पवित्र काल–खण्ड परोक्ष रूप से सामने उपस्थित हो जाता है। हमारी मानसिकता वैदिक आस्था से स्वतः सम्बद्ध हो जाती है।

यह संवत भारतीय संस्कृति के स्मरण का अक्षुण्ण कोश है। यह इसकी अपूर्व महत्ता है। इसका प्रारम्भ नवरात्रि के पावन महोत्सव से ही होना सर्वाधिक शुचिता का विषय है जिसमें नवदुर्गा का पूजन–अर्चन नारी शक्ति के प्रति सम्मान करने की प्रबल प्रेरणा प्रदान करता है। नारी की महत्ता और उसकी भूमिका का प्रासंगिक संज्ञान हमारे हृदय में पवित्र भावना को उत्पन्न करता है। सृष्टि का एक प्रबल पक्ष नारी ही है जिसे साङ्ख्य शास्त्र प्रकृति की संज्ञा देता है और मानव को पुरुष की। प्रकृति और पुरुष का समष्टि दर्शन ही सृष्टि का सौन्दर्य है।

इसी नवरात्रि में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म एक विशिष्ट अवसर है जो मानव जगत को मर्यादा के अनुपालन का सुदृढ़ प्रेरणा देता है। हमारी धार्मिक आस्था और नैतिक मूल्यों का स्पष्ट विवेचन है विक्रम संवत जिसके अनुसार हमारा देश अपने गौरवशाली इतिहास के लिए विश्व प्रसिद्ध है। हमारे समस्त धार्मिक और नैतिक पर्व इसी विक्रम संवत द्वारा ही निर्देशित होते हैं जो इसकी धार्मिक विशिष्टता है। समाज में धर्म और नीति संरक्ष्य ऐतिहासिक परम्परा का सांगोपांग निर्वहन इस सम्वत की महत्त्वपूर्ण व्याख्या है जो समाज को धर्म और नीति से अनवरत सम्बद्ध रखती है। समस्त पर्वों का निर्धारण और उनका समय से अनुपालन करना इस व्याख्या के द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

वर्तमान सम्वत का समापन और उसका नव प्रारम्भ शीघ्र ही हो रहा है। ऐसे अवसर पर हमारे उत्तरदायित्व किस अंश तक सफल रहे और हमें अपेक्षाकृत और कितना अधिक सचेष्ट होना है यह सर्वथा चिन्तन का विषय है। भारतीय संस्कृति और संस्कारों के मूल्यों के अनुपालन की सुनिश्चितता हमारा धार्मिक और नैतिक कर्त्तव्य है। यही संवतसर है जो हमको हमारे धार्मिक पर्वों के इतिहास को अग्रसर रख सकने में सर्वदा सहयोग करता है। हमारे पर्व अपने से सम्बन्धित वैदिक, पौराणिक और शास्त्र सम्मत मूल्यों के प्रति जाग्रत रहने की प्रेरणा देते हैं। यह संवत अपने सुदृढ़ अभिलेखों के अनुसार हमारी धार्मिक आस्था को समय समय पर स्मरण कराता है और उसे अग्रिम पीढ़ी को अग्रसारित करने के लिए आवश्यक अवसर प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह संवत हमको हमारी सम्पूर्ण मानवीय जीवन प्रणाली से परिचित कराता है। धर्म और नीति के आदर्श इतिहास को अखण्ड रखने में सर्वथा प्रासंगिक सन्देश देकर उत्तरदायित्व का निर्वहण करने में महत्वपूर्ण भूमिका का उपमान प्रस्तुत करता है। यह एक मात्र संवत है जो सर्वधर्म समभाव का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मानवता की रक्षा करने का संकल्प देता है। इसके माध्यम से ही हम विशेष तिथियों पर अपने आदर्श महापुरुषों, ऋषियों, समाज सुधारकों और देवदूतों का आदर करने का अवसर प्राप्त करते हैं और भावी पीढ़ी को यही आदर्श हस्तान्तरित करते हैं।

(लेखक शिक्षाविद एवं रचनाकार हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

हिन्दू संवत् की वैज्ञानिक तथा आधुनिकता

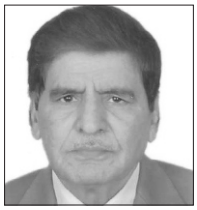

प्रो. बलवन्त सिंह राजपूत

प्राचीन भारतीय खगोलिकी में कालचक्र, राशिचक्र तथा नक्षत्रों का विस्तृत वर्णन मिलता है। प्राचीन भारत में लब्धप्रतिष्ठित खगोल शास्त्रियों में लगध (१५०० ई० पूर्व) का वेदांग ज्योतिष, आर्याभात्त प्रथम (४७६ ई०) का आर्याभात्तिया–सिद्धांत, वराहमिहिर (2 ई० पू०) की पंचसिद्धान्तिका तथा व्रह्त्संम्हिता, भास्कर प्रथम (६००ई०) का महाभास्करिया तथा ब्रह्मगुप्त (६०० ई०) का ब्रह्मस्फुट सिद्धांत प्रसिद्द हैं। आर्याभत्त द्वितीय (६५३ ई०) का महासिद्धांत, श्रीपति (६६६ ई०) का सिद्धांत– शेखर एवं ज्योतिमाला, उज्जैनी के राजा भोज (१०००ई०) विरचित राजमार्तंद तथा विद्वज्जन–बल्लभ खगोल विद्या के सुप्रसिद्ध भारतीय ग्रन्थ हैं। भास्कर द्वितीय (१११४ ई०) के सिद्धांत शिरोमणि, लीलावती बीजगनितम व कर्न्कौतुहल भी भारतीय खगोल विद्या के प्रमाणभूत ग्रन्थ है। इन सभी ग्रंथो में कालगणना के लिए मनुसम्वत, मान्धाता– संवत्, राम– संवत् , युद्धिष्ठिर– संवत् (कलि–संवत्) तथा विक्रम– संवत् का प्रमुख रूप से उल्लेख है। अन्य अनेक ग्रंथो में युद्धिष्ठिर– संवत् (कलि– संवत्) तथा विक्रम–संवत् का मुख्य रूप से प्रयोग किया गया है। युद्धिष्ठिर– संवत् (कलि–संवत्) का प्रारंभ ३१०२ ई० पू० महाभारत के बाद से माना जाता है। विक्रम संवत् शकों पर विजय के स्मृत्योत्सव के रूप में मनाने के लिए उज्जैनी के प्रसिद्द ऐतिहासिक एवं महा प्रतापी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा ५७ ई० पू० में प्रारंभ किया गया था। इसे ही वर्तमान में भी भारतीयों द्वारा कालगणना की प्रमाणिक प्रणाली के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अनुसार नववर्ष का आरंभ चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। आकाश में दृश्यमान सूर्यपथ को १२ सामान (प्रत्येक 30 अंश) भागों में बांटा गया है जिन्हें राशि कहा जाता है। नक्षत्रों की सहायता से चंद्रमा के पथ को अंकित करने का प्रचलन इस संवत् में है। प्रत्येक नक्षत्र १३ डिग्री, २० मि० के बराबर है। फिर इसे चार बराबर भागो में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक भाग (पाद) का मान ३ डिग्री २० मि० है तथा प्रत्येक राशी २.२५ नक्षत्रों अथवा पादों से बनी है। मास, पक्ष और तिथि भारतीय कैलेंडर के महत्वपूर्ण अंग हैं। चंद्रमा पूर्णिमा के दिन जिस नक्षत्र में होता है चंद्रमास का नाम उसी नक्षत्र के नाम पर रखा गया है। मास का पता लग जाने पर आकाश में तारों के स्थान व ऋतुओं का ज्ञान स्वतः हो जाता है। मासों को 6 ऋतुओं में बांटा गया है। यजुर्वेद में १२ मासों के नाम एवं 6 ऋतुओं के नाम दिए गए हैं। इनमें चैत्र–बैसाख के स्थान पर मधु–माधव; ज्येष्ठ–आषाढ़ के स्थान पर शुक्र–शुचि; श्रावन–भाद्रपद के स्थान पर नभस–नभस्य; अश्विन–कार्तिक के स्थान पर ईष–ऊर्ज, मार्गशीष–पौष के स्थान पर सहस–सहस्य तथा माघ–फाल्गुन के स्थान पर तपंस–तपस्य रखा गया था।

मधुश्च माधवश्च वासंतिकवृतू। (यजुर्वेद, १३.२५)
शुक्रश्च शुचिश्य ग्रैस्माव्रतू। (यजुर्वेद, १४.६)
नभश्च नभस्यशच वार्शिकाव्रतू। (यजुर्वेद, १४.१५)
इषश्चोर्ज्श्चे शारदाव्रतू। (यजुर्वेद, १४.१६)
सहश्च सहस्यश्च हेमान्तिकाव्रतू। (यजुर्वेद, १४.२७)
तपश्च तपस्यश्च शैशिराव्रतू। (यजुर्वेद, १४.५७)

यजुर्वेद में वर्णित विक्रमी संवत् के महीनों के ये नाम संबंधित ऋतुओं के स्वभाव एवं मौसम के वैज्ञानिक पक्ष को अधिक स्पष्टता के साथ दर्शाते हैं क्योंकि महर्षि पतंजलि के वैज्ञानिक मंतव्य के अनुसार;

'यच्छाब्द आह तदस्माकं प्रमाणं' अर्थात् जो शब्द कहता है वही हमारे लिए प्रमाण है।

विक्रम संवत में वर्ष की रचना सौरवर्ष तथा चन्द्रवर्ष के रूप में की गयी है। ३६५.२५६ दिन के सौरवर्ष तथा ३५४.३७२ (२६.५६३ x१२) दिन के चन्द्रवर्ष का अंतर १०.८८४ दिन का है। यदि यह अंतर संचित हो जाये तो चंद्रमास और ऋतुओं का तारतम्य समाप्त हो जायेगा। अतः जब सौरमासो और चंद्रमासो का अंतर कुल मिलकर एक चंद्रमास के बराबर हो जाता है तब वर्ष में एक अधिक मास जोड़ दिया जाता है जिसे मलमास कहा जाता है। ऐसा ३३ सौरमासो में एक बार होता है। दो सौरमासों की एक ऋतु होती है और तीन ऋतुओं का एक अयन होता है। दो अयनो का एक वर्ष माना जाता है। अथर्वेद के एक मन्त्र (३.१०.६) में संवत्सर को निरुपित करते हुवे ऋतु, आर्तव, हयान, समां, मास का उल्लेख किया गया है;

ऋतुना यज.....आर्तवान उत हायनान।
समाः संवर्म्रान मासान..... ।। (अथर्वेद, ३.१०.६)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र (२२०.३०) में काल को तुट या त्रुटी, लव, निमेश, कष्ट, कला, नालिका, मुहूर्त, पूर्भाग, अपर्भाग, दिवस, राशि,पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, आदि इकाईयों में विभक्त किया गया है।

भारत में विक्रम संवत का नववर्ष दिवस चैत्र प्रतिपदा (चैत्र शुक्लपक्ष का प्रथम दिन) अंग्रेजी माह मार्च–अप्रैल में आता है जिसे चंद्रगति गणना के अनुसार निर्धारित किया जाता है। सूर्य गति गणना के अनुसार यह नववर्ष बैशाखी से शुरू होता है। जैसे असम में बिहू, तमिलनाडू में पुथांडू, केरल में विशु, उडीषा में पना, बंगाल में पोयाला बौषक तथा कश्मीर में नवराह के रूप में हिन्दू नववर्ष मनाया जाता है। पंजाब में भी नववर्ष बैशाखी के रूप में मनाया जाता है जो अंग्रेजी माह १४ अप्रैल पर आता है। इसे नानकशाही कैलेन्डर के वर्ष के प्रथम दिवस के रूप में मनाते हैं। महाराष्ट्र में हिन्दू नव वर्ष को गुडी–पडवा के रूप में मनाते हैं।

विक्रम संवत् का इतना दृढ गणितिक आधार होने के साथ ही इसके पक्ष में अनेक वैज्ञानिक प्रमाण भी है। मकर संक्रांति के बाद से ही सूर्य उत्तरायनी हो जाता है तथा धरती पर पड़ने वाली उसकी किरणें सीधी होने लगती हैं जिससे शीतकालीन धुंध और कुहासा छंटने लगता है, शीत काल की व्यथा से सभी प्राणी मुक्त होते प्रतीत होने लगते हैं तथा चारों ओर उत्साह का उदय होने लगता है। फाल्गुन आते–आते प्रकृति का रूप निख़रने लगता है, प्रकृति दुल्हन का सा रूप धारण करने लगती है तथा धरती माता शस्य– श्यामल हो जाती है। फाल्गुन की समाप्ति के साथ ही रवि की फसल किसानो के घरो में आने लगती है

ISSN No. 2581-3528

जिस से हमारे कृषि प्रधान देश में चारों ओर खुशहाली का उत्साह भर जाता है तथा नितांत परिश्रमी कृषक का अन्नदाता का रूप प्रकट होने लगता है। इसके साथ ही धरती अन्नपूर्णा माँ का रूप धारण करती प्रतीत होने लगती है। वृक्षों में नव किसलय फूटने लगते हैं, उद्यानों में वृक्षों पर बौर आने लगता है, सारी धरती हरित त्रनो के नोकों से ढकी लगने लगती है। चैत्र प्रतिपदा से प्रकृति में जैसे नव सर्जन प्रारंभ हो जाता है। पेड़ पौधों में नव अंकुर प्रस्फुटित होने लगते है, रंग बिरंगे नए पुष्प खिलने लगते है यहाँ तक की जंगली घास में भी फूल खिल जाते हैं। पशुपक्षियो में भी नव सृजन होने लगता है चारों ओर विकास मूर्तिमान हो उठता है और सारा जगत नव सृजन युक्त हो जाता है। इसीलिए नव वर्ष प्रारंभ होने से नौ दिनों के लिए लगता है कि स्वयं जगतजननी दुर्गा धरती पर उतर आई है। लगने लगता है कि संभवतः इसी दिन ब्रहमांड में जीवन प्रारंभ हुआ था। इन्ही भावनाओं को विक्रमी संवत् के नववर्ष दिवस से नौ दिनों तक नवरात्रों में दुर्गा पूजा के माध्यम से प्रकट किया जाता है। चैत्र प्रतिपदा (नव वर्ष दिवस) से प्रकृति की स्वतंत्र उर्जा तथा पदार्थ से सुगंधित ऊर्जा उच्चतम अवस्था में होती हैं। पदार्थ से सुगंधित उर्जा का उल्लेख महर्षि कणाद द्वारा प्रतिपादित वैशेषिक दर्शन में अनेक स्थानों पर मिलता है। नवरात्रों में पूजा में दुर्गासप्तशती का निरंतर पाठ किया जाता है जिसके विभिन्न अध्यायों में क्रमबद्ध श्लोक प्रकृति की स्वतंत्र ऊर्जा तथा पदार्थ– सुगंधित ऊर्जा की नौ प्रकार की अभिव्यक्तिया हैं। शब्द सती तथा दुर्गा प्राचीन काल से ही हमारी उर्जा की संकल्पना के द्योतक हैं। नववर्ष के प्रथम दिन पूजित शैलपुत्री ब्रह्माण्ड के उद्भव से पूर्व व्याप्त निष्क्रिय– पदार्थ (डार्क मैटर) से युग्मित निष्क्रिय– ऊर्जा (डार्क एनर्जी) का मूर्तीकरण (मानवीकरण) है। आधुनिक उच्च ऊर्जा भौतिकी तथा खगोल भौतिकी में अनेक प्रयोगों तथा प्रेक्षणों के निष्कर्षो में ये सिद्ध किया जा चुका है कि ब्रहमांड में व्याप्त सकल पदार्थ एवं ऊर्जा का ८० प्रतिशत निष्क्रिय–पदार्थ एवं निष्क्रिय–उर्जा है तथा ब्रह्माण्ड के सृजन से पूर्व भी ये निष्क्रिय–ऊर्जा एवं निष्क्रिय–पदार्थ अस्तित्व में थे तथा ब्रह्माण्ड के विलय के पश्चात भी इनका अस्तित्व रहेगा। इन्ही के कारण गतिमान ब्रह्माण्ड में संतुलन एवं स्थायित्व बना रहता है। विक्रमी संवत के प्रथम दिन पूजित शैलपुत्री इन्ही निष्क्रिय–उर्जा एवं इस से सुगंधित निष्क्रिय–पदार्थ की द्योतक है। विक्रम संवत के द्वित्य नवरात्रे में पूजित ब्रह्मचारिणी किसी भी प्रकार के पदार्थ से मुक्त स्वतंत्र ऊर्जा की प्रतीक है जो स्वतंत्र रूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में गतिशील हो जाती है और निरंतर दोलन करती रहती है। त्रत्ये नवरात्रे में प्रतिष्ठित चंद्रघंटा अनहत नाद की ऊर्जा का मानवीकरण है तथा चतुर्थ नवरात्रे में पूजित कुष्मांडा भूगर्भ–ऊष्मा की ऊर्जा का मानवीकरण है। विक्रम संवत के पांचवे नवरात्रे में प्रतिष्ठित स्कंदमाता ब्रह्माण्ड में व्याप्त विद्युत–चुम्बकीय ऊर्जा का मानवीकरण है तथा सष्ट्मी को पूजित कात्यायिनी ब्रह्माण्ड में व्याप्त तरंग–ऊर्जा (निर्बल–बल की ऊर्जा) का मानवीकरण है। सप्तमी को पूजित कालरात्रि सम्पूर्ण जगत का विनाश कर सकने में सक्षम नाभिकीय उर्जा (प्रबल–बल की ऊर्जा) का सटीक मानवीकरण है। विक्रम संवत् की अष्टमी को प्रतिष्ठित महागौरी बहुत तीव्र वेग से गतिमान ऊर्जा का मानवीकरण है जो पदार्थ के सम्पूर्ण ऊर्जा रूपांतरण से प्राप्त होती है। नवम नवरात्रे में प्रतिष्ठित सिद्धिदात्री ऊर्जा के सम्पूर्ण ज्ञान के केंद्र का मानवीकरण है। इस प्रकार विक्रम संवत के प्रथम नौ दिनो में प्रकृति की प्रत्येक प्रकार की ऊर्जा के प्रकटीकरण को माना गया है। प्रकृति के समस्त बलों (विद्युत–चुम्बकीय बल, नाभकीय क्षरण में प्रयुक्त निर्बल बल, नाभकीय विखंडन में प्रयुक्त सबल–बल तथा गुरुत्वीय बल) में व्याप्त ऊर्जाओं की उपासना इन दिनों में की जाती है और समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु इन उर्जाओं का आवाहन किया जाता है। इस प्रकार विक्रम संवत के प्रथम दिन (नववर्ष दिवस) एवं इसके बाद के आठ दिनों का बहुत गहन वैज्ञानिक आधार है।

हिन्दू नववर्ष इस्लाम तथा ईसाई नव वर्षों के प्रचलन से बहुत अधिक प्राचीन है तथा इसका गणितीय एवं वैज्ञानिक आधार है एवं ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक महत्व है। इसके आधार पर प्राचीन भारतीय ऋषियो तथा वैज्ञानिको द्वारा निर्मित कैलेन्डर अभी भी भारत तथा अन्य देशों में रहने वाले करोडों हिन्दुओं के जीवन मरण सम्बन्धी सभी संस्कारों का आधार है। नेपाल का भी राजकीय कैलेंडर विक्रम संवत से ही निर्धारित होता है।

अनेक भारतीय अब भी (स्वतंत्रता प्राप्ति के ७५ वर्ष बीत जाने पर भी) व्यवहार में युग– काल विभाजन हेतु ईसाई कैलेन्डर (ग्रेगोरियन) का अनुकरण करते हैं जब कि केवल कुछ ही शताब्दियों पहले ईसाइयों को कैलिन्डर पद्धति का कोई भी ज्ञान नहीं था तथा वे दस माह का वर्ष मानते थे। ४६ ई०पू० में जुलियस सीजर ने काल गणना हेतु जूलियन कैलिन्डर प्रारंभ की जिसके पहले वर्ष में ४४५ दिन रखे गए थे जो खगोलीय गणित के अनुसार पूर्णतः त्रुटिपूर्ण था। बहुत बाद में १५८२ इ० में पोप ग्रेगोती अष्टम ने उक्त कैलिन्डर में संशोधन करके मात्र १० दिनों को ही समाहित किया था। फिर ईसाईयों ने नया सिस्टम विकसित किया जिसमें २५ मार्च से प्रारंभ होने वाले वर्ष को 1 जनवरी से प्रारंभ किया जिसमें कोई माह तीस दिन का और कोई माह ३१ दिन के होते है तथा दूसरा महिना फ़रवरी कभी २८ दिनों का और कभी (चार वर्षो में एक बार) २९ दिनों का होता है। इस कैलिन्डर के किसी भी महीने के नाम का कोई भी वैज्ञानिक, सांस्कृतिक अथवा भौगोलिक अर्थ नहीं निकलता है। इस प्रकार की व्यवस्था का कोई भी गणितीय अथवा वैज्ञानिक आधार नहीं है। ईसाइयों का ये कैलेन्डर जीसस के जन्मदिन से प्रारंभ हुवा माना गया तथा इसी तिथि को ईसाई युग का (एवं कथित रूप से श्रष्टि का) प्रारंभ माना जाता है। वर्तमान में इसी नितांत अवैज्ञानिक एवं गणितीय दृष्टि से त्रुटिपूर्ण तथा पूर्णतः भ्रामक कैलेन्डर को ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार करके 1 जनवरी को ही नववर्ष का प्रारंभ मनाया जाने लगा है। इस विदेशी नव वर्ष के सन्दर्भ में प्रसिद्द राष्ट्रकवि स्व० रामधारी दिनकर जी ने कहा था कि नववर्ष हमें स्वीकार नहीं है क्योंकि इसमें सूर्य दक्षिनायनी एवं निष्तेज़ दिखाई पड़ता है, धरा सर्दी से सिकुड़ती है, आकाश में गहरा कोहरा छाया रहता है, ठिठुरन भरी हवाएं चलती है, प्रकृति का आंगन सूना रहता है, सब कोई भयंकर शीत के भय से घरो में दुबके रहते हैं तथा किसी के मन में नव वर्ष का कोई प्राकृतिक उत्साह नहीं होता है। हमारे द्वारा अपने देश में भी और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में भी इस त्रुटिपूर्ण एवं नीरस ग्रेगोरियन कैलिन्डर का प्रयोग करते हुवे भी हमारा प्रत्येक उत्सव, पर्व, जन्म–संस्कार, विवाह–संस्कार , नवग्रह प्रवेश, गंगास्नान, कुम्भ, तथा अर्धकुम्भ आदि सभी धार्मिक काम विक्रम संवत् के हिन्दू कैलिन्डर (पंचांग) के अनुसार ही संपन्न होते हैं।

उक्त तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर ये स्पष्ट हो जाता है कि विक्रमी सवंत्सर का बहुत दृढ गणितीय एवं प्रमाणिक वैज्ञानिक आधार है तथा इसके आधार पर निर्मित पंचांग में कभी भी कोई त्रुटि नहीं होती है। अतः हमें अपने देश में सभी काल गणनाओं हेतु इसी पद्धति का प्रयोग करना चाहिए तथा तदनुसार राष्ट्रीय स्तर पर अपना नववर्ष दिवस चैत्र प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल पक्ष का प्रथम दिन) को मनाना चाहिए एवं इसे राष्ट्रीय पर्व घोषित करना चाहिए।

(लेखक : गढ़वाल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हैं)

नव संवत्सर और विक्रमादित्य

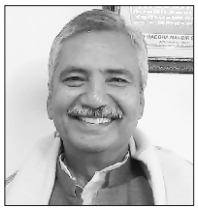

डॉ. वेद प्रकाश शर्मा

भारतीय संवत की परम्परा अति प्राचीनतम है काल गणना की भारतीय पद्धति अद्भुत तो है ही साथ ही सटीक यानी एक्यूरेट तथा प्रमाणिक भी है। हमारे सौर परिवार की विभिन्न गतिविधियों का जिस सूक्ष्मता से हमारे पूर्व पुरुषों ने अध्ययन मनन और विश्लेषण किया है ऐसा अन्यत्र विश्व भर में कहीं भी देखने को नहीं मिलता है और सौर मंडल के ग्रहों की सटीक गतिविधियां भारतीय गणना पद्धति ही बता सकती है। इसी पर हमारे पूर्वजों ने यानी भारतीय ऋषियों ने अपनी साधना और तपस्या तथा ज्ञान के आधार पर पंचांग का निर्माण किया था। जिसमें पृथ्वी की ही गतिविधि नहीं अपितु अन्य ग्रहों की ब्रह्मांड में स्थिति व उनकी गति यानी चाल को भी गहराई तथा सूक्ष्मता से अध्ययन करके विश्व मानविकी पर उपकार किया है।

क्योंकि पृथ्वी की दैनिक व वार्षिक गति दिन–रात नक्षत्रों की स्थिति फिर अयन परिवर्तन तथा ऋतु परिवर्तन मास सप्ताह आदि के साथ–साथ घटी, पल विपल आदि कैलेंडर बने उन सबके मूल भारतीय कालगणना से प्रभावित रहे हैं। परन्तु जितनी वैज्ञानिक सटीकता भारतीय पंचांग में है उतनी किसी अन्य में नहीं है। भारत में समय अनुसार अनेकों नामों से सम्वत् चलाए जाने की एक दीर्घ परम्परा रही हैं। चक्रवर्ती सम्राट अपने शौर्य की प्राकष्टता व बहुजनहिताय शासन की स्थापना के उपलक्ष में अपने नाम से संवत का प्रारम्भ करते थे। परंतु वे सभी सम्वत हमारी भारतीय काल गणना के आधार पर ही होते थे। प्रमुखतः सौर संवत, चंद्र संवत, सावन संवत आदि के अतिरिक्त कुल साठ संवतों का वर्णन हमारे यहां मिलता है। परन्तु वर्तमान में हम विक्रमी संवत का अनुसरण कर रहे हैं। असल में हमें यह भी समझना चाहिए कि यह विक्रमी संवत जिस सम्राट के नाम पर रखा गया वह कौन थे क्योंकि कोई छोटा–मोटा राजा तो अपने नाम से संवत चलाने में समर्थ नहीं होता था। जो राजा संपूर्ण पृथ्वी पर अपने शौर्य एवं पराक्रम की ही नहीं अपनी दानशीलता, उदारता व प्रजा पालक होने में समर्थ होता था उसके नाम से ही सम्वत का नामकरण होता था और सम्वत चलाया जाता था। इन्हीं उदात्त मानवोचित गुणों के कारण ही सम्राट विक्रमादित्य के नाम से भी सम्वत् का शुभारम्भ हुआ।

यह सम्राट विक्रमादित्य कोई साधारण राजा नहीं थे अपितु शौर्य पराक्रम के साथ–साथ माननीयता के गुणों से भरपूर तथा मानव जाति के उद्धारक भी थे और वे केवल जम्मूद्वीप ही नहीं कालांतर में जो अन्य भूभागों में लोग बस रहे थे, उनके उद्धार का भी इन्होंने हर संभव प्रयत्न किया था। तत्कालीन अरब भूमि जो शैव दर्शन से अनुप्राणित थी वहां उसमें कुछ विकृतियां उनके द्वारा हो गई थी। हर अरब निवासी अपने साथ चार–पांच शिवलिंग साथ रखता था और पूजा की विधियों को भी विकृत कर रहा था। अरब की इन विकृतियों को दूर करने के लिए सम्राट विक्रमादित्य ने भारत भूमि से कई विद्वान वहां पर अरब जातियों को वैदिक धर्म में दीक्षित व शिक्षित करने के लिए भेजे थे। वहां जाकर उन्होंने वहां के लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाया मानवीय गुणों का यथोचित प्रसार व प्रचार किया इससे प्रभावित होकर वहां के अरबी कवि ने सम्राट विक्रमादित्य की प्रशंसा में बहुत सी कविताओं की रचना की थी। जिनमें इस प्रकार है :–

"इवशश्फाई सन्तुल फेहलमीन करिमुन। यतंफोहा वयोवस्सल विहिल्लहया समामिनेला मोतकब्जेनरन् बिहिल्लाहा यूबी कैद मिन् होवा यफाकरू फजगल असरी नहान्स ओसिरिम् बेजेहोलीन यहा सबदुन्या कनातेफ नतेफी बिजिहलीन अतावरी बिलाला मसौरतीन फकेफ तसाबहु कौन्नी एजा मजाकरलहदा वलहदा अचमीमन, बुरूकनख्ड कड तोलुहो वतस्तरू विहिल्लाहा याकाजिनाना बालकुल्ले अमरेना फहेया जौनबिल अमरे बिक्रमतून" – (सैर उल् ओकुल, पृष्ठ –315)

इस कविता का अर्थ इस प्रकार है – "भाग्यशाली हैं वे जो विक्रमादित्य के शासन में जन्मे (या जीवित रहे) वह सुशील, उदार, कर्तव्यपरायण शासक प्रजाहित दक्ष था। किन्तु उस समय हम अरब परमात्मा का अस्तित्व भूलकर वासनासक्त जीवन व्यतीत करते थे। हममें दूसरों को नीचे खींचने की और छल की प्रवृत्ति बनी हुई थी। अज्ञान का अंधेरा हमारे पूरे प्रदेश पर छा गया था। भेड़िये के पंजे में तड़फड़ाने वाली भेड़ की भांति हम अज्ञान में फंसे थे। अमावस्या जैसा घना अन्धकार सारे (अरब) प्रदेश में फैल गया था। किन्तु उस अवस्था में वर्तमान सूर्योदय जैसे ज्ञान और विद्या का प्रकाश, यह उस दयालु विक्रम राजा की देन है, जिसने हम पराए होते हुए भी हमसे कोई भेदभाव नहीं बरता। उसने निजी पवित्र (वैदिक) संस्कृति हममें फैलाई और निजी देश (भारत) से यहां ऐसे विद्वान, पण्डित, पुरोहित आदि भेजे जिन्होंने निजी विद्वता से हमारा देश चमकाया। यह विद्वान पण्डित और धर्मगुरु आदि, जिनकी कृपा से हमारी नास्तिकता नष्ट हुई, हमें पवित्र ज्ञान की प्राप्ति हुई और सत्य का मार्ग दिखा वे हमारे प्रदेश में विद्यादान और संस्कृति प्रसार के लिए पधारे थे।

भारत में तो सम्राट विक्रमादित्य की महानता सर्वविदित है ही इसका तात्पर्य यह है कि विक्रमी संवत् विक्रमादित्य जैसे महान सम्राट से सम्बद्ध है इसलिए यह भी हमारे लिए अत्याधिक गौरव का विषय है। इसलिए हम परम्परा पूर्वक विक्रमी संवत को बड़े गौरव और उल्लास से मनाते हैं किन्तु दासता की कालावधि के कारण भारत अपनी संस्कृति व सभ्यता से किंचित दूर होता दिखाई देता है। इसी कारण हम पाश्चात्य कैलेंडर की तिथियों का उपयोग कर रहे हैं जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। भारतीय उत्सव मनाने की परम्परा में आंतरिक व बाह्य शुचिता, अंतःकरण की शुद्धता, उल्लास व प्रार्थनानीयता का समावेश रहता है। इसी कारण हम प्रातः काल के सूर्य को नमन कर के अपने उत्सवों का शुभारम्भ करते हैं जो कि जीवन शैली का अनुपम उदाहरण हैं परन्तु पाश्चात्य परम्परा जो भारतीयता की अनुगामिनी रही थी, वहां से दास्तां के कारण हमारे लिए अनुकरणीय बनकर अंधेरे की अनुगामी बन गई। इसी कारण हम अर्धनिशा के अंधकार में डूब कर निशाचरी उत्सव व परम्परा में डूबते गए। परन्तु भारतीय विक्रमी संवत की वैज्ञानिकता जो मानवीय आचरण के अनुकूल है। इसलिए हमारे द्वारा विक्रमी सम्वत को भारतीय परम्परा के अनुसार अनुसरण करके शुचिता, पवित्रता और उल्लास से मनाया जाना चाहिए।

(लेखक साहित्यकार हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

हिन्दू नव वर्ष को कितना समझते हैं आज के युवा

मोहित कुमार

भारतवर्ष ने विश्व को काल गणना का अद्वितीय सिद्धांत प्रदान किया है। सृष्टि की संरचना के साथ ही ब्रह्माजी ने काल चक्र का भी निर्धारण कर दिया। ग्रहों और उपग्रहों की गति का निर्धारण कर दिया। चार युगों की परिकल्पना, वर्ष मासों और विभिन्न तिथियों का निर्धारण काल गणना का ही प्रतिफल है। यह काल कल्पना वैज्ञानिक सत्यों पर आधारित है। मनुष्य ने काल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने के उद्देश्य से कालचक्र को नियन्त्रित करने का भी प्रयास किया। उसने विक्रम संवत्, शक–संवत्, हिजरी सन्, ईसवी सन् आदि की परिकल्पना की। जैन और बौद्ध मतावलंबियों ने अपने–अपने ढंग से काल गणना के सिद्धान्त बनाये। हमारे देश में नव संवत्सर का प्रारम्भ विक्रम संवत् के आधार पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से स्वीकार किया जाता है और पाश्चात्य दृष्टि से पहली जनवरी को नव वर्ष का शुभारम्भ होता है। भारतीय मतानुसार महाराज विक्रमादित्य ने विक्रम संवत का प्रारम्भ किया था। इसकी गणना चन्दन के आधार पर की जाती है। इसी दिन से नवरात्र का प्रारम्भ होता है। इस दिन मंदिरों और घरों में घट स्थापित किए जाते हैं। गृह–प्रवेश, लगन–सगाई और विवाह आदि के लिए यह समय सर्वोत्तम समझा जाता है। अनेक आस्तिक लोग रामायण–पाठ का आयोजन करते हैं। व्यापारी लोग नये बही खाते प्रारम्भ करते हैं। नई दुकानों और व्यापारिक संस्थानों की स्थापना–उद्घाटन करते हैं। देश भर में प्रचलित परम्पराओं की बात करें तो आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में घरों को आम के पेड़ की पत्तियों के बंदनवार से सजाया जाता है. इसी तरह 'उगादि' के दिन ही पंचांग भी तैयार होता है। दिलचस्प है कि महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए 'पंचांग' की रचना की थी। कई लोगों की मान्यता है कि इसी दिन भगवान राम ने बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति दिलाई थी। राजा बालि के त्रास से मुक्त हुई प्रजा ने तब घर–घर में उत्सव मनाकर ध्वज फहराए थे। दक्षिण के राज्यों की बात करें तो इस अवसर पर आंध्र प्रदेश में घरों में 'पच्चड़ी/प्रसादम' बांटा जाता है। कहा जाता है कि इसका निराहार सेवन करने से मानव निरोगी बना रहता है। यूँ तो आजकल आम बाजार में मौसम से पहले ही आ जाता है, किन्तु आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में इसी दिन से 'आम' खाया जाता है। पारंपरिक रूप से नौ दिन तक मनाया जाने वाला यह त्यौहार दुर्गापूजा के साथ–साथ, रामनवमी को राम और सीता के विवाह के साथ सम्पन्न होता है। ऐतिहासिक रूप से इसकी पृष्ठभूमि में अनेक कथाएं सुनने को मिलती हैं, किन्तु यह एक अजीब बिडम्बना है कि आज के आधुनिक समय में हमारी स्वस्थ भारतीय परम्पराओं को एक तरह से तिलांजलि ही दे दी गयी है। पाश्चात्य सभ्यता के 'न्यू ईयर' को हैपी बनाया जाने लगा है, किन्तु वैज्ञानिक रूप से तथ्यपरक होने के बावजूद हिन्दू नववर्ष को लोग महत्वहीन करने की कोशिशों में जुटे रहते हैं। 31 दिसंबर की आधी रात को नव वर्ष के नाम पर नाचने गाने वाले आम–ओ–ख़ास को देखकर आखिर क्या तर्क दिया जा सकता है!

शाखों पर सजता नये पत्तों का श्रंगार, मीठे पकवानों की होती चारों तरफ बहार।
मीठी बोली से करते है सब एक दूसरे का करें दीदार, चलो मनाये नव वर्ष इस बार।।

भारतीय सांस्कृतिक जीवन का विक्रमी संवत से गहरा नाता है, इसलिए इस दिन लोग पूजापाठ करते हैं और तीर्थ स्थानों पर जाते हैं. धार्मिक लोग तो पवित्र नदियों में स्नान करते ही हैं, साथ में मांस–मदिरा का सेवन करने वाले लोग भी इस दिन तामसी पदार्थों से दूर रहते हैं। पर विदेशी संस्कृति के प्रतीक 1 जनवरी को मनाये जाने वाले नव वर्ष के आगमन से घंटों पूर्व ही मांस मदिरा का प्रयोग, अश्लील कार्यक्रमों से नयनाभिराम तथा अन्य बहुत कुछ ऐसा प्रारंभ हो जाता है जिससे अपने देश की संस्कृति का दूर–दूर तक रिश्ता नहीं रहा है। एक तरफ विक्रमी सम्वत के स्मरण मात्र से ही विक्रमादित्य और उनके विजय अभियान की याद ताजा होती है, तो भारतीयों का मस्तक गर्व से ऊंचा होता है, जबकि ईसवी सन के साथ ही गुलामी द्वारा दिए गए अनेक जख्म हरे होने लगते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को जब किसी ने पहली जनवरी को नव वर्ष की बधाई दी तो उन्होंने उत्तर दिया था– किस बात की बधाई? मेरे देश और देश के सम्मान का तो इस नव वर्ष से कोई संबंध नहीं! काश कि हम सब भी यह समझते! पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध में अपने पवित्र वेदों के संदेश और विज्ञान का विस्मरण करने वाले भारतीयों (हिन्दुओं) आर्यों को उनके गौरवशाली अध्यात्म और वेदों के ज्ञान–विज्ञान का परिचय कराने के लिए, 'कृण्वन्तो विष्वमार्यम्' का उद्घोष तथा मतान्तरितों के शुद्धि आन्दोलन हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज ही के दिन आर्य समाज की स्थापना की थी। आधुनिक मनु के रूप में भारतीय संविधान का निर्माण करने वाले बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का जन्म वि.सं. 1948 को वर्ष प्रतिपदा के ही दिन 14.04.1891 को हुआ। राष्ट्र चिन्तक, संगठन मंत्र दृष्टा और प्रवर्तक परम पूज्यनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी का जन्म भी वर्ष प्रतिपदा के पावन दिन ही 1889 को नागपुर में हुआ। हिन्दू को संगठित करने और एक राष्ट्रीय भाव से डॉ. हेडगेवार जी के मन में रहे इस जागरण हेतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का निर्माण किया।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
"संघ-मंत्र के हे! उद्गाता ! अमिट हमारा तुमसे नाता।
कोटि-कोटि नर नित्य मर रहे, जब जग के नश्वर वैभव पर,
तब तुमने हमको सिखलाया, मर कर अमर बने कैसे नर,
जिसे जन्म दे बनी सपूती, शस्य श्यामला भारत माता।।"

(लेखक आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट ग्रेटर नोएडा में पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय के छात्र हैं)

सृष्टि में उत्सव नवसंवत्सरोत्सव

ज्योति सिंह

चैत्र मासे जगद्ब्रह्म समग्रे प्रथमेऽनि
शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति – ब्रह्म पुराण

भारत की गौरवशाली संस्कृति और त्योहार विश्व को सदैव ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं चाहे वह होली हो दीवाली हो या बसंत। अपनी युवा पीढ़ी की जागृति के लिए हमें नववर्ष यानि विक्रम संवत को भी हर्षोल्लास के साथ मनाना और प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए ताकि विश्व के अन्य बड़े–बड़े देशों को भी भारतीय नववर्ष के बारे में जानकारी हो और एक दिन ऐसा आए कि पश्चिमी देशों से भारत के नववर्ष की शुभकामनाएं आएं और हर भारतीय गौरवांवित अनुभव करे। हैप्पी न्यू ईयर की संस्कृति में रची बसी पीढ़ियों को, भारतीय नववर्ष की ऐतिहासिकता, वास्तविकता एवं वैज्ञानिकता की जानकारी के साथ–साथ भारतीय नववर्ष की जीवंतता का अनुभव कराना भी हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

भारतीय नव संवत्सरोत्सव, केवल कर्मकांड या पूजा–अनुष्ठान तक ही सीमित नहीं है, अपितु प्रकृति का प्रत्यक्ष उद्गार भी है। यह प्राकृतिक सम्मत और वेद सम्मत होने के साथ साथ विज्ञान सम्मत भी है।

हमारे जीवन में जितना महत्वपूर्ण एक शिशु का जन्म है उतने ही महत्वपूर्ण पर्व भी हैं। जब एक शिशु का जन्म होता है तो लगता है जैसे कोई फूल खिला हो, एक घर में सुन्दर फूल महका हो, वैसे ही चैत्र मास में प्रकृति माँ की गोद भी हरी–भरी हो जाती है। प्रकृति का नया रूप धरना ऐसा लगता है जैसे प्रकृति नवपल्लव धारण कर नव संरचना के लिए ऊर्जस्वित हो रही हो। चारों ओर नवपल्लवित लताएं फूलों से लद जाती है, कलियाँ चटकने लगती हैं, प्रकृति की हरीतिमा नवजीवन का प्रतीक बनकर हमारे जीवन से जुड़ जाती हैं। पशु–पक्षी भी आलस्य को त्याग सचेतन हो जाते हैं, इसी समय बर्फ पिघलने लगती है,आमों पर बौर आने लगती है यही वसंतोत्सव का आधार है। हर ओर प्रकृति के यौवन का सुन्दर रूप नवसंवत्सरारंभ की सूचना या सृष्टि के महायज्ञ के प्रारंभ होने का संदेश ही तो है।

नववर्ष, नवसंवत्सर यानि नई पीढ़ी का आरम्भ। एक नन्हा शिशु अपनी बंद मुठ्ठी में जीवन का नया संदेश लाता है, उसी तरह प्रकृति भी अपने नवस्वरूप से प्राणियों को नव सन्देश देती है। फूल की सुगंध बच्चे का यश है, उसका खिलना मानो उसकी कीर्ति है। शिशु और फूल, चैत्र और नवसंवत्सर का मिलता जुलता रूप ही हैं।

धीरे धीरे समय के साथ शैशवावस्था समाप्त होती है और बाल व किशोरावस्था आ जाती है, फिर युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और अन्त में वृद्धावस्था। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का आना और पिछली का पूरा होना एक प्रकार का पर्व ही है। हमारी आयु एक–एक दिन, एक–एक माह और एक–एक वर्ष करके बढ़ती जाती है, लेकिन हमें इसका पता नहीं चलता। एक वर्ष का अंत और अगले दिन से दूसरे वर्ष का आरम्भ। चूँकि हर दिन और हर माह पर्व और उत्सव नहीं मनाया जा सकता, अतः वर्ष में एक दिन जन्मोत्सव मनाने की परम्परा है जिसे सृष्टि भी नवसंवत्सर के रूप में प्रत्येक वर्ष चैत्र माह

ISSN No. 2581-3528

के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाती है।

सृष्टि में धर्म, सभ्यता व संस्कृति की शुरुआत और विकास भारत में ही हुआ। संसार के जितने भी देश हैं उनका इतिहास कुछ सौ या हजार वर्ष ही पुराना है जबकि भारत का इतिहास अरबों वर्ष पुराना है। सृष्टि के आरम्भिक काल में लिखी गई मनुस्मृति में एक श्लोक है–

"एतद् देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रां शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

इस श्लोक में महर्षि मनु ने कहा है कि सम्पूर्ण विश्व के समस्त भागों से ज्ञान पिपासु मानव ज्ञान की खोज में इस आर्याव्रत में आएंगे तथा देश के सुसंस्कृत साहित्य एवं संस्कृति से नैतिकता और चरित्र का पाठ सीखेंगे। इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि सृष्टि के आरम्भ से कुछ हजार वर्ष पूर्व तक हमारा भारत ही संसार के लोगों को ज्ञान–विज्ञान सहित परा–अपरा विद्या और चरित्र निर्माण की शिक्षा दिया करता था।

हिन्दू कैलेंडर में ऋतुओं की गणना सौर एवं चंद्र वर्ष के अनुसार ही होती है। भारतवर्ष के अधिकांश प्रांतों में सौर वर्ष का प्रचलन है। बंगाल में बंगाब्द, दक्षिण में शालिवाहन शक और पंजाब में प्रविष्टा सौर वर्ष गणना पर ही चलते हैं।

भारत में यह पर्व भोर में उदित सूर्य की किरणों के साथ ही यज्ञ–हवन से आरम्भ होता है। यज्ञ हवन द्वारा सर्व मंगलकामना, सबकी बुद्धि सन्मार्गगामिनी हो ऐसी प्रार्थना की जाती है। उगते सूर्य के प्रकाश को अपने जीवन–पथ के लिए मार्गदर्शक मान कर उसके प्रकाश को हृदयंगम करने का प्रण ले जीवन के रणक्षेत्र में सफलता की सीढियां चढ़ते जाना ही हमारा परम उद्देश्य है।

समय के साथ–साथ नववर्षाभिनन्दन के दिन से अनेक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण घटनायें जुडती गईं, कहा जाता कि 57 ईसा पूर्व भारतवर्ष के प्रतापी राजा विक्रमादित्य ने देशवासियों को शकों के अत्याचारी शासन से मुक्त किया अतः उसी विजय की स्मृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि से विक्रम सम्वत का आरम्भ हुआ। मान्यता है कि महाभारत युद्ध के बाद महाराज युधिष्ठिर ने भी इस नवसंवत्सराम्भ के दिवस पर ही राज्यारोहण किया था।

नववर्ष के आगमन को प्राचीन समय में एक वर्ष में किए गए कार्यों के लेखे जोखे के रूप में भी माना जाता था। आज भी एक अप्रैल से देश में नया बजट वर्ष प्रारंभ होता ही है, अप्रैल चैत्र मास का अति निकटतम मास है।

यह पर्व बसंत पंचमी और होलिका दहन के बाद आता है। होली पर हम अपने दोषों को प्रतीक के रूप में अग्निदाह कर देते हैं और उन्हें पुराने वर्ष में ही छोड़ देते हैं। नववर्ष पर हम विधिवत पुनः स्वयं में नवजीवन का संचार हुआ पाते हैं, जो बसंत में प्राकृतिक रूप में भी हमें अनुभव होता है।

हमारी गौरवशाली परंपरा खगोलशास्त्रीय सिद्धांतों पर आधारित है भारतीय कालगणना का आधार पूरी तरह पंथ निरपेक्ष है। यह किसी देवी, देवता या महान पुरुष के जन्म तथा ईस्वी या हिजरी सन् की तरह किसी जाति या संप्रदाय विशेष का नहीं है। हम अपने पर्व और त्यौहार वैज्ञानिकता के आधार पर मनाते हैं ना कि रूढिवादिता पर। देश के सांस्कृतिक पर्व–उत्सव तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य, गुरु नानक, महर्षि दयानन्द सभी महापुरुषों की जयन्तियाँ भारतीय काल गणना के हिसाब से ही मनाई जाती हैं। नामकरण–मुण्डन का शुभ मुहूर्त हो या विवाह आदि सामाजिक कार्यों का अनुष्ठान, ये सब भारतीय पञ्चांग पद्धति के अनुसार ही किया जाता है, ईस्वी सन् की तिथियों के अनुसार नहीं।

महर्षि दयानन्द ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की, यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार जी का जन्मदिवस है यह सिखों के द्वितीय गुरु अंगद देव जी का भी जन्म दिवस है। गौर और गणेश की पूजा भी इसी दिन से तीन दिन तक राजस्थान में की जाती है। इस अवसर पर आंध्र प्रदेश में घरों में 'पच्चड़ी/प्रसादम' बांटा जाता है। इसे गुड़ी पड़वा या वर्ष प्रतिपदा या उगादि (युगादि) कहा जाता है। 'गुड़ी' का अर्थ 'विजय पताका' होता है। 'युग' और 'आदि' शब्दों की संधि से बना है 'युगादि'। आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में 'उगादि' और महाराष्ट्र में यह पर्व 'गुड़ी पड़वा' के रूप में मनाया जाता है। महाराष्ट्र में पूरन पोली या मीठी रोटी बनाई जाती है।

इस दिन सिखों का त्यौहार बैसाखी मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा के साथ उत्तरी भारत में मनाया जाता है. बैसाखी से पकी हुई फसल काटने की शुरुआत हो जाती है.स्वतंत्रता आंदोलन के समय में जहां एक ओर सुधारवादी और क्रांतिकारी योजनाएं बनाई जा रही थीं, वहीं 13 अप्रैल, 1919 को पंजाब में जलियांवाला बाग नरसंहार हुआ। उस दिन यहां पर लोग बैसाखी मनाने के लिए लोग इकट्ठे हुए थे। यह नरसंहार आज तक के सबसे बड़े नरसंहार में से एक है।

यह समय दो ऋतुओं का संधिकाल है। इसमें रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। न शीत न ग्रीष्म, पूरा पावन काल। परम पुरुष अपनी प्रकृति से मिलने जब आता है तो सदा चैत्र में ही आता है। इसीलिए सारी सृष्टि सबसे ज्यादा चैत्र में ही चहकती–महकती है। कहीं धूल–धक्कड़ नहीं, कुत्सित कीच नहीं, बाहर–भीतर जमीन–आसमान सर्वत्र स्नानोपरांत मन जैसी शुद्धता।

चैत्र मास का वैदिक नाम है – मधु मास। मधु मास अर्थात् आनंद बांटती बसंत का मास। बसंत आ तो जाता है फाल्गुन में ही, पर पूरी तरह से व्यक्त होता है चैत्र में। सारी वनस्पति और सृष्टि प्रस्फुटित होती है, पके मीठे अन्न के दानों में, आम की मन को लुभाती खुशबू में, गणगौर पूजती कन्याओं और सुहागिन नारियों के हाथ की हरी–हरी दूब में तथा वसंतदूत कोयल की गूंजती स्वर लहरी में। कटाई, हंसिए का मंगलमय खर–खर करता स्वर और खेतों में डांट–डपट–मजाक करती आवाजें। जरा दृष्टि फैलाइए, भारत के आभा मंडल के चारों ओर। चैत्र क्या आया मानो खेतों में हंसी–खुशी की रौनक छा गई। नई फसल घर मे आने का समय भी यही है। इस समय प्रकृति में उष्णता बढ़ने लगती है, जिससे पेड़–पौधे, जीव–जंतु में नव जीवन आ जाता है। लोग इतने मदमस्त हो जाते हैं कि आनंद में मंगलमय गीत गुनगुनाने लगते हैं।

नव संवत्सर महोत्सव के माध्यम से, वर्षपर्यंत सकल विश्व के सुख के लिए, करबद्ध प्रार्थना करते हैं...

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत।

(लेखिका पूर्व में मीडिया से जुड़ी रही हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

आत्मशुद्धि का साधन नवरात्र

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह

तुमि विद्या, तुमि धर्म
तुमि ह्रदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
ह्रदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे–मन्दिरे।।

राष्ट्रीय गीत वंदेमातरम की यह पंक्तियां भारत माता को शक्ति के विभिन्न स्वरूपों में अभिव्यक्त करती है। भारत शब्द स्वयं में पुर्लिंग है किंतु जब हम इसके साथ माता शब्द जोड़ देते हैं तो यह आदिशक्ति का पर्याय बन जाता है। भारत जिस चेतना का प्रतीक है वह उसी आदिशक्ति की सनातन धारा है। युगों युगों से हमारे ऋषि–मुनियों ने शिव के साथ शक्ति, पुरुष के साथ प्रकृति के रूप में उस आदिशक्ति को सृष्टि का मूल केंद्र माना है। भारत में शक्ति पूजा उतनी ही पुरातन है जितनी कि भारतीय संस्कृति। रावण के वध से पहले भगवान श्रीराम ने भी शक्ति पूजन किया था। बिना शक्ति के जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती है इसलिए शक्ति का आह्वाहन करने हेतु हमारे पूर्वजों ने शक्ति पूजन की नवरात्र साधना विकसित की जो वर्ष में दो बार चैत्र नवरात्र व शारदीय नवरात्र के रूप में मनाई जाती है। शारदीय नवरात्र की परिणति विजयादशमी अर्थात असत्य पर सत्य की विजय पर्व के रूप में मनाने की परंपरा है। चैत्र के नवरात्र गुप्त नवरात्र कहे जाते हैं, और इसका अंतिम दिवस मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जयंती, रामनवमी पर्व के रूप में मनाया जाता है। पूरे विधि विधान के साथ नवरात्र शक्ति साधना करने से हम अपने वैयक्तिक एवं सामुदायिक जीवन की सभी अभिलाषाओं की पूर्ति करने में सक्षम होते हैं। दूषित वातावरण में विकसित होते हुए देश काल परिस्थिति के अनुसार हमारे अंतर्मन में भी अनेक प्रकार का मल एकत्र हो जाता है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उन्नति पर पड़ता है।

भारत की संस्कृति में साधन और साध्य की शुचिता पर अत्यधिक बल दिया गया है। शुद्ध एवं निर्मल जीवन जीते हुए ही साधन चतुष्टय की पूर्ति हेतु हमारे पूर्वजों ने उपदेश दिया है। जिस प्रकार से हम समय–समय पर अपने घर–भवन इत्यादि की साफ सफाई करते हैं उसी प्रकार से अपने अंतर्मन की भी समय–समय पर साफ सफाई करने के उद्देश्य से अनेक जीवंत परंपराओं को भारत की संस्कृति ने

ISSN No. 2581-3528

वर्षों में विकसित किया है। आश्रम व्यवस्था और 16 संस्कार परिष्कृत जीवन जीने का अद्भुत उदाहरण है। किंतु इस सब का आधार मनुष्य की अंतर्चेतना है, जो सभी प्रकार के दोषों से रहित होकर प्राकृतिक नियमों के अधीन परमपिता परमात्मा की परम व्यवस्था ऋत के अनुरूप जीवन का संचालन करती है। मनुष्य जीवन का प्रमुख आधार उसकी चेतना ही है, तथा इस चेतना के स्वरूप को समझने एवं उसकी छिपी हुई शक्तियों का उपयोग मनुष्य तब ही कर पाता है जब वह बाहरी जगत के प्रपंचों से मुक्त हो अपने दोषों का निराकरण कर ले। उस दृष्टि से नवरात्र साधना का विशेष महत्व है। 9 दिवस की यह साधना मनुष्य को विकारों से दूर कर उसके आध्यात्मिक पथ का मार्ग प्रशस्त करने वाली है। हमारे संस्कृति के महापुरुषों ने नवरात्र साधना के बल पर ही दुर्गम एवं असाध्य लगने वाले लक्ष्यों को सरलता से प्राप्त किया है। नवदुर्गा की 9 विशिष्ट शक्तियां संपूर्ण ब्रह्मांड को संचालित करने वाली शक्तियों का ही प्रतीक है। विशिष्ट साधना के द्वारा हम ब्रह्मांड की ऊर्जा के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करते हैं, नवरात्रि में ग्रह नक्षत्रों का शुभ योग बनने पर इन 9 दिनों में की जाने वाली साधना हमें ब्रह्मांड की ऊर्जा के साथ संयुक्त करने में सहायक सिद्ध होती है। नवरात्र साधना मात्र कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं है उसका गूढ़ रहस्य भी है, जिसे एक योग्य गुरु के सानिध्य में साधना के द्वारा जाना जा सकता है। नवरात्र में व्रत–संकल्प सिद्ध करने का अभ्यास किया जाता है। चैत्र और आश्विन मास में पड़ने वाले नवरात्र पर्व दो ऋतुओं के संधि काल पर आते हैं।

इसलिए वर्ष में दो बार स्वयं की चेतना के शुद्धीकरण का अवसर प्राप्त होता है। उपवास एवं सात्विक आहार विहार का पालन जहां एक ओर शरीर के दोषों को दूर कर उसे निर्मल करता है तथा विषाक्त द्रव्यों को बाहर फेंक देता है उसी प्रकार आध्यात्मिक साधना हमारे मन–मस्तिष्क के भीतर जड़े जमा चुके नकारात्मक एवं विषाक्त विचारों को बाहर फेंक देती है। मानसिक ग्रंथियों को विलोपित कर हमें आंतरिक ऊर्जा से भर देती है। भारतीय योग शास्त्र में स्थूल शरीर के साथ–साथ सूक्ष्म शरीरों की भी परिकल्पना की गई है और शरीर में सप्तचक्रों के रूप में ब्रह्मांड की ऊर्जा के सात केंद्र निर्धारित किए गए हैं। आध्यात्मिक साधना के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हमारी ऊर्जा इन सभी केंद्रों से होते हुए पूरे भौतिक शरीर एवं सूक्ष्म शरीर में निर्बाध गतिमान रहते हुए इनका पोषण करती रहे। इन ऊर्जा चैनलों में मानसिक विकारों, नकारात्मक विचारों तथा देश काल परिस्थिति जनित प्रदूषण के चलते रुकावट पैदा हो जाती है जिससे प्राण ऊर्जा का आवागमन बाधित होता है, अनुभवी सद्गुरु के मार्गदर्शन में इस नव दिवसीय साधना का अनुष्ठान करने से भौतिक एवं सूक्ष्म शरीर के ऊर्जा चैनलों को पुनः बाधारहित कर दिया जाता है। नवरात्र साधना के माध्यम से आदि शक्ति रूप जीवन ऊर्जा को सक्रिय कर मनुष्य महान लक्ष्यों की प्राप्ति करने में सक्षम हो पाता है।

वर्ष में दो बार नवरात्र की साधना हमें छह छह मास के लिए नवजीवन प्रदान करती है, शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति के लिए तीनों स्तर पर जिस शुचिता और शुद्धता की आवश्यकता होती है उसके लिए आत्म परिष्करण करने का यह पर्व एक साधन बन जाता है। जो विद्वान जीवन में योग के महत्व को स्वीकार कर प्राकृतिक नियमों के अनुकूल योगनिष्ठ जीवन जीते हैं उनका अनुभव यह सिद्ध करता है कि योग केवल आसन प्राणायाम तक ही सीमित नहीं है अपितु एक जीवन शैली है, नवरात्र साधना हमें इस योग्य बनाती है कि हम अपने जीवन को संतुलित रूप से जीते हुए मनुष्य की चेतना की छुपी हुई शक्तियों को जागृत करते हैं और दिव्य जीवन की ओर अपने कदम बढ़ाते हैं। नवरात्र साधना भौतिक परिष्करण के साथ–साथ आध्यात्मिक ऊर्जा को जागृत करने का पर्व है। मनुष्य की चेतना जिस स्तर तक निर्मल एवं शुद्ध होती जाती है उसी स्तर तक वह परमपिता परमात्मा की ब्रह्म स्वरूप ऊर्जा के साथ अपनी लयबद्धता को अनुभूत करती है इस हेतु से विश्व के सभी संप्रदायों एवं सनातन धर्म में आत्म शुद्धि को विशेष महत्व दिया गया है। विशेष बात यह है कि जब साधक इन 9 दिनों के अभ्यास से अपने भीतर सुप्त अवस्था में पड़ी हुई गुप्त ऊर्जा को जागृत कर लेता है तब उसके दैनिक व्यवहार एवं क्रियाकलापों में उस उर्जा का स्पंदन और नृत्य स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगता है। हमारे महापुरुषों के द्वारा धर्म–संस्कृति एवं सनातन परंपराओं को समृद्ध करने की परिपाटी उस ऊर्जा की सहायता से ही विकसित होती रही है। नवरात्र पर्व संकल्प शक्ति, इच्छा शक्ति, व्यक्तित्व की दृढ़ता और सुनिश्चितता का संवर्धन करने वाला है। वर्तमान भागदौड़ भरे जीवन में हमारी ऊर्जा चुकती जाती है, दूषित विचार एवं दूषित खान–पान से मन एवं शरीर दोनों की हानि होती है, जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम स्वयं को निर्बल एवं शक्तिहीन पाते हैं ऐसी स्थिति में आत्म शुद्धि के साधन स्वरूप नवरात्र साधना मनुष्य में ओज, चेतना, स्फूर्ति, तत्परता, तन्मयता जैसे गुणों को स्थापित करती है।

नवरात्र साधना करने वाला व्यक्ति कभी पतन की ओर नहीं जाता है, उसकी प्राण ऊर्जा सदैव उसे उत्कर्ष की ओर ले जाती है, ऐसा व्यक्ति न केवल आत्म शुद्धि के बल पर स्वयं का आध्यात्मिक विकास करता है अपितु देश–समाज और राष्ट्र के लिए भी कल्याण साधन बन जाता है जिसके माध्यम से स्वयं आदिशक्ति क्रियान्वित होती है। व्यक्तिगत दृष्टि से एक व्यक्ति के लिए यह पर्व आत्म शुद्धि का साधन है, समष्टिगत रूप से यही आत्मशुद्धि विकसित होकर समाज एवं राष्ट्र के परिष्करण, संरक्षण और संवर्धन के रूप में परिलक्षित होती है। जब मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य एवं व्यवहार को आदिशक्ति की चेतना को समर्पित कर देता है तब उसकी आकांक्षाएं और विचार सब कुछ आदि शक्ति के माध्यम से संचालित होने लगता है और उसका जीवन सभी के लिए कल्याणप्रद हो जाता है। भारतीय संस्कृति में सार्थक जीवन उसे ही कहा गया है जो परोपकार, समाजसेवा और समाजहित हेतु समर्पित हो। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का यह दायित्व बनता है कि वह स्वयं को इस योग्य बनाएं। नवरात्र की शक्ति साधना का पर्व मनुष्य को शुभ शक्ति से संपन्न करता है, शक्ति की यह आराधना उसे शिवत्व की ओर ले जाती है जहां उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य सर्वे भवंतु सुखिनः की कामना से सबका कल्याण करना होता है। इसलिए नवरात्र पर्व हमारे लिए आत्म शुद्धि का आधार बनकर हमें लोक कल्याण हेतु योग्य बनाने में सहायक सिद्ध होता है। मन, प्राण, बुद्धि और चित्त की शुद्धि का प्रधान पर्व है नवरात्र साधना।

या देवी सर्वभूतेषु शुद्धि –रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

(लेखक जनरल फेलो – भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली)

ISSN No. 2581-3528

हिन्दू नववर्ष

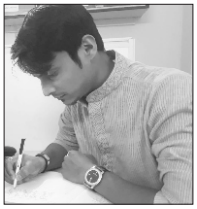

पवन कुमार

हिंदू नववर्ष यानि नवसंवत्सर 2079 शनिवार, 02 अप्रैल 2022 से प्रारंभ होगा। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि का निर्माण हुआ था, इसलिए इस दिन को हिन्दू नववर्ष के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन को कई नामों से भी जाना जाता है जैसे–संवत्सरारंभ, गुड़ीपड़वा, युगादी, वसंत ऋतु प्रारंभ दिन आदि। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष मनाने के कई कारण हैं।

चैत्र प्रतिपदा को वर्षारंभ के दिन की मान्यता एवं इसका इतिहास : महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने प्रतिपादित किया है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दिन, मास, वर्ष और युगादि का आरंभ हुआ है। भारतीय नववर्ष का प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही माना जाता है और इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ गणितीय और खगोल शास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है। इसे कुछ अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे– संवत्सरारंभ, विक्रम संवत् वर्षारंभ, वर्षप्रतिपदा, युगादि, गुड़ीपड़वा इत्यादि।

इसे मनाने के अनेक कारण हैं।

नैसर्गिक कारण– भगवान श्रीकृष्ण श्रीमद्भगवद्गीता में कहते हैं

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता–10.35)

इसका अर्थ है, 'सामों में मैं बृहत्साम हूं। छंदों में मैं गायत्री छंद हूं। मासों में अर्थात् महीनों में मैं मार्ग शीर्ष मास हूं और ऋतुओं में मैं वसंत ऋतु हूं।'

सर्व ऋतुओं में बहार लाने वाली ऋतु है, वसंत ऋतु। इस समय में उत्साहवर्धक, आह्लाददायक एवं समशीतोष्ण वायु होती है। शिशिर ऋतु में पेड़ों के पत्ते झड़ चुके होते हैं, जबकि वसंत ऋतु के आगमन से पेड़ों में नए कोमल पत्ते (कोंपलें) उग आते हैं, पेड़–पौधे हरे–भरे दिखाई देते हैं। कोयल की कूक सुनाई देती है। इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण जी की विभूतिस्वरूप वसंत ऋतु के आरंभ का यह दिन है।

ऐतिहासिक कारण– शकों ने हूणों को पराजित कर विजय प्राप्त की एवं भारत भूमि पर हुए आक्रमण को खत्म कर दिया – शालिवाहन राजा ने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की और इस दिन से शालिवाहन पंचांग प्रारंभ हुआ।

पौराणिक कारण– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन अयोध्या में श्रीराम जी की विजय का उत्सव मनाने के लिए अयोध्या वासियों ने घरों के द्वार पर धर्मध्वज फहराया था। इसके प्रतीक स्वरूप भी इस दिन धर्म ध्वज फहराया जाता है। महाराष्ट्र में इसे गुड़ी पर्व कहते हैं। इसके अलावा इस दिन भगवान श्रीराम ने बाली का वध किया था।

ब्रह्मांड और सृष्टि की निर्मिति का दिन– ब्रह्मदेव ने इसी दिन ब्रह्मांड की निर्मिति की। सत्ययुग में इसी दिन ब्रह्मांड में विद्यमान ब्रह्मतत्त्व पहली बार निर्गुण से सगुण स्तर पर आकर कार्यरत हुआ तथा पृथ्वी पर आया।

भारतीय नववर्षारंभ कैसे मनाएं? : अंग्रेजी नूतन वर्ष में शराब–कबाब, व्यसन, दुराचार करते हैं लेकिन भारतीय नूतन वर्ष संयम, हर्षोल्लास से मनाया जाता है। जिससे देश में सुख, सौहार्द्र, स्वास्थ्य, शांति से जन–समाज का जीवन मंगलमय हो जाता है।

1. भारतीय नूतनवर्ष के दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर स्नान करें। संभव हो तो चर्मरोगों से बचने के लिए तिल का तेल लगाकर स्नान करें।

2. नववर्षारंभ पर पुरुष धोती–कुर्ता / पजामा, तथा स्त्रियां नौ गज / छह गज की साड़ी पहनें।

3. मस्तक पर तिलक करें।

4. सूर्योदय के समय भगवान सूर्यनारायण को अर्घ्य दें।

5. सुबह सूर्योदय के समय शंखध्वनि करें।

6. इस दिन की शुभकामनाएं हैंडशेक कर नहीं, नमस्कार कर स्वभाषा में दें।

7. मठ–मंदिरों, आश्रमों आदि धार्मिक स्थलों पर, घर, गाँव, स्कूल, कॉलेज, सोसायटी, अपने दुकान, कार्यालयों तथा शहर के मुख्य प्रवेश द्वारों पर भगवा ध्वजा फहराकर भारतीय नववर्ष का स्वागत करें और बंदनवार या तोरण (अशोक, आम, पीपल, नीम आदि का) बाँध के भारतीय नववर्ष का स्वागत करें। हमारे ऋषि–मुनियों का कहना है कि जो बंदनवार के नीचे से गुजरता है उसकी ऋतु–परिवर्तन से होने वाले संबंधित रोगों से रक्षा होती।

8. नूतनवर्ष के प्रथम दिन ऋतु संबंधित रोगों से बचने के लिए नीम, कालीमिर्च, मिश्री या नमक से बनी चटनी खुद खाएं और दूसरों को खिलाएं।

9. इस दिन सामूहिक भजन–संकीर्तन व प्रभातफेरी का आयोजन करें।

10. महापुरुषों के ज्ञान से सभी का जीवन उन्नत हो। इस प्रकार एक–दूसरे को बधाई संदेश देकर नववर्ष का स्वागत करें।

कोरोना काल में ऐसे मनाएं? : कोरोना की वजह से कुछ स्थानों पर यह त्योहार सदैव की भांति करने में मर्यादाएं हो सकती हैं, ऐसे समय में पारंपरिक पद्धति से धर्मध्वजा खड़ी करने हेतु सामग्री एकत्र करने में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, इस कारण से नववर्ष का आध्यात्मिक लाभ लेने से वंचित न रहें। नववर्ष आगे दिए अनुसार मनाएं–

1. नया बांस उपलब्ध न हो, तो पुराना बांस स्वच्छ कर उसका उपयोग करें। यदि यह भी संभव न हो, तो अन्य कोई भी लाठी गोमूत्र से अथवा विभूति के पानी से शुद्ध कर उपयोग कर सकते हैं।

2. नीम अथवा आम के पत्ते उपलब्ध न हों, तो उनका उपयोग न करें।

3. नारियल, बीडे के पत्ते, सुपारी, फल, फूल आदि उपलब्ध न हों तो पूजन के समय अक्षत समर्पित कर सकते हैं।

4. नीम के पत्तों का भोग तैयार न कर पाएं तो मीठा पदार्थ, वह भी उपलब्ध न हो पाए, तो गुड अथवा चीनी का भोग लगा सकते हैं।

(लेखक, पत्रकारिता के छात्र हैं)

ISSN No. 2581-3528

हिन्दुत्व व सामाजिक न्याय की विजय

प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार निगम

हाल ही में संपन्न पांच राज्यों के चुनाव से एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि किसान और महंगाई के मुद्दे कमजोर पड गए और हिंदुत्व और सामाजिक न्याय के मिश्रित कार्यों और मुद्दों को लोगों ने सिर आंखों पर बैठा लिया। हालांकि सच्चाई यह है कि उत्तर प्रदेश की सियासत में हिंदुत्व एवं सामाजिक न्याय के समक्ष विपक्षी दलों ने छद्म सामाजिक न्याय का राग अलाप कर चुनाव को हिंदुत्व बनाम सामाजिक न्याय की लडाई के रंग में रंगने की कोशिश की। लेकिन चुनाव के नतीजों ने विपक्ष की मंशा को धराशाई कर दिया।

निःसंदेह, देश भर में पांच राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर विधानसभा चुनावों में भाजपा ने और पंजाब में आम आदमी पार्टी ने नया रिकॉर्ड बनाया है। केंद्र की राजनीति पर भी इन पांच राज्यों के चुनाव परिणाम का दूरगामी प्रभाव पडना तय है। आगामी राज्यों के चुनाव और 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव पर इसका असर पडेगा।

आबादी के दृष्टि से देश के सबसे बडे सूबे उत्तर प्रदेश में 37 साल बाद किसी दल की सरकार वापस लौटी है। आजादी के बाद ये पहली बार ऐसा हुआ कि अपनी पार्टी को सत्ता में वापसी कराने वाले योगी आदित्यनाथ लगातार दूसरी बार मुख्यमंत्री बने। उत्तराखंड में लगातार दूसरी बार किसी पार्टी की सरकार बनी। वहीं पूर्वोत्तर में मणिपुर और गोवा में भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार में वापसी हुई है। दूसरी ओर, सीमावर्ती और संवेदनशील राज्य पंजाब में आम आदमी पार्टी की पहली बार पूर्ण बहुमत की सरकार आई है। आप पहली ऐसी क्षेत्रीय पार्टी बन गई है, जिसने एक राज्य दिल्ली से आगे बढ़कर दूसरे राज्य पंजाब में भी सरकार बनाई है।

नतीजों से स्पष्ट है कि चुनाव में हिंदुत्व का एजेंडा प्रमुख रूप से छाया रहा। महंगाई, बेरोज़गारी, किसान आंदोलन, छुट्टा मवेशी जैसे मुद्दे और जातीय समीकरणों के मिथक धराशायी हो गए। विभिन्न राज्यों में कांग्रेस, सपा और अन्य दलों ने महंगाई, किसानों की समस्याओं सहित अनेक मुद्दों को जमकर उछाला। उन्होंने कथित तौर पर जनता को सामाजिक न्याय दिलाने का ढिंढोरा पीटा। लेकिन पंजाब को छोडकर किसी भी राज्य में इसका असर नहीं हुआ। हालांकि पंजाब में आप की विजयी होने के कई अन्य कारण भी थे। वहां पर सत्तासीन कांग्रेस पार्टी आंतरिक कलह से जूझ रही थी और उसके पांच साल के दौरान किए गए कार्यों के खिलाफ जनता में जमकर आक्रोश था।

उत्तर प्रदेश में चुनाव के दौरान पिछड़े वर्ग के चंद नेताओं ने सपा का दामन पकड़ा और उन्होंने यह इस बाद को भरपूर दर्शाने का प्रयास किया कि प्रदेश की सियासत में हिंदुत्व बनाम सामाजिक न्याय की लड़ाई आमने–सामने है। लेकिन नतीजों ने इसे छद्म सामाजिक न्याय साबित कर दिया। चुनावी पंडितों का मानना है कि केंद्र सरकार की अनेक योजनाओं– जन धन योजना, उज्ज्वला योजना, किसान सम्मान निधि, आयुष्मान बीमा योजना, शौचालय निर्माण, आवास रहित लोगों को भवन आदि जैसी अनेक योजनाओं के लाभार्थियों ने दिल खोलकर भाजपा को सिर आंखों में बैठा लिया।

ध्यातव्य है कि पश्चिमी यूपी में महिलाओं की सुरक्षा बड़ा मुद्दा रहा। जिस तरह पिछली सपा सरकार में महिलाओं के साथ अपराध बढ़े थे। खासकर उनकी वजह से पश्चिमी यूपी की एक बड़ी आबादी प्रभावित थी। महिलाओं के लिए खुद का सम्मान बचाना एक बड़ी चुनौती थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भाजपा ने गुंडागर्दी और माफियाराज की समाप्ति को प्रमुख रूप से मुद्दा बनाया। यही नहीं, मुख्तार अंसारी सरीखे माफियाओं पर कार्रवाई ने भी आम जनता को प्रभावित किया। अभी तक की सरकारों ने अपराधियों के खिलाफ इतनी हिम्मत नहीं दिखायी थी।

इन चुनावों ने यह साबित कर दिया है कि सिर्फ सवर्ण वर्ग ही भाजपा का वोटर नहीं है। जिस तरीके से सपा, कांग्रेस और बसपा ने समाज में जातीय तानाबाना बुनने की कोशिश की, वह फ्लाप शो साबित हुआ। नतीजे बता रहे हैं कि पिछड़े, अति पिछड़े और दलित मतदाताओं का भी एक वर्ग भाजपा के साथ आ गया है।

इन पांच राज्यों में हुए चुनाव में सबसे अधिक झटका देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस को लगा है। पांच साल की सत्ता विरोधी लहर (एंटी इनकंबेंसी) के बाद भी कांग्रेस उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा में सरकार नहीं बना पाई। इन राज्यों में पार्टी दूसरी सबसे पड़ी पार्टी थी। वहीं उत्तर प्रदेश में अपने तुरुप के इक्के (ट्रंप कार्ड) प्रियंका गांधी वाड्रा को उतारकर भी बेहद शर्मनाक प्रदर्शन का गवाह बनी। कांग्रेस महासचिव की कड़ी मेहनत रंग नहीं ला पाई। पंजाब में उनकी सत्ता गुटबाजी और कलहों के बीच हाथ से शर्मनाक तरीके से फिसल गई। वहीं कांग्रेस के वोट पर्सेंटेज में भी गिरावट आई।

वास्तविकता तो यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की तिकडी ने हिंदुत्व और सामाजिक न्याय की एक ऐसी सोशल इंजीनियरिंग की, जिसको सिर्फ उत्तर प्रदेश की जनता ने ही नहीं, बल्कि उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा की जनता ने भी सराहते हुए भाजपा को इन चारों राज्यों में सत्ता का ताज पहना दिया।

(लेखक आईएमएस, गाजियाबाद में पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय के चेयरपर्सन हैं)

ISSN No. 2581-3528

हमारा प्रखर राष्ट्रवाद

नरेन्द्र भदौरिया

बस इतना कहकर वह रुक जाते हैं कि हम भी इस वतन से प्यार करते हैं। हम कहते हैं कि यह देश एक सांस्कृतिक इकाई है। वह कहते हैं कि यदि ऐसा है तो हम इस संस्कृति के अंग नहीं हैं। हम कहते हैं कि यह तो हम सब की मातृभूमि है। इसलिए माता की तरह पूज्य है। वह कहते हैं हम भूमि के किसी बड़े या छोटे टुकड़े को मां नहीं मान सकते। कुछ देर के लिए इस माटी में जन्मने की बात मान भी लें तो इसे पूजनीय या वन्दनीय कदापि नहीं कह सकते। वो कहते हैं कि हम जिसके गर्भ से जन्म लेते हैं उसे भी पूज्य नहीं मानते तो फिर देश की वन्दना माता कह कर कैसे कर सकते हैं।

हम कहते हैं वेदों सहित मानवता की सर्व प्राचीन सनातन संस्कृति के ग्रन्थ पूज्य हैं। वह इसे नहीं मानते। उनमें से एक का तर्क है कि मेरा मजहब जिस ग्रन्थ पर आधारित है वही हमें स्वीकार्य है। दूसरे समूह का कथन है कि मेरे रिलीजन की मान्यताएं जिस ग्रन्थ पर आधारित हैं उससे इतर कही गयी बातों पर हमारा भरोसा नहीं टिक सकता।

हम कहते हैं गाय हमारी माता है तो इन दोनों का इसे खाने को जी मचल उठता है हम कहते हैं इस धरा पर बहने वाली नदियां हमें प्राण प्रिय हैं तो वह कहते हैं धरती और इसकी हर चीज उपभोग की वस्तु मात्र है। इससे अधिक कुछ नहीं है। हम कहते हैं हमारे धर्म में सगुण, निर्गुण, साकार, निराकार पूजा के विधान हैं तो भी जिसे यह मान्य नहीं हों उन्हें हम नास्तिक होने पर भी अपनाते हैं। उनका त्याग नहीं करते। जो चाहे ईश्वर को माने जो चाहे परमपिता की सत्ता को अस्वीकार करे। सब हमारी संस्कृति के अंग हैं। वो कहते हैं तुम्हारी संस्कृति हमें स्वीकार्य नहीं है। इतना ही नहीं वह खुलकर कहते हैं कि तुम्हारी सांस्कृतिक एकात्मता के सिद्वान्त को हम नहीं मानते।

हम कहते हैं परमात्मा एक है। उसे पाने के विविध मार्ग हैं। सभी पन्थ, मत और सम्प्रदाय एक ही परमात्मा की आराधना के लिए बने हैं। इस सिद्धान्त को उनमें से कोई मान्य नहीं करता। एक का कथन है – मेरा अल्लाह सबसे बड़ा है। दूसरा कहता है मेरा गॉड सर्वोपरि है। हम अर्थात् सनातन संस्कृति को मानने वाले कहते हैं बहुविधि पूजा पद्धतियों में कोई आपत्ति नहीं है। सबकी पूजा पद्धति हमें स्वीकार्य है। उन दोनों को हमारी इस बात से भी चिढ़ होती है। इन दोनों को अपनी मान्यताओं के अतिरिक्त कुछ भी स्वीकार्य नहीं है।

हम कहते हैं चलो अपनी अपनी मान्यताएं कभी न त्यागने की बात पर अड़े रहो। पर इतना तो मान लो कि इस मातृभूमि की रक्षा के लिए हम सब एक मां के पुत्रों की भांति एक सूत्र में बंधे रहें। उन्हें मातृभूमि की हमारी परिकल्पना भी अमान्य है। हम कहते हैं पृथ्वी का यह भारत खण्ड हमारा राष्ट्र है। वह सोच में पड़ जाते हैं। बहुत कुरेदने पर कहते हैं यह एक राष्ट्र नहीं है। यह तो विभिन्न संस्कृतियों का समुच्चय है। इसी आधार पर वह तर्क वितर्क करते हैं कि यह तो कई अलग तरह के राष्ट्रों का समूह है। उन्हें इस देश की मूल सांस्कृतिक पहिचान स्वीकार नहीं है। हमें इस देश में आकर बस गये आक्रान्ताओं, घुमक्कड़ों, छद्म व्यापारियों, निरे फरेबी मिशनरियों के द्वारा ठगे गये लोगों के प्रतिनिधियों द्वारा गढ़ी गयी राष्ट्रवाद की परिभाषाएं अमान्य हैं। राष्ट्र में हम रहते हैं पर राष्ट्र हमसे नहीं अपितु हम राष्ट्र से हैं।

हम तीनों के इन वितर्कों के मध्य विदेशी धरती पर पनपे अतिवादी कम्युनिष्टों अर्थात् वाममार्गी विचारकों ने प्रवेश पा लिया। इन्होंने सनातनी हिन्दुओं से कहा तुम सहिष्णु बने रहो। जो कुछ तुमसे मजहबी या रिलीजियस समुदायों के लोग कहें उसे शत प्रतिशत मान लो अन्यथा हम तुम्हें साम्प्रदायिक होने की गाली देकर अपमानित करेंगे। हिन्दुत्व की जितनी भी मान्यताएं हैं, ग्रन्थ हैं, उनसे उपजी सोच है, धर्म की संकल्पना है सब पुरानी पड़ चुकी हैं। उसको किसने और कब प्रारम्भ किया पता ही नहीं। फिर इससे क्यों चिपके हो। यह देखो ईसाईयत और इस्लाम दोनों नाविन्य परिकल्पनाओं पर आधारित हैं। इनमें से किसी एक को अपना लो। पुराने कपड़े की तरह हिन्दुत्व को त्याग दो। हमने इन छद्म चिन्तकों की बातें अस्वीकार कर दीं। तो यह विफर पड़े। हमने कहा जिस तरह ईसाईयत और इस्लाम इस भारत की धरा पर नहीं उपजे उसी तरह वाममार्गी अर्थात् कम्युनिष्ट भी परकीय यानि विदेशी धरती से आये हैं। तो यह तीनों एकजुट होकर हमें असहिष्णु, साम्प्रदायिक, प्राचीन चिन्तन से चिपके रहने वाले, बदलाव की बयार से दूर रहने वाले, पिछड़े लोगों की संज्ञा देने लगे। ये तीनों मिलकर 1947 से हिन्दुत्व को मिटाने पर उसी तरह जुटे हैं जिस तरह बर्बर आक्रान्ताओं ने किया। हिन्दुत्व पर अत्याचारों का तारतम्य हजार साल से अधिक काल से बना है।

वाममार्गी कुतर्क करने की अपनी सिद्धता से हिन्दू धर्म को मानने वालों को जातियों, विविध पूजा पद्धतियों, भाषाओं, पहनावे और बोलियों में विभाजित एकजुट नहीं मानते। बिडम्बना यह है कि हिन्दू समाज को तोड़ने के इन तीनों के कुत्सित प्रयत्न हमारे समाज के कुछ लोगों की हीनता से किंचित सफल होने लगे। हिन्दू समाज इन बाह्य आक्रमणों से घबरा गया। स्वयं को खण्डित अनुभव करने लगा। अपनी संस्कृति, भाषा, बोली, पहनावे और मान्यताओं में उदारवाद को घुसेड़कर विभ्रमित होने लगा। यही हमारी हताशा का कारण बन गया। हजारों वर्षों से अपराजेय संस्कृति के अवतारवाद को भी मिथ्या कहा जाने लगा। हमारे धर्म ग्रन्थों और श्रीराम, श्रीकृष्ण, गुरुगोविन्द सिंह सहित हजारों ऋषियों, मुनियों को कल्पनाओं की उड़ान कहा गया। तब भी हम चुप रहे। हद तो तब हो गयी जब भारत की खोज नामक एक ग्रन्थ में अल्पज्ञ नेता ने वेदों को गड़रियों के गीतों का संग्रह मात्र कहकर अपमानित किया।

न्यायालय में शपथ पत्र देकर श्रीराम को उपन्यास का नायक कह दिया गया। महानायकों का यह निरादर और समाज को खण्डित करने का यह चिन्तन इस परम पावन भारत माता को और खण्डित करने की इनकी मिलीजुली कुत्सित अवधारणा से उपजा है। वह कहते हैं इस देश का हिन्दू अपनी सहिष्णुता को भूलता जा रहा है हम समझ रहे हैं

ISSN No. 2581-3528

कि वह अब हिन्दू समाज की नाविन्य पीढ़ी की आंखें खुलने मात्र से व्यथित हो उठे हैं। सूई चुभोकर सहिष्णुता नापने वाले चिन्तित हैं। राष्ट्रवाद की तरंगे इन्हें डरा रही है।

अभी तो शिवजी का तीसरा नेत्र खुलने की बारी नहीं आयी। अभी कैलाश से नन्दीश्वर ने हुंकार नहीं भरी। अभी हिंगलाज देवी इनकी नानी मां के रूप में विश्रान्ति से नहीं जागीं। अभी चित्रकूट की पहाड़ी से दण्डक वन की ओर प्रस्थान का संकेत नहीं हुआ। आश्वस्त रहो फिर कटेगी सूर्पनखा की नासिका। मारे जाएंगे खर दूषण त्रिसरा और अनर्थ करने वाले बालि। स्वर्ण मृग के पीछे नहीं भागे थे श्रीराम। अपितु रावण को उसकी अति के अन्त के निमित्त अन्तिम अवसर दिया था। हनुमान और श्रीराम का मिलन हुआ और लंका जल उठी। ऐसा ही होगा। सीमाओं के पार लगे असुरों के जमघट ध्वस्त होकर रहेंगे। देश के भीतर पनप रहे पिस्सुओं का नाश होगा।

यह भारत है। जिसने अपने वक्षस्थल पर कुरुक्षेत्र के रण भी सजाये थे यहां की ललनाओं के गर्भ में पल रहे पिण्डों में ज्ञान अर्जित करने का सामर्थ्य होता है। यहां की माताओं के हाथ के बने पुतले गणेश बनकर मान रक्षा में सन्नद्ध हो जाते हैं। यहां आठ साल का शंकर केरल के एक घर में सन्यासी बनने के लिए मां के समक्ष मचल पड़ता है। यहां के गुरुओं में अपने शिष्य को काली माता के साक्षात् दर्शन कराने की सिद्धता होती है। विष पिलाने वाली पतिता को भी यहां के दयानन्द की दया प्राप्त हो जाती है। यह वीर भोग्य धरा है। भूखण्ड मात्र नहीं। अमरत्व प्रदान करने वाली माता है। हमारा राष्ट्रवाद प्रखर है क्योंकि हमारा चिन्तन अपघाती नहीं है। हम देर से सही पर अब जाग उठे हैं। सावधान होकर सुन लीजिए अब बन्दर घुड़कियां हमें डरा नहीं पाएंगी। लुटेरे पहिचान छिपाकर बच नहीं सकेंगे। भारत के राष्ट्रवाद की ज्वाला को बुझाने का यत्न करने वाले इस प्रज्ज्वलित होते देख उपहास भले करें अब उनके भष्म होने की बारी आ गयी है। हिन्दुत्व की भुजाएं बहुत लम्बी हैं, हृदय अति विशाल है जिनको इसमें सन्देह है वे अपना हठ लिये बैठे रहें। तनिक नेत्र निमीलित कीजिए यह देश फिर विश्व गुरु बनकर उभरेगा। श्रीकृष्ण का वचन निरर्थक नहीं होगा। इस बार वह संगठित शक्ति के साथ वल्गा थामे दिखायी देने वाले हैं। प्रतीक्षा के पल बहुत शीघ्र बीत जाएंगे। **(लेखक : वरिष्ठ पत्रकार हैं)** ■

मृत्युंजय दीक्षित

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा - अपना हिन्दू नववर्ष

हम सामान्य रूप से एक जनवरी को बड़ी धूमधाम से नववर्ष मनाते हैं लेकिन हिंदू धर्म का नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रारम्भ होता है। हिंदी पंचांग, ज्योतिष और धार्मिक एवं सामाजिक आधार पर भी इस तिथि और चैत्र माह का विशेष महत्व है। वैज्ञानिक मान्यता यह है कि हिंदू पंचांग व कालगणना अधिक वैज्ञानिक व प्राचीन है। साथ ही यह दिन अनेक ऐतिहासिक पलों और कई घटनाओं को याद करने का दिन है।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान के अनुसार सृष्टि के आरम्भ से अब तक 1 अरब 95 करोड़ 58 लाख 85 हजार 99 वर्ष से अधिक बीत चुके हैं। आधुनिक वैज्ञानिक भी सृष्टि की उत्पत्ति का समय एक अरब वर्ष से अधिक का बता रहे हैं। भारत में कई प्रकार से कालगणना की जाती है। युगाब्द (कलियुग का प्रारंभ), श्रीकृष्ण संवत्, विक्रमी संवत, शक संवत् आदि।

वर्ष प्रतिपदा का दिन ऋतु परिवर्तन का भी प्रतीक है। इस समय चारों ओर पीले पुष्पों की सुगंध भरी होती है, नयी फसलें भी पक कर तैयार हो जाती हैं जिसके कारण ग्रामीण परिवेश में नयी खुशियों और नवजीवन का संचार होता है। नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने का शुभ समय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही होता है। कहा जाता है कि इसी दिन सूर्योदय से ब्रहमा जी ने जगत् की रचना प्रारम्भ की। 2078 वर्ष पहले सम्राट विक्रमादित्य ने अपना राज्य स्थापित किया था। जिनके नाम पर विक्रमी सम्वत् आरम्भ हुआ, कहा जाता है कि उनके राज्य में न तो कोई चोर था और नही कोई भिखारी। इसी दिन लंका विजय करके अयोध्या वापस आने पर प्रभु श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था अतः यह दिन श्रीराम के राज्याभिषेक दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना करी थी। सिंध प्रांत के समाज रक्षक वरूणावतार संत झूलेलाल भी इसी दिन प्रकट हुये अतः यह दिन सिंधी समाज बड़े ही उत्साह के साथ मनाता है। पूरे देशभर में सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन किया जाता है। झांकियां आदि निकाली जाती है। विक्रमादित्य की भांति उनके पौत्र शालिवाहन ने हूणों को पराजित करके दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने के लिये शालिवाहन संवत्सर का प्रारम्भ किया। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के ही दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा. केशवराम बलिराम हेडगेवार का जन्म हुआ था।

हिंदू नववर्ष व अंग्रेजी नववर्ष मनाने की पद्धति में बड़ा ही अंतर है। इस दिन जहां हिंदू घरों में नवरात्रि के प्रारम्भ के अवसर पर कलश स्थापना की जाती है घरों में पताका ध्वज आदि लगाये जाते हैं तथा पूरा नववर्ष सफलतापूर्वक बीते इसके लिए अपने इष्ट, गुरु, माता – पिता सहित सभी बड़ों का आशीर्वाद लिया जाता है। जबकि अंग्रेजी नववर्ष पूरे विश्व में हुड़दंग का दिन होता है। हिंदू नववर्ष की शुरूआत में ही मां दुर्गा के नवरूपों के आराधना के रूप में महिलाओं के सम्मान की बात सिखायी जाती है जबकि अंग्रेजी नववर्ष में नारी शक्ति का उपयोग मनोरंजन प्रधान वस्तु के रूप में करता है।

चैत्र माह के हर दिन का अपना अलग ही विशेष महत्व है। शुक्ल पक्ष में अधिकांश देवी देवताओं के पूजने व उन्हें याद करने का दिन निर्धारित है। शुक्ल पक्ष की तृतीया को उमा शिव की पूजा की जाती है, वहीं चतुर्थी तिथि को गणेश जी की। पंचमी तिथि को लक्ष्मी जी तथा नागपूजा की जाती है। शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को स्वामी कार्तिकेय की पूजा की जाती है। सप्तमी को सुर्यपूजन का विधान है। अष्टमी के दिन मां दुर्गा की पूजन और ब्रहमपुत्र नदी में स्नान करने का अपना अलग ही महत्व है इस दिन असोम में ब्रहमपुत्र नदी के घाटों पर स्नानार्थियों की भारी भीड़ उमड़ती है। नवमी के दिन भद्रकाली की पूजा की जाती है।

ठोस गणितीय और वैज्ञानिक काल गणना पद्धति पर आधारित हिन्दू नववर्ष हमारी पुरातन संस्कृति का सार है आज जिसका प्रयोग मात्र धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र तक ही सीमित रह गया है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इसे दैनिक जीवन में भी अपनाएं और धूम धाम से शास्त्रीय विधान के साथ अपना नववर्ष मनाएं। **(लेखक स्तम्भकार हैं)**

ISSN No. 2581-3528

वैश्विक ज्ञानदा नालंदा विश्वविद्यालय

प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

हम भारतवासियों की कुछ अमूल्य विरासत ऐसी हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व के ज्ञानार्जन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और ऐसी धरोहरों पर हमें गर्व है। प्राचीनकाल से ही हमारी समृद्धशाली ज्ञानधारा पूरब से लेकर पश्चिम तक के सभी देशों को आकर्षित करती रही है और वे हमारे पास ज्ञानार्जन हेतु आते रहे हैं। जब विश्व में शिक्षा की अल्पता थी, तब भी हमारा देश ज्ञान के सागर से परिपूर्ण था। भारत को प्राचीनकाल से विश्व गुरु कहा जाता है जिसका अर्थ है कि भारत विश्व को पढ़ाने वाला अथवा पूरी दुनिया का शिक्षक है। विश्व के अन्य देश जब अंधकार में डूबे हुए थे उस समय भारत की सभ्यता एवं संस्कृति ने अपने उच्च स्तर के साहित्य, कला, शिक्षा एवं ज्ञान विज्ञान से विश्व को ज्ञान से आलोकित किया। वैसे भी पाली भाषा में जब हम भारत शब्द का अर्थ खोजते है तो पाते हैं कि भा का अर्थ होता है प्रकाश और रत का अर्थ होता है लगातार, अनवरत अर्थात ज्ञान का प्रकाश जहां से अनवरत निकलता है, उस भूमि को भारत कहा जाता है। आज से हजारों वर्ष पूर्व भी भारत में ऐसे–ऐसे शिक्षा के केंद्र थे, जैसे कि आज के आधुनिक विश्वविद्यालय हैं। आठवीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के बीच भारत पूरे विश्व में शिक्षा का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध केंद्र था। गणित शास्त्र, सैन्य शिक्षा, ज्योतिष शास्त्र, भूगोल शिक्षा, विज्ञान के साथ ही अन्य विषयों की शिक्षा देने में भारतीय विश्वविद्यालयों के समकक्ष कोई दूसरा विश्वविद्यालय नहीं था। इन विश्वविद्यालयों में अपने देश से ही नहीं अपितु विदेशों से भी छात्र अध्ययन करने आते थे।

अपने उत्कृष्ट कोटि के ज्ञान एवं शिक्षण के कारण ही भारत के अनेक नगरों ने प्राचीन काल में शिक्षा केंद्रों के रूप में विश्व भर में अपनी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी तथा कालांतर में वे विश्वविद्यालयों के रूप में विकसित हुए। सबसे प्राचीनतम युग, वैदिक युग में भी तक्षशिला, नालंदा, मिथिला, पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, धारा, तंजोर आदि भारत में कई प्रसिद्ध शिक्षण केंद्र थे। भारतभूमि पर ही सर्वप्रथम विश्वविद्यालय की संकल्पना का उदय हुआ। प्राचीन काल में तक्षशिला विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय, वल्लभी विश्वविद्यालय, पुष्पगिरी विश्वविद्यालय, ओदंतपुरी विश्वविद्यालय, सोमपुरा विश्वविद्यालय, जगददला विश्वविद्यालय, नागार्जुनकोंडा, वाराणसी, कांचीपुरम, मणिखेत और शारदा पीठ आदि प्रमुख विश्वविद्यालय शिक्षा के केंद्र विश्व भर में प्रसिद्द थे।

प्राचीन काल के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं उच्च कोटि के विद्वानो के शिक्षण स्थल के रूप में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात एवं विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय भी भारत के तक्षशिला नगर में था, जिसकी स्थापना 700 ईसा पूर्व (लगभग 2700 वर्ष पूर्व) हुई थी। परन्तु विभाजन के पश्चात् यह स्थान वर्तमान पाकिस्तान का हिस्सा है तथा इस्लामाबाद के पास स्थित है। तक्षशिला विश्वविद्यालय के पश्चात् विश्व का द्वितीय विश्विद्यालय तथा वर्तमान भारत में प्रथम विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय है जिसे तक्षशिला विश्वविद्यालय की स्थापना के लगभग 1200 वर्ष बाद (470–450 ई.पू.) स्थापित किया गया। प्राचीन भारत की समृद्ध शिक्षा व्यवस्था का प्रतीक बिहार का नालंदा विश्वविद्यालय अपने काल में विश्व का प्रथम आवासीय विश्वविद्यालय था।

नालंदा संस्कृत शब्दं नालम्+दा से बना है। संस्कृति में 'नालम्' का अर्थ 'कमल' होता है, यहाँ कमल का अर्थ प्रकाश अथवा ज्ञान से हैं, बौद्ध महाविहार की स्थापना के बाद इसे नालंदा महाविहार के नाम से जाना गया। संस्कृत के शब्द "नालम् ददाति इति नालन्दा" का अर्थ कमल का फूल है। कमल के फूल के डंठल को ज्ञान का प्रतीक माना जाता है। "दा" का अर्थ देना है। अतः जहाँ ज्ञान देने का अंत न हो उसे नालंदा कहा गया है। ऐसा भी कहा जाता है कि नालंदा संस्कृत के 3 शब्दों से मिल कर बना है – ना + अलम + दा । जिसका अर्थ होता है न रुकने वाला ज्ञान का प्रवाह। नालंदा विश्वविद्यालय भारत में प्राचीन साम्राज्य मगध (आधुनिक बिहार) में एक बड़ा बौद्ध मठ था। यह वर्तमान भारत के बिहार शरीफ शहर के पास पटना के लगभग 95 किलोमीटर दक्षिणपूर्व में स्थित है, बिहार राज्य की राजधानी पटना से लगभग 88 किमी तथा बिहार के प्रमुख तीर्थ स्थान राजगीर से लगभग 13 किमी की दूरी पर बड़ा गांव के पास प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर स्थित है।

नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक गुप्त साम्राज्य के महान सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने इसे पांचवीं सदी में स्थापित किया था। कुमारगुप्त प्रथम महान सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के पुत्र थे। ऐसा भी कहा जाता है कि भगवान बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों सरिपुत्र और मार्दगलापन का जन्म नालंदा में ही हुआ था। सरिपुत्र का देहांत नालंदा में उसी कमरे में हुआ था, जिसमें वह पैदा हुआ थे। उनकी मृत्यु का कमरा बहुत पवित्र माना जाने लगा और बौद्धों के लिए तीर्थ स्थान बन गया। सम्राट अशोक ने नालंदा में इस स्थान पर मंदिर बनवाया, इसलिए सम्राट अशोक को नालंदा विहार का संस्थापक माना जाता है। नालंदा की खुदाई में समुद्रगुप्त के समय का एक ताम्रपत्र और

ISSN No. 2581-3528

कुमारगुप्त का एक सिक्का मिला है। इसलिए नालंदा विहार कुमारगुप्त आदि गुप्त सम्राटों के बनवाये हुए माने जाते है। कन्नौज के राजा हर्षवर्धन (606–47) ने नालंदा विश्वविद्यालय को बहुत धन दिया था। उसने लगभग 100 गाँव की मालगुजारी इस विश्वविद्यालय के नाम छोड़ दी थी। उन गांवों से विश्वविद्यालय की आवश्यकता के अनुसार चावल, घी, और दूध आदि आने लगा। इसलिए विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों कहीं भिक्षा मांगने नही जाना पड़ता था। कुछ मतों के अनुसार सम्राट अशोक ने 1200 गांव नालंदा विश्वविद्यालय के लिए दे दिए थे। कि इनसे जो आमदनी हो उससे विश्वविद्यालय का खर्च चलाया जाए। विद्यालय में विद्यार्थियों से कोई फीस नहीं ली जाती थीं, और उनको खाना पीना भी मुफ्त दिया जाता था। चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार नालंदा के विद्यार्थियों को खाने पीने के लिए भीक्षा नहीं मांगनी पड़ती थी। ह्वेनसांग के बाद इतिसंघ 673 ईसवी में भारत पहुंचा था उसने भी कई वर्ष तक नालंदा में रहकर विद्या ग्रहण की थी। नवी शताब्दी के आरम्भ मे बंगाल के राजा देवपाल के समय में नालंदा उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुंच गया था। हिन्देशिया, जावा, सुमात्रा के सम्राटों ने राजदूतों द्वारा देवपाल के पास धन भेजा जिससे वहां विहार बनाए गए। गुप्त काल के बाद भी सभी शासकों ने इसके निर्माण व प्रबंधन में योगदान दिया। सातवीं सदी में नालंदा विश्वविद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर था तथा विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय था ।

राजा कुमार गुप्त (415–455 ई. पू.) ने नालंदा में पहला मठ बनाया। यह बौद्ध भिक्षुओं को प्रशिक्षित करने के लिए एक छोटा विहार था। यह भिक्षुओं द्वारा बौद्ध अध्ययन की एवं खोज के लिए एक आदर्श केंद्र के रूप में चुना गया था। नालंदा विश्वविद्यालय इस बौद्ध विहार का और अधिक विस्तार करके बनाया था।

नालंदा में प्रवेश मौखिक परीक्षा द्वारा किया जाता था। यह प्रवेश हॉल में एक आचार्य द्वारा किया जाता था जिन्हें द्वारपंडित कहा जाता था। शिक्षा का माध्यम संस्कृत होने के कारण संस्कृत में दक्षता आवश्यक थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग की रिपोर्ट है कि उस समय विदेशी छात्रों में से केवल 20ः ही कड़ी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो पाए जबकि भारतीय छात्रों में से केवल 30ः ही उत्तीर्ण हुए और प्रवेश प्राप्त किया। जाति, पंथ और राष्ट्रीयता की कोई बाधा नहीं थी। बौद्धों के लिए महायान का अध्ययन अनिवार्य था किन्तु हीनयान स्वरूपों का अध्ययन भी किया जा सकता था। कोई भी विद्यार्थी 18 अन्य बौद्ध संप्रदायों के सिद्धांतों का भी अध्ययन कर सकता था। विश्वविद्यालय में थेरवाद, वाणिज्य, प्रशासन और खगोल विज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष, ललित–कला, साहित्य, विज्ञान आदि जैसे धर्मनिरपेक्ष विषयों के साथ–साथ वैदिक दर्शन की छह प्रणालियाँ भी सिखाई जाती थीं।

सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का एक अद्भुत नमूना था। यह विश्वविद्यालय सात मील लंबी और तीन मील चौडी भूमि में फैला हुआ था। चौदह हेक्टेयिर क्षेत्र में इस विश्व विद्यालय के अवशेष मिले हैं। खुदाई में मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थसर से किया गया था। नालंदा में आठ अलग–अलग परिसर और 10 मंदिर थे, साथ ही कई अन्य मेडिटेशन हॉल और क्लासरूम थे। यहाँ एक पुस्तकालय 9 मंजिला इमारत में स्थित था। विश्वविद्यालय का पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी। केन्द्रीय विद्यालय में सात बड़े कक्ष थे, और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे। मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थी। इस विश्वविद्यालय में छात्रावास की सुविधा भी थी।

ज्ञान का यह केंद्र लगभग 800 सालों तक चरमोत्कर्ष पर रहा, लेकिन 12 वीं शताब्दी में अचानक ही यह इतिहास के अंधेरों में खो गया। बताया जाता है कि नालंदा पर सबसे पहला आक्रमण स्कन्दगुप्त के समय 455–467 ई. में मिहिरकुल के नेतृत्व में हूणों ने किया था। लेकिन स्कन्दगुप्त के वंशजों ने न सिर्फ नालंदा को दुबारा बनवाया बल्कि इसे पहले से भी बड़ा और मजबूत बनाया, दूसरा आक्रमण 7 वीं शताब्दी में बंगाल के गौदास राजवंश के द्वारा किया गया था। इस आक्रमण के बाद बौद्ध राजा हर्षवर्धन इसे दुबारा बनवा दिया।

इस्लाम धर्म का कट्टर समर्थक व प्रचारक तुर्की का शासक इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी जब दिल्ली का शासक बना तब उसने अपने आप को बढ़ाने तथा गैर मुस्लिम शिक्षा, संस्कृति को समाप्त करने के उद्देश्य से जब बिहार पर आक्रमण किया, उस समय नालंदा विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण विश्व में तूती बोलती थी। नालंदा पर यह तीसरा अंतिम और दुर्दांत आक्रमण था, जिसमें बख्तियार खिलजी ने 1193 ई. नालंदा विश्विद्यालय को ध्वस्त कर दिया। नालंदा विश्वविद्यालय को जलाने की इस घटना के बारे में कहा जाता हैं, कि यहाँ किताबों का इतना भंडार था कि इस आगजनी के तीन माह बाद भी किताबें सुलग सुलग कर जलती रही, खिलजी यही नही रुका यहाँ अध्यापन करवाने वाले हजारों बौद्ध भिक्षुओं का भी नरसंहार उसने करवा दिया था।

1193 ई. से पहले नालंदा लगभग एक हजार साल तक फलता–फूलता रहा, दुनिया में यह पहला ज्ञान और विद्या का प्रकाश स्तंभ था । मगध के आक्रमणकारी बख़्तियार खिलजी ने जब नालंदा में आग लगायी तब भिक्षु अपना भोजन करने वाले थे । यह उन पुरातत्व अवशेषों में सामने आया है जो भोजन को बहुत जल्दी में छोड़कर भागे। अन्न भंडार से चराचर चावल भी इस दुखद कथा को बताते हैं । प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष आज भी देखे जाते हैं। यहां इतनी किताबें रखी थीं कि जिन्हें गिन पाना आसान नहीं था। हर विषय की किताबें इस विश्वविद्यालय में मौजूद थीं।

मिन्हाज उल सिराज ने अपनी पुस्तक 'तबकाते नासिरी' (खंड–2) के पृष्ठ 309 पर इस आक्रमण के बारे में लिखा है कि, "सिर्फ दौ सौ घुड़सवारों के साथ बिहार दुर्ग (नालंदा विश्वविद्यालय) के द्वार तक गया और बेखबर शत्रुओं (यानि छात्र और शिक्षकगण) पर टूट पड़ा। उनमे दो बड़े बुद्धिमान भाई थे–एक का नाम निजामुद्दीन और दुसरे का शमसुद्दीन था। जब लड़ाई प्रारम्भ हो गयी तब इन दो भाईओं ने बहुत बहादुरी दिखाई। बख्तियार खिलजी को लूट का काफी माल हाथ लगा। महल के अधिकांश निवासी केश–मुंडित ब्राह्मण थे, उन सभी को खत्म कर दिया गया। वहां मुहम्मद ने पुस्तकों के ढेर को देखा तो उसके बारे में जानकारी के लिए आदमियों को ढूंढा, पर वहां सभी मारे जा चुके थे। इस विजय के बाद लूट के माल से लदा बख्तियार खिलजी कुतुबुद्दीन के पास आया जिसने उसका काफी मान और सम्मान किया।"

यह आक्रमण मात्र किसी एक ज्ञान के केंद्र अथवा एक विश्वविद्यालय पर ही नहीं बल्कि एक सभ्यता पर आक्रमण था। यह आक्रमण इतना गंभीर था कि इसके बाद नालंदा को एक बार फिर से वही रूप देने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। कुछ बचा तो बस दीवारों के अवशेष। यह मात्र भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की हानि थी।

(लेखक सरकार द्वारा 'शिक्षक श्री' विभूषित ख्याति प्राप्त शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक, प्रोफ़ेसर एवं राष्ट्रवादी चिन्तक हैं)

ISSN No. 2581-3528

संस्कृत के साथ उचित व्यवहार की अपेक्षा

देश के सबसे बड़े आबादी वाले प्रदेश में हिंदी के शिक्षक ही संस्कृत पढ़ाने की खानापूर्ति कर रहे हैं। हालांकि यह स्थिति केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं है, समूचे हिंदी क्षेत्र में कमोबेश यही स्थिति है। संस्कृत के साथ सौतेला व्यवहार कोई नई बात नहीं है। लेकिन इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा इस विषय पर तीखी टिप्पणी करने के बाद से यह मसला चर्चा में है। ऐसे में हमें देश में संस्कृत भाषा के संदर्भ में थोड़ा पीछे जाते हुए इसकी समुचित स्थिति को समझना चाहिए।

प्रमोद भार्गव

संस्कृत भाषा को उत्तर प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में पढ़ाए जाने के संदर्भ में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने टिप्पणी करते हुए कहा है कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की सबसे प्राचीन भाषा के साथ सौतेली मां जैसा व्यवहार अनुचित है। न्यायालय ने कहा कि जिस लोक कल्याणकारी राज्य पर भाषा के संरक्षण का दायित्व है, वह संस्कृत के शिक्षकों को संविदा पर नियुक्त करने और हटाने की जिम्मेदारी अधिकारियों पर नहीं छोड़ सकती। वर्ष 2013 से इस प्रदेश के विद्यालयों में संस्कृत शिक्षकों के नए पद सृजित ही नहीं किए गए हैं। अलबत्ता हिंदी के अध्यापकों से संस्कृत पढ़ाने की खानापूर्ति की जा रही है, जो संस्कृत के हित में नहीं है।

दरअसल इसके ज्ञान–विज्ञान से जब अंग्रेज चमत्कृत हुए तो उन्होंने इसकी जड़ों में मट्ठा डालने की शुरुआत कर दी थी। वे जान गए थे कि संस्कृत को यदि भारत की पाठशालाओं में पढ़ाया जाना जारी रहेगा, तो भारत में न तो अंग्रेजी सत्ता स्थापित रह पाएगी और न ही अंग्रेजी का वर्चस्व कायम हो पाएगा। तभी से संस्कृत के साथ उपेक्षित व्यवहार जारी है।

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य को बनाए रखने की दृष्टि से अंग्रेजों का लक्ष्य था कि बड़ी संख्या में भारतीय आबादी का ईसाई मत में मतांतरण कर दिया जाए। किंतु भारतीय जनमानस अपनी लोक–परंपराओं और उनमें समाविष्ट उत्सवधर्मिता के चलते अपने धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति, भाषा और रीति–रिवाजों से इतना गहरा जुड़ा था कि उसे एकाएक सत्ता के किसी हुक्म से जुदा करना आसान काम नहीं था। इसलिए जब पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृत, विद्या और उसके प्रमुख साहित्य का अध्ययन किया तो वे आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने समझ लिया कि यह भाषा तो उच्च श्रेणी की है ही, इसका ज्ञान–विज्ञान भी अद्भुत एवं असीमित है। इसलिए आरंभ में जो अंग्रेज विद्वान संस्कृत को विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा और ज्ञान का कोष मानने का दावा कर रहे थे, उन्हें आशंका हुई कि इसके दुनिया में विस्तार से कहीं यूरोपियन ही संस्कृत भाषा और वैदिक धर्म के निष्ठावान अनुयायी न बनने लग जाएं।

वैसे संस्कृत का सर्वप्रथम नियमबद्ध अध्ययन विलियम जोंस नामक अंग्रेज न्यायाधीश ने वर्ष 1784 में आरंभ किया था। जोंस ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'रायल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की स्थापना भी की थी। इस अध्ययन में अनेक अंग्रेज शामिल थे। अध्ययन में शापेन हावर ने पाया कि 'संस्कृत की रचनाएं मानव बुद्धि की सर्वोत्कृष्ट कृतियां हैं।' हम्बोल्ट ने कहा, 'गीता संभवतः गहनतम एवं महत्तम ग्रंथ है। इसे विश्व फलक पर प्रदर्शित करना चाहिए।' फ्रांसीसी लेखक बाप ने संस्कृत को मूल भाषा माना। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने भी वेदों को 'विश्व ज्ञान कोष' कहा।

इन सबके बीच मैकाले के भारत आगमन के साथ धारणाएं बदलने लगीं। लार्ड मैकाले से मिले नीतिगत निर्देशों के अनुसार तय किया गया कि यहां के रीति–रिवाज और संस्कृति को जानकर उस पर प्रहार किए जाएं, जिससे भारतीयों को अंग्रेज अर्थात् ईसाई बनाया जा सके और ब्रितानी हुकूमत भारत में स्थायी हो जाए। इसीलिए मैकडानल ने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' की भूमिका में लिखा भी है कि 'मैंने यह इतिहास इसलिए नहीं लिखा कि इसमें कोई महान ज्ञान एवं गुणवत्ता है, बल्कि इसलिए लिखा है कि संस्कृत को बेहतर तरीके से जान–समझकर हमेशा के लिए भारत के शासक बने रहें।' साफ है, उनके अध्ययन में दुर्भावना अंतर्निहित थी। इसीलिए शेल्डन पोलाक जैसे विद्वान ने संस्कृत में उल्लेखित ज्ञान से आतंकित होकर इसे मृत भाषा ही घोषित कर दिया था। दरअसल भारत में शिक्षा के माध्यम को लेकर ब्रिटिश संसदीय समिति में विवाद हुआ, तब मैकाले ने दलील दी थी कि पाश्चात्य ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है। भारतीय भाषाओं में तो कोई ज्ञान है ही नहीं।

संस्कृत के साथ सौतेला बर्ताव इसे देश की राष्ट्रभाषा बना दिए जाने के प्रसंग के समय भी उजागर हो गया था। भारत सरकार ने 1956–57 में संस्कृत आयोग का गठन किया था। इसकी रिपोर्ट के अनुसार, हिंदी को देश की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए लाए

ISSN No. 2581-3528

गए विधेयक को जब संविधान सभा में स्वीकृति नहीं मिली, तब संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का प्रस्ताव दिया गया। तब के विधि मंत्री डा. भीमराव आंबेडकर ने इसका पुरजोर समर्थन किया। नजीरुद्दीन अहमद ने संस्कृत का समर्थन करते हुए प्रस्ताव सदन के पटल पर रखते हुए कहा,–ऐसे देश में जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, वहां यदि एक भाषा को पूरे देश की भाषा बनाना चाहते हैं तो जरूरी है कि वह किसी भी क्षेत्र की मातृभाषा न हो और सभी के लिए एक जैसी हो। तभी उसे स्वीकारने से किसी एक क्षेत्र विशेष के लोगों को लाभ नहीं होगा और दूसरे क्षेत्र के लोग भाषा के नजरिये से लाचार नजर नहीं आएंगे। यह क्षमता संस्कृत में है, इसलिए यह राष्ट्रभाषा बनने का अधिकार रखती है।–

संस्कृत को हिंदी के स्थान पर आधिकारिक भाषा बनाने के लिए संशोधन प्रस्ताव पेश करते हुए लक्ष्मीकांत मिश्रा ने कहा था, –यदि संस्कृत को स्वीकार किया जाता है तो भाषा के संदर्भ में जो मनोवैज्ञानिक जटिलताएं उत्पन्न की गई हैं, वे सब दूर हो जाएंगी। परंतु यह प्रस्ताव भी पारित नहीं हो पाया। आखिर में अंबेडकर को कहना पड़ा था कि अंग्रेजी शेरनी का वह दूध है कि जो इसे पिएगा वह दहाड़ेगा ही।

आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत - वर्ष 1994 में सर्वोच्च न्यायालय ने निर्देश था दिया कि संस्कृत को आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाए। लेकिन वामपंथी बौद्धिकों ने यहां पेच उलझा दिया कि पहले यह सुनिश्चित हो कि संस्कृत वास्तव में आधुनिक भाषा है भी अथवा नहीं? दरअसल जो भी जीवित भाषा होती है, वह लोगों की मातृभाषा होने के नाते निरंतर विकास और बदलाव की प्रक्रिया से गुजरती रहती है, जिससे उसकी विविधता एवं प्रांजलता बनी रहती है। जबकि वर्ष 2011 में इन्हीं तथाकथित बौद्धिकों ने त्रिभाषा फार्मूले के अंतर्गत जर्मन भाषा को आधुनिक भारतीय भाषा के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ाया जाना आसानी से स्वीकार लिया। किंतु जब 2014 में नरेन्द्र मोदी सरकार ने त्रिभाषा फार्मूला में जर्मन के साथ संस्कृत पढ़ाए जाने का विकल्प दे दिया, तब इसका विरोध हुआ। दलील दी गई कि केंद्रीय विद्यालयों में क्या संस्कृत के छात्र एवं विद्यालयों के अनुपात में शिक्षक हैं? यहां सवाल उठता है कि क्या जर्मन भाषा के शिक्षक हैं? तब मौन छा जाता है। यह सही है कि संस्कृत के शिक्षकों की कमी सभी विद्यालयों में है। इस अभाव के साथ एक अन्य प्रश्न यह भी खड़ा है कि शिक्षक बौद्धिक रूप से इतने सशक्त हैं कि वे संस्कृत के पाठों को उन अर्थों में पढ़ा सकें, जो कर्मकांडीय और अंधविश्वास से जुड़ी जड़ता को दूर करने में सहायक बनें। क्योंकि स्वतंत्रता के बाद संस्कृत अथवा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की बात चली थी, तब सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से अभिप्रेरित भारतीयों का प्रमुख लक्ष्य था कि पश्चिमी भौतिकवादी संस्कृति से भारतीयों को बचाने में संस्कृत में उल्लेखित ज्ञान और अध्यात्म साबित हो सकते हैं। इस लिहाज से भी जरूरी है कि संस्कृत के पठन–पाठन को राज्य सरकारें गंभीरता से लें और कामचलाऊ शिक्षकों से मुक्ति पाएं। संस्कृत के संरक्षण में ही संस्कृति की सुरक्षा अक्षुण्ण है।

हिंदू पाठ्यक्रम की सुखद शुरूआत : महामना पंडित मदनमोन मालवीय ने जिस परिकल्पना के साथ बनारस के विश्वविद्यालय से 'हिंदू' शब्द जोड़ा था, उस कल्पना ने अब साकार रूप ले लिया है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के अस्तित्व के बाद पहली बार परास्नातक पाठ्यक्रम (एमए) में हिंदू धर्म, अध्यात्म एवं दर्शन की पढ़ाई भारत अध्ययन केंद्र के अंतर्गत शुरू हो गई है। इस हिंदू अध्ययन स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में भारत और विदेश के 46 छात्रों ने प्रवेश लिया है। इसकी शुरुआत करते हुए प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी ने कहा कि हिंदू धर्म में अंतर्निहित एकता के सूत्रों एवं उसकी आचार संहिता को ऋतु, व्रत्त और सत्य से जोड़कर इन्हें अद्यतन संदर्भों में पढ़ाया जाएगा। धर्मो रक्षति रक्षितः सूत्र के अनुसार आज हमें ऐसे विद्वानों को तैयार करने की आवश्यकता है, जो सनातन धर्म और उसकी संपूर्ण ज्ञान परंपराओं का चारों दिशाओं में वैश्विक स्तर पर प्रचार व प्रसार करें। इस परिप्रेक्ष्य में उल्लेखनीय है कि व्यापार के बहाने 1757 में बंगाल की धरती से जिस ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की नींव पड़ी, उसने 1858 तक संपूर्ण भारत में अवाम के जबरदस्त विरोध के बावजूद पैर पसार लिए थे। नतीजन कंपनी के शासक वायसराय की पराधीनता ऐसे कानूनों द्वारा लाद दी गई, जिसने भारत के आम नागरिक का नियमन, जिस धर्म और अध्यात्म में अंतर्निहित मान्यताओं के माध्यम से होता था, वे खंडित होती चली गईं।

यदि भारतीयों में मानवीय आचरण का नियमन करने वाला कोई विधि–विधान नहीं था, तो फिर हजारों वर्षों से यह देश कैसे एक वृहद् राष्ट्र के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रख सका? जबकि इसी कालखंड में यूनान, रोम और मिस्त्र की सभ्यताएं कानून होने के बावजूद नष्ट हो गईं। अतएव हम कह सकते हैं कि संपूर्ण भारतखंड में उस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की व्यापक स्वीकार्यता थी, जो मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाती रही। ऋषि–मुनियों और तत्वचिंतकों द्वारा अस्तित्व में लाई गईं वे मान्यताएं और आस्थाएं ही थीं, जो भारतीय नागरिकों को एक अलिखित आचार संहिता के जरिये अनुशासित करती थीं। आज भी भारतीय सबसे ज्यादा धर्म से ही चरित्रवान और अनुशासित बने हुए हैं। भारतीयों को सबसे ज्यादा जीवनी–शक्ति मिलती है, तो यह आस्थाओं से ही मिलती है। इन्हीं की वजह से भारतीय अन्य देशों के नागरिकों की तरह शोषक, स्वेच्छाचारी और आततायी नहीं बन पाया। गोया, हिंदू पाठ्यक्रम लोक–कल्याण की भावना को भारतीयों में और मजबूत करेगा।

वैसे भी हिंदू दर्शन केवल स्वर्ग, नरक और मोक्ष का माध्यम न होकर एक ऐसा आदिकालिक सत्य है, जो अध्यात्म के बहाने विज्ञान के द्वार खोलता है। मानव मष्तिष्क और ब्रह्मांड में उपलब्ध तत्वों को परस्पर चुंबकीय प्रभाव से संबद्ध करता है। इसीलिए भीमराव अंबेडकर भी हिंदू धर्म को पूरी तरह नजरअंदाज करने के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि इस दर्शन की उपयोगिता को व्यवहार के स्तर पर उतारकर प्रासंगिक बनाने की जरूरत है। परंतु तात्कालिक सत्ताधीश मार्क्सवादी धर्म की घुट्टी पिलाने के लिए तो सहमत हो गए, परंतु इसके उलट हिंदू आध्यात्मिक दर्शन को सुनियोजित ढंग से बहिष्कृत करने में लग गए। जबकि मार्क्सवाद स्वयं में एक दर्शन है और उसकी अपनी रूढ़िवादिताएं हैं।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

जल ही जीवन है

प्रशांत त्रिपाठी

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।

ये कुछ बेहद प्रचलित पंक्तियाँ हैं जो पानी के महत्त्व का वर्णन सरलतम रूप में करती हैं। लेकिन बात जब जल संकट की आती है तो सबसे अधिक हैरानी इस बात पर होती है कि जब पृथ्वी के समस्त भूभाग का दो–तिहाई से भी अधिक भाग जल से आच्छादित है तो फिर इस धरातल पर रहने वालों के लिये समय के साथ यह दुर्लभ क्यों होता जा रहा है। दरअसल, पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत भूभाग पर फैले जल का केवल 3 प्रतिशत भाग पीने के लायक है। इस 3 प्रतिशत ताजे पेयजल का दो–तिहाई से भी अधिक भाग ग्लेशियरों में है। इसके बाद मात्र 1 प्रतिशत पानी विश्व की लगभग आठ अरब आबादी के दैनिक उपयोग के लिये शेष बचता है। अब यदि 71 प्रतिशत जल से घिरे भूभाग में केवल 1 प्रतिशत पानी मानव की पहुँच में हो और प्रयोग के लिये उपलब्ध हो तो दुनिया में जल संकट की गंभीरता का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देशों– भारत और चीन की आबादी को यदि एक साथ मिला दें तो दुनिया की लगभग तीन अरब आबादी साल में कम–से–कम दो से तीन महीने गंभीर जल संकट का सामना करने के लिये विवश है।

हमारे देश में भूजल स्तर गिर रहा है और हम दुनिया के उन देशों की सूची में सबसे ऊपर हैं, जो भूजल का सबसे ज्यादा दोहन करते हैं। 22 मार्च को विश्व जल दिवस के मौके पर ब्रिटेन के एक अंतर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन (NGO) 'वॉटर एड' ने अपनी नवीनतम रिपोर्ट में दावा किया है कि कि भारत में एक अरब की आबादी पानी की कमी वाले स्थानों में रह रही है और इनमें से 60 करोड़ लोग अत्यधिक कमी वाले इलाके में रहते हैं।

बिनीथ द सर्फेस (Beneath The Surface) शीर्षक से जारी इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जल स्रोतों की बढ़ती मांग के चलते भूजल के अत्यधिक दोहन, पर्यावरण और जनसंख्या में बदलाव के चलते ऐसा हुआ है। वैश्विक भूजल की कमी वर्ष 2000 से 2010 के बीच बढ़कर करीब 22 प्रतिशत हो गई है, लेकिन इसी अवधि में भारत में भूजल की कमी 23 प्रतिशत हो गई। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत सबसे अधिक भूमिगत जल का उपयोग करता है। विश्व के कुल भूजल का 24 प्रतिशत हिस्सा भारत इस्तेमाल करता है।

UNICEF सर्वे और WHO के आँकड़े : UNICEF के अनुसार भारत में राजधानी दिल्ली और बेंगलुरु जैसे महानगर जिस तरह जल संकट का सामना कर रहे हैं, उसे देखते हुए यह अनुमान लगाया जा रहा है कि 2030 तक इन नगरों में भूजल का भंडार पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आँकड़ों के मुताबिक, पिछले सात दशकों में विश्व की आबादी दोगुनी से भी अधिक हो गई है और उसी के साथ पेयजल की उपलब्धता और लोगों तक इसकी पहुँच लगातार कम होती जा रही है। इसकी वजह से दुनियाभर में स्वच्छता की स्थिति भी प्रभावित हुई है। अशुद्ध पेयजल के उपयोग से डायरिया, हैज़ा, टाइफाइड और जलजनित बीमारियों का खतरा तेजी से बढ़ रहा है। दुनिया में लगभग 90 प्रतिशत बीमारियों का कारण गंदा और दूषित पेयजल है।

नीति आयोग का समग्र जल प्रबंधन सूचकांक : हाल ही में नीति आयोग के एक नवीनतम सर्वे के अनुसार भी भारत में 60 करोड़ लोग गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। अपर्याप्त और प्रदूषित जल के इस्तेमाल की वज़ह से भारत में हर साल दो लाख लोगों की मौत हो जाती है।

इससे पहले पिछले वर्ष जून में नीति आयोग ने जल के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए समग्र जल प्रबंधन सूचकांक (Composition Water Management Index - CWMI) पर एक रिपोर्ट तैयार की थी। समग्र जल प्रबंधन सूचकांक जल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन में राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के प्रदर्शन के आकलन और उनमें सुधार लाने का एक प्रमुख साधन है। यह सूचकांक राज्यों और संबंधित केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों को उपयोगी सूचना उपलब्ध करा रहा है जिससे वे अच्छी रणनीति बना सकेंगे और जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन में उसे लागू कर सकेंगे। साथ ही एक वेब पोर्टल भी इसके लिये लॉन्च किया गया है। समग्र जल प्रबंधन सूचकांक में भूजल, जल निकायों की पुनर्स्थापना, सिंचाई, खेती के तरीके, पेयजल, नीति और प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं के 28 विभिन्न संकेतकों के साथ 9 विस्तृत क्षेत्र शामिल हैं। समीक्षा के उद्देश्य से राज्यों को दो विशेष समूहों– 'पूर्वोत्तर एवं हिमालयी राज्य' और 'अन्य राज्यों' में बाँटा गया है।

मानव निर्मित है जल संकट : इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि पृथ्वी पर रहने वालों के लिये वैश्विक तापन (Global Warming) के बाद जल संकट दूसरी सबसे बड़ी गंभीर चुनौती है। भारत में कुल वैश्विक आबादी का 18 प्रतिशत निवास करता है, लेकिन इसे विश्व में उपलब्ध पेयजल का 4 प्रतिशत ही मिल पाता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो पता चलता है कि अन्य प्राकृतिक और मानवीय संकटों की तरह जल संकट भी मानव निर्मित है। इसके साथ उपलब्ध जल के दोषपूर्ण प्रबंधन के कारण जल संकट और गंभीर हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में आबादी के शहरों की ओर पलायन ने शहरी क्षेत्रों में जल संकट को और बढ़ाया है। हमारे देश में कृषि क्षेत्र में समस्त उपलब्ध जल का 70 प्रतिशत उपयोग होता है, लेकिन इसका केवल 10 प्रतिशत ही सही तरीके से इस्तेमाल हो पाता है

ISSN No. 2581-3528

और शेष 60 प्रतिशत बर्बाद हो जाता है। इसलिये हमें गहराई से जल प्रबंधन पर विचार करने की ज़रूरत है।

चीन में जल प्रबंधन के लिये 'रिवर चीफ' कार्यक्रम : चीन में जल प्रबंधन को लेकर एक कहावत प्रचलित है...पानी को नौ ड्रैगन संभालते हैं। अर्थात् जल संसाधनों को संभालने में जुटी एजेंसियों के दायित्व एवं जिम्मेदारियाँ एक–दूसरे से जुड़ी हैं। ऐसा ही कुछ भारत में भी जल प्रबंधन को लेकर देखने को मिलता है। दोनों ही देशों में जल प्रबंधन केंद्र एवं राज्यों के स्तर पर मंत्रालयों और जल प्रबंधन एवं जल प्रदूषण से जुड़ी विभिन्न एजेंसियों में बंटा हुआ है।

ग्रीनपीस की एक रिपोर्ट के अनुसार, चीन में जल प्रबंधन की जटिल एवं अस्पष्ट व्यवस्था होने के अलावा तीव्र विकास और पानी के अत्यधिक दोहन की वजह से चीन के सतही जल का एक–तिहाई हिस्सा पीने के लायक नहीं रह गया है। इस हालात का मुकाबला करने के लिये चीन ने पिछले साल एक गैर–परंपरागत लेकिन महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम रिवर चीफ्स (River Chiefs) शुरू किया।

'रिवर चीफ्स' कार्यक्रम की कार्य पद्धति : इस कार्यक्रम में एक सरकारी अधिकारी को नदी का मुखिया (River Chief) नियुक्त किया जाता है जो अपने इलाके में मौजूद जलाशय या नदी के खास हिस्से में पानी की गुणवत्ता संकेतकों का प्रबंधन करता है। उनका प्रदर्शन और भावी करियर इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपने कार्यकाल में जल गुणवत्ता संकेतकों को सुधारने में कितने सफल हुए। चीन में नदियों एवं जलाशयों की गुणवत्ता पर नज़र रखने के लिये 4 लाख से अधिक रिवर चीफ नियुक्त किये गए। रिवर चीफ प्रणाली अपनाने से चीन के च्यांग्सु प्रांत में मनुष्यों के पीने लायक सतही जल का अनुपात 35 प्रतिशत से बढ़कर 63 प्रतिशत हो गया।

भारत में क्या है स्थिति? : हमारी समस्याएँ भी काफी हद तक चीन जैसी ही हैं, लेकिन क्या ऐसी कोई व्यवस्था भारत में कारगर हो पाएगी? हमारे देश में जल प्रदूषण की अधिकता के अलावा जल प्रबंधन से जुड़े कार्यों का जिम्मा कई संगठनों एवं सरकारी विभागों को सौंपा गया है। देश में जल प्रदूषण से निपटने के लिये पहले से कई कानून लागू हैं तथा केंद्र एवं राज्य दोनों स्तरों पर प्रदूषण मानकों के क्रियान्वयन के लिये प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड बने हुए हैं। राज्यों के स्तर पर गठित प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पास तो जुर्माना लगाने की शक्ति पहले से ही है, लेकिन शीर्ष स्तर पर राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव है। इसमें कोई दो राय नहीं कि किसी भी योजना के क्रियान्वयन में राज्यों की भूमिका अहम होती है। किसी भी व्यक्ति को प्रदूषण मानकों का उल्लंघन करने पर तभी दंडित किया जा सकता है जब राज्य सरकार ऐसा करना चाहे, चाहे भारत में रिवर चीफ्स जैसे कार्यक्रम लागू हों या नहीं। वैसे जल को प्रदूषित करने वालों पर जुर्माना लगाने की राजनीतिक इच्छाशक्ति सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि स्थानीय समुदायों को इसका जिम्मा दिया जाए और उन्हें जल प्रबंधन का प्रभारी बना दिया जाए। लंबे समय से भारत की पर्यावरण नीति टॉप–डाउन मोड से संचालित होती रही है और उसके नतीजे सबके सामने हैं। इसकी जगह बॉटम–अप मोड अपनाने की जरूरत है जिसमें जरूरी सुधारों की पहल सर्वाधिक प्रभावित लोग ही करें।

नई राष्ट्रीय जल नीति की आवश्यकता : आजादी के बाद देश में तीन राष्ट्रीय जल नीतियाँ बनी हैं। पहली नीति 1987 में बनी, 2002 में दूसरी और 2012 में तीसरी जल नीति बनी। इसके अलावा कुछ राज्यों ने अपनी जल नीति बना ली है।

राष्ट्रीय जल नीति में जल को एक प्राकृतिक संसाधन मानते हुए इसे जीवन, जीविका, खाद्य सुरक्षा और निरंतर विकास का आधार माना गया है।

जल के उपयोग और आवंटन में समानता तथा सामाजिक न्याय का नियम अपनाए जाने की बात कही गई है।

भारत के बड़े हिस्से में पहले ही जल की कमी हो चुकी है। जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और जीवन–शैली में बदलाव के चलते पानी की मांग तेजी से बढ़ने के कारण जल सुरक्षा के क्षेत्र में गंभीर चुनौतियाँ खड़ी हो गई हैं।

जल स्रोतों में बढ़ता प्रदूषण पर्यावरण तथा स्वास्थ्य के लिये खतरनाक होने के साथ ही स्वच्छ पानी की उपलब्धता को भी प्रभावित कर रहा है।

राष्ट्रीय जल नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि खाद्य सुरक्षा, जैविक तथा समान और स्थायी विकास के लिये राज्य सरकारों को सार्वजनिक धरोहर के सिद्धांत के अनुसार सामुदायिक संसाधन के रूप में जल का प्रबंधन करना चाहिये।

पानी के बारे में नीतियाँ, कानून बनाने तथा विनियमन करने का अधिकार राज्यों का है फिर भी सामान्य सिद्धातों का व्यापक राष्ट्रीय जल संबंधी ढाँचागत कानून तैयार करना समय की मांग है। इससे राज्यों में जल संचालन के लिये जरूरी कानून बनाने और स्थानीय जल स्थिति से निपटने के लिये निचले स्तर पर आवश्यक प्राधिकार सौंपे जा सकेंगे। तेजी से बदल रहे हालात के मद्देनजर नई जल नीति बनाई जानी चाहिये। इसमें हर जरूरत के लिये पर्याप्त जल की उपलब्धता और जल प्रदूषित करने वालों के लिये कड़ी सजा का प्रावधान होना चाहिये।

भारत में प्रभावी जल प्रबंधन की जरूरत : इजराइल के मुकाबले भारत में जल की पर्याप्त उपलब्धता है, लेकिन वहां का जल प्रबंधन हमसे कहीं अधिक बेहतर है। इजराइल में खेती, उद्योग, सिंचाई आदि कार्यों में पुनर्चक्रित (Recycled) पानी का इस्तेमाल होता है, इसीलिये वहाँ लोगों को पेयजल की कमी का सामना नहीं करना पड़ता। भारत में 80 प्रतिशत आबादी की पानी की जरूरत भूजल से पूरी होती है और यह भूजल अधिकांशतः प्रदूषित होता है। ऐसे में बेहतर जल प्रबंधन से ही जल संकट से उबरा जा सकता है और जल संरक्षण भी किया जा सकता है।

भारत में पानी की बचत कम और बर्बादी अधिक होती है और इसकी वजह से होने वाले जल संकट का एक बड़ा कारण आबादी का बढ़ता दबाव, प्रकृति से छेड़छाड़ और कुप्रबंधन भी है। अनियमित मानसून इस जल संकट को और बढ़ा देता है। इस संकट ने जल संरक्षण के लिये कई राज्यों की सरकारों को परंपरागत तरीकों को अपनाने के लिये मज़बूर कर दिया है। देशभर में छोटे–छोटे बांधों के निर्माण और तालाब बनाने की पहल की गई है। इससे पेयजल और सिंचाई की समस्या पर कुछ हद तक काबू पाया जा सका है। लेकिन भारत में 30 प्रतिशत से अधिक आबादी शहरों में रहती है। आवास और शहरी विकास मंत्रालय के आँकड़े बताते हैं कि देश के लगभग 200 शहरों में जल और बेकार पड़े पानी के उचित प्रबंधन की ओर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। जल संसाधन मंत्रालय का भी यह मानना है कि पेयजल प्रबंधन की चुनौतियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। कृषि, नगर निकायों और पर्यावरणीय उपयोग के लिये मांग, गुणवत्तापूर्ण जल और आपूर्ति के बीच सीमित जल संसाधन का कुशल समन्वय समय की मांग है।

(लेखक अधिवक्ता-उच्चतम न्यायालय,दिल्ली एवं राष्ट्रीय उप-सचिव ह्यूमन राइट एससोसिएसन ऑफ इंडिया हैं।)

ISSN No. 2581-3528

विश्व मानचित्र पर भारत का बढ़ता प्रभाव

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

वर्तमान की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रत्येक देश हाल के वर्षों में भारत की नकारात्मक छवि दुनिया भर में सकारात्मक हो गई है। दुनिया के नेताओं और लोगों की भारत, इसके लोगों, सांस्कृतिक विरासत और सबसे महत्वपूर्ण निस्वार्थ सेवा, योग, ज्ञान और आध्यात्मिक अभ्यासों के बारे में एक बहुत ही सकारात्मक धारणा बनी है।

हम भारतीय के रूप में 'वसुधैव कुटुम्बकम' इस मंत्र में विश्वास करते हैं, जिसका अर्थ है 'पूरी दुनिया मेरा परिवार है' और भारत कोरोना के इस कठिन दौर में अन्य देशों को सहायता करके इस वाक्यांश को सही अर्थों से जमीन पर साबित कर रहा है। देश जिस दौर से गुजर रहा है लोगों की रक्षा और जरुरी सामग्री के लिए मदद की सख्त जरूरत है, जहां भारत प्रत्यक्ष रूप से कर के दिखा रहा है और भारत वहां के इस दौर में न केवल अविकसित देशों की सहायता कर रहा है, बल्कि कोरोना, बचाव अभियान और मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास सहित सभी मोर्चों पर विकसित देशों की भी मदद कर रहा है।

कई भारतीय आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संगठनों के साथ–साथ भारत सरकार ने दुनिया भर में लोगों के मन को बदलने के लिए अथक प्रयास किया है, भले ही वे विभिन्न धर्मों के मानने वाले हों। भले ही भारत कई मोर्चों पर खुद पीड़ित है, लेकिन सभी को साथ लाने के इस रवैये ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक सकारात्मक लहर पैदा की है। भारत अब एक समस्या या बाधा निर्माता की बजाय समाधान प्रदाता के रूप में देखा जा रहा है। मैं आपको कुछ तथ्य और आंकड़े देता हूं जिससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि भारत दुनिया का आकर्षण केंद्र क्यों है और हमारा सन्मान, रुतबा कैसे बढ़ रहा है।

कोरोना ने दुनिया की सबसे ताकतवर अर्थव्यवस्थाओं को भी बड़ा झटका दिया है। यह बड़े और छोटे सभी राष्ट्रों के लिए एक भयावह आपदा है। लाखों लोगों ने कष्ट सहे, अपनी जान गंवाई, या अपनी जान गंवाने से डरते थे, और जो कुछ भी उन्होंने वर्षों में बचाया था, उसे भी खो दिया। हर कोई सांत्वना की तलाश में था, और इस कठिन समय के दौरान, भारत बिना किसी हिचकिचाहट के दवाओं, उपकरणों और वैक्सीन की आपूर्ति में सहायता के लिए आगे बढ़ा। इस तथ्य के बावजूद कि एक बड़ी आबादी के कारण भारत में स्थिति ठीक नहीं थी, भारत सरकार ने समय पर आवश्यक आपूर्ति वाले देशों की सहायता करने का निर्णय लिया और कार्य किया।

भारतीय आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं के साथ–साथ सांस्कृतिक और सामाजिक संगठनों ने वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भौतिकवादी जीवन में असंतुलन दिनचर्या के कारण कई समस्यायें जन्म लेती है जिसके समाधान खोजने के लिए आयुर्वेद, योग, ध्यान, प्राणायाम और अन्य आध्यात्मिक प्रथाओं की महान भारतीय विरासत का उपयोग करते हैं।

भारत को अब आईटी और अन्य इंजीनियरिंग क्षेत्रों में एक ज्ञान शक्ति के रूप में माना जाता है। दुनिया ने इस शक्ति को कड़ी मेहनत और भारतीय प्रतिभाओं के उपयोग से अपने संगठनों और अंततः अपने राष्ट्र को विकसित करने के लिए पहचाना है। दुनिया भर के कई प्रमुख संगठनों ने भारतीय विद्वानों को शीर्ष प्रबंधन पदों पर नियुक्त किया है। इसने भारतीय प्रतिभा और कड़ी मेहनत के प्रोफाइल को भी ऊंचा किया है। लाखों भारतीय दूसरे देशों में काम करते हैं, क्योंकि ज्ञान और कड़ी मेहनत ने जो विश्वास बनाया है वह काबिले तारीफ है।

2014 में वर्तमान सरकार की स्थापना के बाद से, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से 80000 से अधिक लोगों को बचाया गया है, जो एक आसान काम नहीं था, और वह भी किसी भी व्यक्ति के धर्म की परवाह किए बिना, न केवल भारत में विभिन्न धर्मों के लोग, बल्कि संयुक्त राज्य अमेरिका सहित 26 युद्धग्रस्त देशों के नागरिक भी शामिल थे। धर्म, जाति या पंथ की परवाह किए बिना, प्रत्येक व्यक्ति से अपनेपन की भावना ने एक मजबूत संबंध और बंधन विकसित किया है, और जब भी कोई प्राकृतिक आपदा या प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होती है, तो लोग सहायता के लिए भारत की ओर देखते हैं।

हम उस विशेष सरकार द्वारा पूछे बिना तत्काल सहायता के कई उदाहरण देख सकते हैं, जैसे मॉरीशस में जल संकट, नेपाल में भूकंप, कई देशों को दवाओं, उपकरणों और टीकों की आपूर्ति, वित्तीय सहायता और जीवन यापन के लिए आवश्यक सामग्री की आपूर्ति, पर्यावरणीय पहलुओं में सुधार के लिए कार्रवाई, और इसी तरह अनेक उदाहरणं... इस विकसित संबंध को कई देशों से उसी प्रकार की मदद से देखा गया था जब भारत कोरोना के दूसरे चरण में एक कठिन दौर से गुजर रहा था।

योग दिवस सहित कई प्रस्तावों पर भारत को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अधिकांश देशों का जोरदार समर्थन मिला है। यह भारत और उसके लोगों के सम्मान, विश्वास और अपनेपन के स्तर को प्रदर्शित करता है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सभी मोर्चों पर हमें धैर्यपूर्वक सुना गया है। यही कारण है कि जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और उनकी टीम के स्तर पर वैश्विक स्तर पर भारत के विरुद्ध गलत बयानबाजी होती है तो कोई नहीं सुनता और न ही जवाब देता है, उलटा भारत के समर्थन में सामने आते है। कई इस्लामी देशों ने भारत के प्रधान मंत्री को सर्वोच्च सम्मान दिया है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमारे प्रधानमंत्री को सर्वोच्च सम्मान मिला है। जब भारत ने आतंकवादियों को मारने के लिए पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक की, तो उसे व्यापक अंतरराष्ट्रीय समर्थन मिला।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि भारत के उत्थान का सूचक है। आत्मानिर्भर भारत की भी विश्व के नेताओं द्वारा प्रशंसा और समर्थन किया जा रहा है। पर्यावरण के क्षरण के खिलाफ भारत की लड़ाई को जबरदस्त सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है, जैसा कि पेरिस समझौते, सीओपी 26 और कई अन्य मंचों से प्रमाणित है। इस संबंध में की गई कार्रवाइयों, जैसे सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहनों और जंगलों और प्रजातियों के संरक्षण पर जोर, वैश्विक कार्यान्वयन के लिए व्यापक रूप से प्रशंसा और स्वीकार की गई है। कई देशों में भारतीय कंपनियों और व्यापारियों की बढ़ती उपस्थिति निःसंदेह देश के प्रति सम्मान में वृद्धि के कारण है। कई शीर्ष सरकारी पद भारतीय मूल के लोगों को मिल रहे हैं। कई देशों ने उपग्रहों को लॉन्च करने के लिए हमारी अंतरिक्ष एजेंसी, इसरो पर भरोसा किया है और यह चलन दिन पर दिन बढ़ रहा है। हम धीरे–धीरे 'विश्व गुरु' की ओर बढ़ रहे हैं ताकि ग्रह पर हर इंसान का उत्थान हो और पर्यावरण का पोषण हो।

(लेखक ब्लॉगर एवं शिक्षाविद हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

कश्मीर फाइल्स के बहाने

देवांशु झा

दी कश्मीर फाइल्स देखकर भारत के विशाल हिन्दू समाज में उद्वेलन है। उन्हें आज यह लग रहा कि बत्तीस वर्ष पूर्व कश्मीर घाटी में पांच लाख हिन्दुओं के साथ जो अमानवीयता, नृशंसता हुई, उसके बारे में तो वह जानते ही नहीं थे। जानते भी थे तो बस इतना कि हिन्दुओं को घाटी छोड़ने को बाध्य कर दिया गया था। उस बाध्यता के पीछे कैसा दहन, कैसा ताप था, यह अधिकांश लोग नहीं जानते। कश्मीर से हिन्दुओं का निर्वासन आधुनिक भारतीय समाज के रुग्ण इतिहास–बोध का जीवंत प्रमाण है। यह बोध उसका अपना नहीं है। उसे यह बोध दिया गया है। कांग्रेसी इकोसिस्टम में हिन्दू उत्पीड़न बहुत शांतिपूर्ण तरीके से होता रहा। समाचार पत्रों से लेकर, राजनीतिक गलियारों में कोई विशेष चिन्ता न थी। हां, कश्मीर से हिन्दू चले गए! केवल इतना। कहां चले गए! क्यों चले गए! वह चले जाने की घटना कैसे संभव हुई! किन लोगों ने उन्हें रातों–रात पुरखों की धरती छोड़ने को विवश किया, इस पर गंभीर विमर्श नहीं हुआ करते थे। छिटपुट सेमीनार आदि अपवाद हैं। यानी, कश्मीर से हिन्दुओं का जाना माइग्रेशन की साधारण घटना हुई! हिन्दुओं को रातों–रात एक स्वप्न आया और वे घर–बार छोड़कर चले गए!

स्वतंत्र भारत की इस दारुण कथा का सत्य आज लोग जान रहे हैं। इस तथ्य से आप समझ सकते हैं कि भारतीय समाज का वर्तमान और इतिहास–बोध कितना कुंद कर दिया गया है। पांच लाख लोग रातों–रात मारपीट, आगजनी, बलात्कार, लूट, नृशंस हत्या के कारण अपनी धरती छोड़ने को मजबूर हुए लेकिन देश में कोई विचलन नहीं हुआ। जब आप बत्तीस वर्ष पुरानी त्रासदी का सच ढंग से जान नहीं सके तो सात आठ सौ वर्षों का इतिहास कैसे जान सकते हैं? यह घटना इस सत्य को प्रमाणित करती है कि कांग्रेसी राज की सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक व्यवस्था में मजहबी उत्पात को बेनकाब करने या उसके प्रतिकार का कोई विकल्प नहीं था। क्योंकि कश्मीर का आतंकवाद एक साधारण घटना थी। भारत की स्वतंत्रता का संघर्ष गांधी नेहरू ने लड़ा था! सावरकर कायर थे! भारत में गंगाजमनी तहजीब रही! मुगल महान निर्माता थे! खिलजी.. तुगलक समय से आगे सोचने वाले सुल्तान थे! हिन्दू समाज में बहुत ऊंच–नीच था! इस्लाम एक महान समानतावादी, प्रोग्रेसिव फेथ था! भक्ति आंदोलन इसलिए फैला कि इस्लाम जैसा सच्चा फेथ भारत में आ गया था! औरंगजेब ने महादेव का मंदिर इसलिए ध्वस्त किया कि वहां अवैध अनैतिक कार्य होते थे! आदि–आदि...।

यह इतिहास बोध भारत समाज में पनपाया गया है। इसकी घुट्टी पिलायी गयी इसके लिए बड़ी मेहनत की गई। दशकों तक पाठ्य–पुस्तकों में रद्दोबदल किए गए। इतिहास के सारे क्रूर कृत्य हटाए गए। हिन्दू नैतिक शिक्षा के पाठ मिटा दिए गए। कश्मीर को जन्नत घोषित कर उसे मुसलमानों द्वारा खोजा गया प्रदेश बताया गया। कुछ इस तरह से पेश किया गया कि वे न रहे होते तो कश्मीर उतना खूबसूरत भी न रहा होता! वो शिकारे! वो मासूम कश्मीरी! गुल गुलशन गुलफाम। वाह! कश्मीरियत, लखनवी मिजाज, अलीगढ़ी तालीम, शेरों–शायरी, मस्जिद मकबरे इन सबसे मूल भारतीय जीवनधारा, उसके सामाजिक सांस्कृतिक प्रतीकों, साहित्यिक अवदानों को तो ढंक दिया गया। व्यवस्था कुछ ऐसी बनी कि टीपू सुल्तान महान स्वतंत्रता सेनानी के रूप में पुस्तकों में आया। अकबर तो सदा–सदा से ही महान रहा। महाराणा एक साधारण लड़ाके हुए जो अकबर से लड़कर हार गए और यह सब तब हुआ जब सात दशक पहले विभाजन की भयावह घटना हुई। हिन्दू नरसंहार हुए। पाकिस्तान बांग्लादेश में हिन्दुओं की दुर्गति पर कोई क्या कहे यहां तो कश्मीर से ही अनजान थे।

उत्तरप्रदेश के चुनाव से पहले ही कितने वीडियोज सामने आए जिनमें सत्ता मिलने पर चुन–चुन कर बदला लेने की धमकियां दी गईं। वे धमकियां बारम्बार इसी सत्य का उद्घाटन कर रही थीं कि सत्ता और शक्ति पाते ही ये हिन्दू उत्पीड़न करते हैं। उसका स्थान या प्रांत से कोई लेना–देना नहीं है। केरल, बंगाल बिहार प्रमाण हैं। कश्मीर से हिन्दुओं का निष्कासन, उत्पीड़न पिछले साठ सत्तर वर्षों के विश्व इतिहास की सबसे भयंकर मानवीय त्रासदियों में से एक है। ध्यान रहे कि पांच लाख मूल निवासियों का निष्कासन किसी युद्धकाल में नहीं हुआ था। वह तो बस कश्मीर, कश्मीरियत और काफ़िर मुक्ति कार्यक्रम का हिस्सा था। आज हम जहां खड़े हैं, वहां से बहुत कुछ बदलना होगा। जिस देश में राम जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिए साढ़े चार सौ वर्षों की प्रतीक्षा करनी पड़ी, और जिस राम जन्मभूमि के लिए इतनी सेक्यूलरी लानतें नसीहतें दी गईं, वहां कश्मीर में हिन्दू पुनर्वास इतना सरल होगा क्या? हो भी गया तो पुराना घाव भर जाएगा क्या?

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,परपीड़ा सम नहीं अधमाई

अनुपमा अग्रवाल

'खिलने को तैयार नहीं हैं, तुलसी भी जिसके आंगन में !
हम सब मिलकर भरें सितारे, उनके मटमैले दामन में'!

तेजी से बढ़ते, विकसित होते महानगरों में आज भी समाज का एक वर्ग झुग्गी झोंपड़ियों, गन्दी बस्तियों, नालों एवं रेल की पटरियों के किनारे रहने को विवश है,ऐसे लोगों को स्वामी विवेकानंद ने 'दरिद्र नारायण' की संज्ञा दी थी। यह दुर्भाग्य का विषय है कि स्वतंत्रता के सात दशक पूर्ण होने के पश्चात भी हम अपने समाज के एक बहुत बड़े वर्ग को सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक रूप से अंतिम पायदान पर खड़ा हुआ पाते हैं। मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करने वाले ज्यादातर माता पिता के बच्चे, स्कूली शिक्षा से वंचित रह जाते हैं और स्वयं भी बाल्यकाल से मजदूरी करने लग जाते हैं, जिस कारण ये कम उम्र में ही दुर्व्यसनों एवं गलत संगत का शिकार हो राष्ट्रविरोधी तत्वों के हाथ की कठपुतली बन जाते हैं।

शहर की वंचित बस्तियों के इन बालकों के बीच शिक्षा का प्रचार प्रसार कर, उन्हें दुर्व्यसनों से बचाकर श्रेष्ठ जीवन मूल्यों से जोड़ने व समाज और देश का जिम्मेदार नागरिक बनाने के अतिरिक्त बस्तियों के मेधावी बालकों की उच्च शिक्षा की व्यवस्था कर उन्हें आगे बढ़ाने तक का प्रयास 'नेह नीड़' प्रकल्प के माध्यम से किया जा रहा है। यदि बस्तियों के इन प्रतिभाशाली बालकों को शिक्षा एवं संस्कारों की उचित व्यवस्था और वातावरण मिला तो निश्चित रूप से ये बालक अगले कुछ ही वर्षों में अपनी प्रतिभा के बल पर समाज के विकास में योगदान देने लगेंगे। आज के बालक कल युवा बनकर स्वयं अपनी बस्ती को राष्ट्र के विकास की मुख्यधारा से जोड़ देंगे, तब फिर वहां कोई समाज व राष्ट्रविरोधी षडयंत्र सफल नहीं हो सकेगा, इन विचारों के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कर्मठ कार्यकर्ता माननीय श्री कन्हैया लाल जी और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती रीमा जी ने 'नेह नीड' प्रकल्प की शुरुआत की। 'नेह' यानि स्नेह, प्रेम, दुलार व 'नीड़' का अर्थ है घोंसला, घर, आवास अर्थात 'नेह नीड़' का शाब्दिक अर्थ है वह स्थान जो स्नेह से परिपूर्ण हो।

चयन प्रक्रिया : नेह नीड़ की परिकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए कन्हैया जी एवं रीमा जी ने कुछ एक सामाजिक कार्यकर्ताओं को साथ लेकर 13 दिसम्बर 2020 को 'नेह नीड़' फाउंडेशन का गठन किया। जिसने कार्यकर्ताओं के माध्यम से प्रारंभ में बृज प्रान्त के अंतर्गत आने वाले विभिन्न महानगरों जैसे आगरा, नोएडा, बरेली, गाजियाबाद, अलीगढ़, मथुरा, फिरोजाबाद, हाथरस आदि की वंचित बस्तियों में जाकर वहां के 10 से 12 वर्ष की आयु के बालकों की खोज कर नेह नीड़ हेतु चयन किया तत्पश्चात गतवर्ष मार्च माह में शताब्दी नगर मेरठ में, पांच दिन का चयन शिविर आयोजित किया गया। जिसमें बालकों की 18 प्रकार की विविध गतिविधियों के आधार पर परीक्षा ली गई। जिसमें बालकों के सीखने की क्षमता, अभिरुचि, शारिरिक व बौद्धिक रूप से स्वस्थ, अनुशासन पालन, नेतृत्व का गुण, खेलों के प्रति रुचि आदि का अनुभवियों द्वारा परीक्षण किया गया। इस चयन प्रक्रिया के आधार पर, शिविर में आये 124 बालकों में से 40 बालकों का चयन किया गया। इन चयनित बालकों के आवास का प्रबंध शताब्दी नगर माधव कुंज मेरठ में तथा इनकी शिक्षा की व्यवस्था विद्या भारती के राधे श्याम मोरारका सरस्वती विद्या मंदिर में की गई है। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 40 बालकों के चयन की प्रक्रिया सुचारू रूप से संचालित की गई। नेह नीड़ की सचिव श्रीमती रीमा जी की योजना, आगे भविष्य में भी यह प्रक्रिया सतत चालू रखने की है।

सर्वांगीण विकास : नेह नीड़ में बालकों को स्वाबलंबी बनाने की परिकल्पना के अंतर्गत पुस्तकीय शिक्षा के साथ व्यवहारिक शिक्षा भी दी जाती है। माधव कुंज में समय समय पर बालकों को प्रबुद्ध जनों का सानिध्य, शिक्षाविदों व प्रेरक व्यक्तियों के साथ बालकों की भेंट व चर्चा तथा व्यवहारिक ज्ञान हेतु वर्ष में एक बार बालकों को शैक्षणिक भ्रमण पर भी ले जाया जाता है। बालकों को अपनी संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों से परिचित कराने हेतु संस्थान में पूरी विधि विधान के साथ सभी धार्मिक एवं राष्ट्रीय पर्वों को मनाया जाता है तथा उन्हें मनाने के पीछे उद्देश्य एवं महत्व को समझाने के अतिरिक्त बालकों को देश का जिम्मेदार नागरिक बनाने तक का संकल्प नेह नीड़ प्रकल्प ने लिया है। शिक्षा, संस्कार, स्वावलंबन को ध्येय मानकर चलने वाले इस प्रकल्प में बालकों के चहुमुखी विकास हेतु ध्यान योग, हवन, संगीत, कला, खेलकूद एवं बालकों के व्यवहारिक ज्ञान पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। बालकों को प्रमुख रूप से चार क्षेत्रों शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी एवं सामाजिक सेवा को आधार मानकर शिक्षा प्रदान की जा रही है।

धन के अभाव और दूषित वातावरण के कारण किसी योग्यता का क्षरण न हो इसके लिए नेह नीड़, समाज के वंचित और सक्षम लोगों के बीच की कड़ी बनकर समाज में स्नेह सेतु का कार्य कर, अबोध बालमन को साधने का भागीरथी प्रयास कर रही है। चूंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जो वंचित समाज को गरीबी, अज्ञानता और अशिक्षा से रहित कर,साथ चलने का सामर्थ्य प्रदान करती है। ऐसे में नेह नीड़ से शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण कर बालक जब अपनी अपनी बस्तियों में लौटेंगे तब वह केवल अपने परिवार व बस्ती ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज में परिवर्तन के वाहक तो बनेंगे ही साथ ही बस्तियों में व्याप्त नशाखोरी, अपराध जैसी सामाजिक बुराईयों को पनपने से भी रोकेंगे। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारत को यदि आगे बढ़ते हुए पुनः विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त करना है तो भारत माता की प्रत्येक सन्तान को साथ लेकर आगे बढ़ना होगा, जब तक भारत माता के ये लाखों करोड़ों पुत्र अशिक्षित व दुर्व्यसनों से ग्रसित रहेंगे तब तक विकास की प्रत्येक परिकल्पना अधूरी है।

(लेखिका समाज सेविका एवं पत्र लेखिका हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड में अप्रैल में बोए जाने वाली फसलें

डॉ. एस. के. त्यागी

फसल चक्र में जायद की फसलों की बुवाई के लिए मार्च–अप्रैल माह को उपयुक्त माना गया है। फसलों की समयनुसार बुवाई एक तरफ जहां अच्छी पैदावार देती है साथ ही साथ फसलों का अच्छा जमाव, कीटनाशकों के न्यूनतम उपयोग के लिए भी प्रभावी मानी जाती है परिणामस्वरूप किसानों को अच्छा व प्रभावी लाभ प्राप्त होता है। मार्च–अप्रैल माह में बोए जाने वाली फसलों में मुख्यतः टमाटर, खीरा, ककड़ी, भिंडी तथा लौकी आदि सब्जियां शामिल है। किसान भाई सुविधानुसार किसी फसल का चयन कर, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से फसलों को चुन कर उच्च आय प्राप्त कर सकते है। भारत का वैश्विक स्तर पर सब्जी उत्पादन में दूसरा स्थान है जोकि विश्व में 12 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है सब्जियां किसानों की साल भर आय का एक आदर्श स्रोत मानी जाती है साथ ही साथ ये हमारे भोजन में पर्याप्त मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, खनिज लवण, अमीनो अम्ल व अनेक विटामिन्स उपलब्ध कराती है तथा शरीर को स्वस्थ रख रोगों से लड़ने की शाक्ति प्रदान करती है ।

	टमाटर	खीरा/ ककड़ी	भिण्ड़ी	लौकी
परिचय	अपने पोशक गुणों और विविध उपयोग के कारण टमाटर एक महत्वपूर्ण सब्जी वाली फसल हैं	कदद् वर्गीय फसलों में खीरा ककड़ी का स्थान महत्वपूर्ण हैं	भिण्ड़ी उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य की प्रमुख सब्जी फसल हैं	कदद् वर्गीय सब्जी फसलों में लौकी एक महत्वपूर्ण फसल हैं
बुवाई का उपमुक्त समय	**मार्च–अप्रैल**	**मार्च–अप्रैल**	**मार्च–अप्रैल**	**मार्च–अप्रैल**
उत्तम प्रजातिया	सोलन–गोला, यशवन्त रोमा, रूपाली, नवीन, पंत बहार, हिम प्रगति, सोलन गरिमा	**खीराः** खीरा–75, 90 पाईनसेट, के. एच–1 **ककडीः** अर्का शीतल, लखनऊ अर्ली, नसदार	पंजाब–7, 8, हिसार उन्नत, काशी मोहिनी, काशी लीला, काशी भैरव, पूसा सावनी हरभजन, पी–8	काशी गंगा, काशी बहार, पूसा मंजरी, पूसा समर
बीजदर	400–500 ग्राम/हैक्टेयर	2–3 किलोग्राम	15–20 किलोग्राम/ हैक्टेयर	4–5 किलोग्राम /हैक्टेयर
बीज उपचार	थायरम, डायथेम एम– 45 काबेन्डिोजिम आदि	ट्राईकोडर्मा, कैप्टान/थीरम	कैप्टान/थीरम आदि	टाईकोडर्मा, कैप्टान/थीरम
खाद उर्वरक	150–200 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद तथा 150 किलोग्राम नाईट्रोजन, 80 किलोग्राम फासफोरस, 80 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर	100–150 क्विंटल सडी गोबर की खाद तथा 80 किलोग्राम नाईट्रोजन, 60 किलोग्राम फासफोरस, 60 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर	100–150 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद नाईट्रोजन– 80 किग्रा हैक्टेयर फासफोरस– 60 किग्रा हैक्टेयर पोटाश– 60 कि.ग्रा हैक्टेयर	150–2000 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद तथा नाईट्रोजन– 80 किग्रा हैक्टेयर फासफोरस– 60 कि. ग्रा हैक्टेयर पोटाश– 60 कि.ग्रा हैक्टेयर
खरपतवार	मुख्यतः चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार तथा मोथा भी शामिल है	मुख्यतः चौडी पत्ती वाले खरपतवार तथा मोथा आदि	चौड़ी पत्ती वाले मोथा, जंगली पालक, भांग आदि	मुख्यतः चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार तथा मोथा आदि
निराई/ गुडाई	3–4	3–4	2–3	2–3
सिंचाई	8–10	12–15	12–15	10–12
कीट पंतगे	फल छेदक, फल–मक्खी, कटुआ कीट	एफिड, फल–मक्खी, पत्ती खाने वाली सुंडी, लालडी	फली छेदक, बलिस्टर बीटल, जैसिड, फल–मक्खी, हरा तेला आदि	एफिड, फल–मक्खी, पत्ती खाने वाली सुंडी, लालडी
नियन्त्रण	क्लोरपाइरिफास–20 ईसी, मैलाथियान, एंडोसलफान	थायोक्लोरापिड क्लोरोपाइरीफास	मैलाथियान–50 ईसी, एंडोसलफान	कालोरोपाइरिफास थायोक्लोरापिड
बिमारियां	बकाई राट, आल्टरनेरिया झुलसा, मैलथियान, एंडोसलफान	आर्द्र विगलन, चूर्णी फफुदी, फल विगलन	येलोवेन मोजैक, चुर्णिल आसिता	आर्द्र विगलन, फल विगलन चुर्णी फफुदी
नियन्त्रण	मेनकोजेब–एफ पी–0.55 प्रतिशत, हैगजाकोनेजोल आदि	कैराथेन, मेनकोजेब आदि	मैलाथियान–0.50 प्रतिशत, डाइमियोएट–30 प्रतिशत, हैक्साकोनोजोल–5 प्रतिशत	मेनकोजेब, सलफेक्स आदि
उपज	400–450 क्विंटल/ हैक्टेयर	150–200 क्विंटल/ हैक्टेयर	120–150 क्विंटल/ हैक्टेयर	350–400 क्विंटल/ हैक्टेयर

ISSN No. 2581-3528

महानगर वाले, मुम्बई में सब गांव वाले!

नीलम भागी

मुम्बई में कोई मुझसे पूछता?''आप किस गांव से? मैं तपाक से उन्हें सुधारने के लहज़े में जवाब देती,''मैं दिल्ली से हूं।''फिर वो बाकियों से परिचय करवाते हुए कहतीं, इनका गांव बैंगलोर, इनका गांव कोलकता है यानि हमारे देश के महानगरों वाले, मुम्बई में सब गांव वाले हैं। बाद में मुझे भी आदत हो गई थी। जब दिल्ली से लौटती तो कोई पूछता,''दिखी नहीं!!''मेरा जवाब होता,''गाँव गई थी।''वो बताती मैं भी आज ही गांव से लौटी हूं।''मैं पूछती,''तुम्हारा गांव का नाम? वो जवाब देती,''चेन्नई।''लेकिन त्यौहार में सारे गांव एक देश में तब्दील हो जाते हैं।

चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा हिन्दू नवसंवत्सर से चैत्र नवरात्र शुरु होते हैं देश भर में अलग अलग नाम से उत्सव मनाने में प्रकृति का भी सहयोग होता है। पेड़ पौधे नई नई कोंपले और फूलों से लदे होते हैं। गुड़ी पड़वा उत्सव महाराष्ट्रीयन और कोंकणी मनाते हैं। पूरनपोली, श्रीखंड, घी शक्कर खाने खिलाने का रिवाज़ है। गुड़ी का अर्थ है विजय पताका। जिसके प्रतीक स्वरुप एक बांस पर बर्तन को उल्टा रखकर उस पर नया कपड़ा लपेट कर पताका की तरह ऊंचाई रखा जाता है। जो दूर से देखने में ध्वज की तरह लगता है। मुख्यद्वार पर अल्पना और आम के पत्तों का तोरण तो सभी हिन्दू घरों में दिखता है। कहीं आम के पत्ते घट स्थापना में होते हैं। दक्षिण भारत के कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना में उगादी का पर्व मनाते हैं और सृष्टि की रचना करने वाले ब्रह्मा जी की पूजा करते हैं। मंदिर जाते हैं और एक विशेष भोजन पचड़ी (नीम की कोंपले फूल, आम, हरी मिर्च, नमक, इमली और गुड़) बनाया जाता है जो सभी स्वादों को जोड़ती है। यानि मीठा, खट्टा, नमकीन, कडवा, कसैला और तीखा। तेलगु और कन्नड़ हिन्दु परंपराओं में पचड़ी प्रतीकात्मक है कि आने वाले वर्ष में हमें सभी अनुभवों की अपेक्षा करनी चाहिए और उनका लाभ उठाना चाहिए। गुड़ी पड़वा से अगले दिन चेटी चंड सिंधी हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है। जिसे सिंधी झूलेलाल के जन्मदिन के रुप में मनाते हैं।

दुर्गा अष्टमी और नवमी को नवरात्र के व्रत, व्रतियों ने कन्या पूजन से सम्पन्न (पारण) किए। यानि हमारी एक ही संस्कृति हमें जोड़ती है। ये देखकर ही तो कहते हैं कि भारत सभ्यताओं का नहीं, संस्कृति का राष्ट्र है। सभ्यताओं में संघर्ष हो सकता है पर संस्कृति हमें जोड़ती है। बड़े दुलार से घरों में नौ देवियों के स्वरुप में नौ कन्याओं का पूजन होता है। सबके साथ हमारी गीता भी पर्स लटका कर जाती, पैर धुलवाती, कलावा बंधवाती और तिलक लगवाती। वो सबसे छोटी थी जो दस वर्ष तक की अलग अलग प्रदेशों की कन्या दीदियां कहतीं, वो करती यानि खा भी लेती। अपने गिफ्ट से उसे कोई मतलब नहीं, पर अपनी दक्षिणा तुरंत पर्स में रख लेती, जबकि पैसे गिनने उसे नहीं आते थे क्योंकि कन्या दीदियां ऐसा करतीं हैं। अगर कोई गोदी की कन्या है तो वे उसे भी उठा ले जातीं। उस दिन कन्याएं पर्स टांग कर बहुत गुमान में रहती हैं और यहीं से इनकी आपस में दोस्ती शुरु हो जाती है। अमेरिका जाने पर नवमीं के दिन उत्कर्षिनी राजीव, गीता और उसकी सहेलियों को कन्या पूजन में बुलाते हैं। वो बड़ी खुशी से अपना पूजन करवाती हैं। उन्हें हमेशा इस दिन का इंतजार रहता है। भारत आने पर श्वेता अंकूर उसे घाघरा चोली चुनरी देते हैं। जिसे वह कन्या पूजन नवमीं पर पहनती है। इस बार उसने अपनी यूक्रेनियन सहेली को भी कन्यापूजन पर बुलाया। उत्कर्षिनी राजीव ने उसके माता पिता को भी पूजा में आमन्त्रित किया। सहेली को गीता ने बड़े प्यार से अपना लहंगा चोली चुनरी पहनवाई क्योंकि गीता हमेशा त्यौहारों पर भारतीय पोशाक पहनती है। यूक्रेनियन सहेली ने लहंगा पहली बार पहना था इसलिए वह कभी–कभी उसे शॉट की तरह कर लेती थी। दोनों का कन्या पूजन किया। उसके माता पिता बहुत खुशी से इसमें शामिल हुए। पूजन के बाद सबसे पहले माताराणी का प्रसाद हलुआ, छोले और पूरी को खाया फिर जो मरजी साथ में खाओ। हम भारतीय जहां भी जायेंगे अपनी परंपरा तो निभायेंगे। रामनवमीं को भगवान श्रीराम का जन्म सबने मनाया।

वैशाखी उत्सव फसल कटाई समय को दर्शाता है और ऐसा माना जाता है कि गंगा नदी वैसाखी को धरती पर अवतरित हुई थी इसलिए इस दिन गंगा स्नान का महत्व है जो नहीं पहुंच सकते वे अपने आस पास बहने वाली नदी पर जाते हैं। पंजाब में वैशाखी के दिन नदियों के पास ही मेले लगते हैं। सुबह सपरिवार जो भी पास में नदी या बही होती है, वहाँ स्नान करते हैं। लौटते हुए जलेबी और अंदरसे खाते हैं। लोटे में नदी का जल, गेहूँ की पाँच छिंटा(बालियों वाली डंडियां) घर लाकर उस पर कलेवा बांध कर मुख्य द्वार से लटका दिया जाता है और नदी के जल को पूजा की जगह रख दिया जाता है। स्कूलों में भी बाडियां (गेहूं की कटाई) की छुट्टियां हो जाती हैं। फिर सपरिवार कटाई में लग जाते हैं। इन दिनों जो नौकरी पेशा सदस्य दूसरे शहरों में रहते हैं। वे भी पैतृक घरों में जाकर बाडियां में मदद करते हैं। बुजुर्ग परिवार को चेतावनी देते हुए कवित्त करते हैं

'पक्की खेती जान कर, न कर तूं अभिमान,
मींह(वर्षा) नेरी (आंधी) देख के, घर आई ते जान।

यानि लहलहाती फसल को देख कर कभी अभिमान मत करना। मौसम का कुछ नहीं पता। जब फसल खेत से खलिहान में आ जाती है। तब बैसाखी में लाये उस नदी के जल को खाली खेत में छिड़क दिया जाता है।

पूर्वोतर भारत का मुख्य रोजगार चाय बगान है। किसी के पास कोई भी हुनर नहीं है तो भी उसके लिए रोजगार है चाय की पत्ती तोडने का। हथकरघे का काम तो प्रत्येक घर में होता है। लोग बहुत कर्मठ हैं। महिलाएं कुछ ज्यादा ही मेहनती हैं, खेती के साथ कपड़ा भी बुनती हैं। इतनी मेहनत के बाद, त्यौहारों को बहुत उत्साह से मनाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बैसाख याानि 13, 14 अप्रैल में मनाया जाने वाला बिहु उत्सव है। इस समय बसन्त के कारण प्राकृतिक सौन्दर्य चारों ओर होता है। इसे रोंगाली बिहु या बोहाग बिहू भी कहते हैं। एक महीना रात भर किसी न किसी के घर बीहू नृत्य गाना होता है। जो अपने घर

ISSN No. 2581-3528

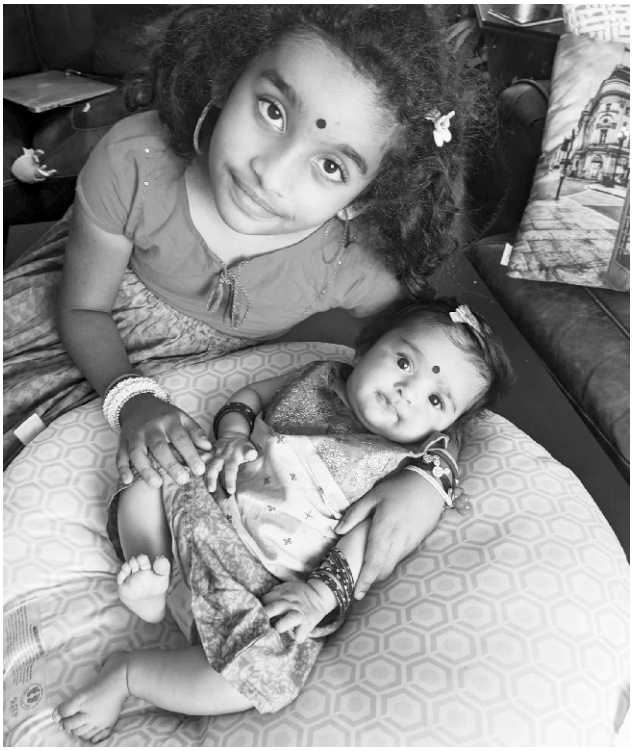

करवाता है। वह सबका खाना पीना बकरी, सूअर का मांस पकाता है और हाज (चावल की बीयर) आदि का बन्दोबस्त करता है। इसे सम्मान सेवा कहते हैं। मूंगा सिल्क जिसे दुनिया में गोल्डन सिल्क ऑफ आसाम कहते हैं, विश्व में और कहीं और नहीं होता। पुरूष गमझा गले में डालते है। मेखला चादर तो बहुत ही खूबसूरत पोशाक है उसे नृत्य के समय पहनते हैं, सब रेशम का होता है। बिहु की विशेषता है इसे सब मनाते हैं कोई जाति, वर्ग, धनी निर्धन का भेद भाव नहीं होता। उत्तराखण्ड में बिखोती उत्सव मनाया जाता है जिसमें पवित्र नदी में स्नान करके राक्षस को पत्थर मारने की प्रथा है। 13 अप्रैल 1699 को श्री केसरगढ़ साहिब आनन्दपुर में दसवें गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी इसलिए सभी गुरुद्वारों में समारोह किया जाता है। मुख्य समारोह आनन्दपुर साहिब में होता है।

यूनेस्को द्वारा 2016 में मानवता की सांस्कृतिक विरासत के रुप में दर्ज, पाहेला वैशाख बंगाल, त्रिपुरा, बांगलादेश में उत्सव मंगल शोभा जात्रा का आयोजन होता है। जुरशीतल भारत और नेपाल क्षेत्र में मैथिलों द्वारा मनाया जाता है। बिहार सरकार ने इस दिन को सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है। मैथिल नववर्ष को जुरशीतल के उत्सव 14 अप्रैल को मिथिला दिवस का अवकाश रहता है। मैथिल इस दिन भात और बारी (बेसन की सरसों के तेल में छनी) और गुड़ वाली पूरी बनाते हैं। पाना संक्राति, महा बिशुबा संक्राति, उड़िया नुआ बरसा, उड़िया नया साल का सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक उत्सव है। इस समारोह का मुख्य आर्कषण मेरु जात्रा, झामु जात्रा और चाडक पर्व है। ये भी 13 या 14 अप्रैल को पड़ता है। कहीं कहीं पर शिवजी संबंधित छाऊ नृत्य, लोक शास्त्रीय नृत्य समारोह होता है। अंगारों पर भी चलते हैं। तमिल नववर्ष को पुथांडु उत्सव कहते हैं। तमिल महीने चितराई के पहले दिन पुथांडु, तमिल नाडु, पांडीचेरी, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, मारीशियस में और विश्व में जहां भी तमिलियन हैं मनाया जाता है। यह आमतौर पर 14 अप्रैल को पड़ता है। इस दिन को तमिल नववर्ष या पुथुवरुशम के नाम से भी जाना जाता है। यह त्यौहार परिवार के सभी लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं। घर की सफाई, फूलों और लाइटों से सजावट करके, नहा कर नये कपड़े पहन कर मंदिर जाते हैं। घरों में शाकाहारी भोजन वडा, पायसम, खासतौर पर 'मैंगो पचड़ी' बनाया जाता है। यह भी कहा जाता है कि इस दिन देवी मीनाक्षी ने भगवान सुन्दरेश्वर से विवाह किया था।

केरल का नववर्ष मलियाली महीने मेदान के पहले दिन विशु मनाया जाता है। आसपास के राज्यों के कुछ हिस्सों में भी मनाया जाता है। 14 या 15 अप्रैल को परिवार के साथ मनाते हैं। यह पर्व भगवान विष्णु और उनके अवतार कृष्ण को समर्पित हे। इस दिन सार्वजनिक अवकाश होता है। पिछली फसल के लिए भगवान का धन्यवाद किया जाता है और धान की बुआई की जाती है। परिवार के बुजुर्ग विशुकानी (विष्णु की झांकी) सजाते हैं। सुबह बच्चों की आंखो को ढक कर परिवार का बड़ा, बच्चे को विशुकानी के सामने लाकर आंखों से हाथ हटा लेता है। अर्थात् सुबह सबसे पहले भगवान के दर्शन करते हैं। बुजुर्ग बच्चों को विशुक्कणी(भेंट या रूपए) देते हैं। मंदिर जाते हैं। विशु भोजन करते हैं जिसमें 26 प्रकार का शाकाहारी भोजन होता है। इतने प्यारे फसलों के त्यौहार जिसमें सुस्वादु भोजन बनते हैं, नौकरी के कारण परिवार से दूर गए सदस्यों को भी अति व्यस्त होने पर भी, कुटुंब में आने को मजबूर करते हैं।

भारतीय संविधान के पिता, भारत के महान व्यक्तित्व बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्मदिन 14 अप्रैल को धूमधाम से मनाया जाता है। 22 अप्रैल को पर्यावरण सुरक्षा के सर्मथन में विश्व पृथ्वी मनाते हैं। फसल उत्सव, प्रेरणास्रोत महापुरुषों का जन्मदिन और पर्यावरण संरक्षण को विशेष दिनों में मनाना हमारे जीवन को खुशहाल बनाता है। **(लेखिका पत्रकार व ब्लॉगर है)** ■

भारत का कश्मीर

ऋषि कश्यप का सृजन
शिव जी का वो क्रीड़ा स्थल
कल्हण का वो कर्मक्षेत्र है।
वह भारत का काश्मीर है।

अनुसंधानों का अन्वेषण
विदुषियों का अध्ययन स्थल
विश्व पटल पर जिसकी चर्चा
वह भारत का काश्मीर है।

औषधियों का वह भंडारण
ऋषियों की जो तपोस्थली
हम सब जिस पर गुरुता करते
वह भारत का काश्मीर है।

- स्वाति शर्मा
(शोध छात्रा, एसडीपीजी कॉलेज, गाजियाबाद)

ISSN No. 2581-3528

भारत का पहला ई-कचरा इको पार्क

रंजना मिश्रा

आज देश और दुनिया में प्रयोग होने वाले इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स बेकार होने के बाद, दूषित बनकर वातावरण को जहरीला बना रहे हैं, जिससे पूरे विश्व में पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी खतरा बढ़ता जा रहा है। अगर जल्द ही इससे निपटने का हल न खोजा गया तो ये समस्या पूरी दुनिया को भयानक तबाही की ओर ले जा सकती है। यूनाइटेड नेशंस यूनिवर्सिटी की ओर से जारी 'ग्लोबल ई–वेस्ट मॉनिटर 2020' रिपोर्ट के मुताबिक साल 2019 में दुनिया में 5.36 करोड़ मीट्रिक टन ई–कचरा पैदा हुआ था। अनुमान है कि साल 2030 तक वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक कचरे में तकरीबन 38 प्रतिशत तक वृद्धि हो जाएगी। स्पष्ट है कि ये समस्या अभी और विकराल होने वाली है। दरअसल कोई भी इलेक्ट्रॉनिक सामान जैसे– मोबाइल फोन, टी.वी., फ्रिज, कंप्यूटर या इससे संबंधित अन्य उपकरण बेकार होने के बाद ई–कचरा कहलाते हैं। इन्हें दो व्यापक श्रेणियों में बांटा जा सकता है– 1–सूचना प्रौद्योगिकी और संचार उपकरण, 2–विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण। दुनिया भर में इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों की खपत के साथ–साथ इलेक्ट्रॉनिक कचरे की समस्या भी तेजी से बढ़ती जा रही है। आजकल रोज नई–नई टेक्नोलॉजी आ रही हैं। पुराने इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों को फेंक कर, नए अपनाने की प्रक्रिया का रुझान बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा इन इलेक्ट्रॉनिक सामानों का जीवन काल भी ज्यादा लंबा नहीं होता, ये जल्द ही बेकार हो जाते हैं और इस तरह ई–कचरा बढ़ता जाता है। इन उत्पादों की मरम्मत और रीसाइक्लिंग में आने वाला खर्च काफी ज्यादा होता है। इसीलिए लोग इन्हें ठीक कराने की बजाय, बदल कर दूसरा लेना ज्यादा पसंद करते हैं। एक आंकड़े के मुताबिक साल 2019 में यदि उत्पादित कुल इलेक्ट्रॉनिक कचरे को रीसायकल कर लिया गया होता, तो करीब 425,833 करोड़ रुपए का फायदा होता। यह आंकड़ा दुनिया के कई देशों के जीडीपी से भी ज्यादा है।

इलेक्ट्रॉनिक क्रांति ने विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक आविष्कारों के माध्यम से संचार तंत्र को विकसित किया है एवं हमारे जीवन को सुख–सुविधाओं से भर दिया है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण ने मानव सभ्यता को नया आयाम दिया है, साथ ही इससे व्यवसायिक क्षेत्र में रोजगार के अनेकों अवसर पैदा हुए हैं। लेकिन इससे पैदा होने वाला ई–कचरा हमारे पर्यावरण और हमारे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर डाल रहा है। दरअसल ई–कचरे में भारी धातुएं एवं अन्य प्रदूषित पदार्थ जैसे– पारा, कैडमियम और क्रोमियम आदि कई विषैले घटक शामिल होते हैं, जिनका सुरक्षित निस्तारण नहीं हो पाता और ये मिट्टी और भूजल को दूषित कर देते हैं। इलेक्ट्रॉनिक सामानों के अधिकतर अवयवों में बायोडिग्रेडेबल होने की विशेषता नहीं होती और न ही इनमें मिट्टी में घुल–मिल जाने का गुण पाया जाता है। ये कई रासायनिक तत्वों व यौगिकों से मिलकर बने होते हैं। उदाहरण के लिए एक सेल्युलर फोन में 40 से अधिक तत्व विद्यमान हो सकते हैं। ई–कचरे में मुख्य रूप से लोहा, जस्ता, एल्युमिनियम, सीसा, टिन, चांदी, सोना, आर्सेनिक, गिलट, क्रोमियम, कैडमियम, पारा, इण्डियम, सैलिनियम, वैनेडियम, रूथेनियम जैसी धातुएं मिली होती हैं।

भारत में ई–कचरे के निपटान के लिए 16 कंपनियां हैं, जिनकी कुल निपटान क्षमता 66 हजार मीट्रिक टन है, किंतु इन कम्पनियों के द्वारा देश में विद्यमान कुल कचरे का केवल 10 फीसदी ही निपटान हो पाता है। एक शोध के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2025 तक 1000 मिलियन से भी अधिक कंप्यूटरों के रीसाइक्लिंग की व्यवस्था की जरूरत होगी तथा एक दशक में भारत में 130 मिलियन डेस्कटॉप कंप्यूटर और 900 मिलियन लैपटॉप ई–कचरे में रूपांतरित हो जाएंगे, जिसका निपटान करना आसान नहीं होगा। हमारे देश में कंप्यूटर जनित ई–कचरा कुल ई–कचरे का लगभग 33 प्रतिशत है। इनकी रीसाइक्लिंग उचित दिशा–निर्देशों में ही की जानी चाहिए। किंतु प्रायः असंगठित क्षेत्र की कंपनियां ई–कचरे के निपटारे के दौरान प्रोटोकाल का सही रूप से पालन नहीं करतीं।

केवल दिल्ली में ही हर साल 2 लाख टन ई–कचरा पैदा होता है। इसका निपटारा वैज्ञानिक और सुरक्षित तरीके से नहीं किया जाता, जिससे आग लगने जैसी कई दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं। इसीलिए अब दिल्ली सरकार ने दिल्ली में भारत का पहला इलेक्ट्रॉनिक–वेस्ट इको–फ्रेंडली पार्क स्थापित करने का फैसला लिया है। इस पार्क में कचरे का निस्तारण, पुनर्चक्रण और पुनः निर्माण सुरक्षित और वैज्ञानिक तरीके से किया जाएगा। इस पार्क को 20 एकड़ में बनाया जा रहा है। इसमें बैटरी, इलेक्ट्रॉनिक सामान, लैपटॉप, चार्जर, मोबाइल और पीसी के लिए द्वितीयक उत्पाद बिक्री बाजार भी बनाया जाएगा। ई–कचरे को चैनलाइज करने के लिए 12 जोन में कलेक्शन सेंटर बनाए जाएंगे। इस इलेक्ट्रॉनिक कचरे को कलेक्ट करने का काम कर रहे लोगों को प्रशिक्षित किया जाएगा और इस कार्य के लिए उचित उपकरण मुहैया कराए जाएंगे।

वैसे तो भारत में साल 2011 से ही इलेक्ट्रॉनिक कचरे के प्रबंधन से जुड़े नियम मौजूद हैं तथा 2016 से पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा ई–कचरा प्रबंधन नियम भी लागू किए गए थे। इन नियमों के तहत पहली बार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माताओं को विस्तारित निर्माता जिम्मेदारी के दायरे में लाया गया तथा नियमों के उल्लंघन करने पर दंड का प्रावधान भी किया गया। लेकिन ई–वेस्ट कलेक्शन से संबंधित डाटा बताता है कि निर्माता अपने दायित्व का निर्वाह ठीक से नहीं कर रहे हैं। इसलिए इन कानूनों को और अधिक कड़ा बनाने की जरूरत है। ताकि बेकार हुए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को कंपनियां लेने को बाध्य हों। साथ ही सरकार व उपभोक्ताओं को जागरूक होना होगा, तभी भविष्य में ई–कचरे की समस्या से छुटकारा मिल सकेगा।

साल 2019 में वैश्विक स्तर पर केवल 17.4 फीसदी ई–वेस्ट को एकत्र और रिसाइकल किया गया था, जबकि 82.6 फीसदी हिस्सा यूं ही बर्बाद चला गया। इस कचरे में मौजूद सोना, चांदी, तांबा, प्लैटिनम और अन्य कीमती सामग्री की कुल कीमत करीब 413,277 करोड़ रुपए (5700 करोड़ डॉलर) थी, जो कई देशों की जीडीपी से भी ज्यादा है। बर्बाद हुए कचरे का अगर ठीक से नियंत्रण और प्रबंधन किया जाए, तो ये आर्थिक विकास में काफी मददगार साबित हो सकता है। भारत में इस ओर ध्यान देने की जरूरत है, जिससे कि ई–कचरे से भी लाभ उठाया जा सके। ■

ISSN No. 2581-3528

आईआईटी खड़गपुर के तथ्यात्मक एवं शोधपरक कैलेंडर पर वामपंथियों ने छेड़ा पुराना राग

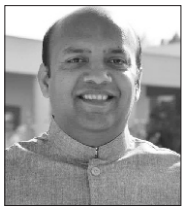

प्रणय कुमार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर ने 'रिकवरी ऑफ द फाउंडेशन ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम' शीर्षक से वर्ष 2022 के लिए एक कैलेंडर जारी किया है, जिसमें आर्यों के आक्रमण को लेकर गढ़े गए मिथक को अकाट्य तर्कों एवं प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर निरस्त किया गया है। इस कैलेंडर में वेदों–पुराणों–महाकाव्यों से तमाम संदर्भों एवं साक्ष्यों को उद्धृत करते हुए हर मास के लिए दिए गए चित्रों–श्लोकों–उद्धरणों आदि के माध्यम से यह सिद्ध किया गया है कि आर्य कहीं बाहर से नहीं आए, अपितु वे भारत के ही मूल निवासी थे। इसके समर्थन में स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद एवं अन्य मनीषियों के कथनों एवं विज्ञान–सम्मत दृष्टांतों का भी संदर्भ दिया गया है। इसे लेकर तमाम वामपंथी संगठनों एवं शिक्षाविदों ने विरोध करना प्रारंभ कर दिया है। वे शैक्षिक एवं शोधपरक निष्कर्षों को भी हिंदुत्व का प्रचार–प्रसार बताकर अप्रासंगिक करार देना चाहते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि तमाम नए अनुसंधान एवं पुरातात्विक शोध के निष्कर्षों के बावजूद वे इस सत्य को स्वीकार करने को तैयार नहीं कि आर्य कोई प्रजातिसूचक शब्द नहीं, अपितु गुण एवं श्रेष्ठतासूचक शब्द है। रामायण एवं महाभारत ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं कि भारतीय स्त्रियां अपने पतियों को आर्यपुत्र या आर्यश्रेष्ठ कहकर संबोधित करती थीं। आर्य और दस्युओं का उल्लेख भी मानवीय गुणों या प्रकृति–प्रवृत्ति पर आधारित है। आर्य यहाँ के मूल निवासी थे, इसीलिए भारत वर्ष का एक नाम आर्यावत्त भी है। द्रविड़ भी प्रजाति का द्योतक न होकर स्थान का परिचायक है। मनु ने द्रविड़ का प्रयोग उन लोगों के लिए किया है, जो द्रविड़ देश में बसते थे। महाभारत में राजसूय यज्ञ से पूर्व सहदेव के दिग्विजय के समय द्रविड़ देश का वर्णन आता है।

भारत के राष्ट्रगान में 'द्रविड़' शब्द पंजाब, सिंध, गुजरात आदि की तरह स्थानवाची है, जातिवाचक नहीं। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व, एक भी ऐसा वृतांत–दृष्टांत, स्रोत–साहित्य, ग्रंथ–आख्यान नहीं मिलता, जिनमें आर्य–द्रविड़ संघर्ष का उल्लेख भर भी हो। क्या यह संभव है कि विजितों–विजेताओं में से किसी के भी ग्रंथ, लोक–कथा या सामूहिक स्मृतियों में इतने महत्त्वपूर्ण व निर्णायक युद्ध का उल्लेख–मात्र न हो? आर्य यदि कथित रूप से बाहरी या आक्रांता जाति हैं तो क्या यह तर्कसंगत एवं स्वाभाविक है कि उनकी सांस्कृतिक चेतना, पुरातन स्मृतियों एवं उनसे जुड़े किसी भी ग्रंथ में उनके मूल स्थान की रीति–परंपरा–मान्यता–विश्वास आदि की झलक भर न हो, अपने मूल स्थानों के प्रति कोई श्रद्धा या कृतज्ञता की भावाभिव्यक्ति तक न हो? चाहे यूनानी हों या इस्लामिक आदि बाहरी व विदेशी आक्रांता, उनके नाम इतिहास में दर्ज हैं, क्यों कोई वामपंथी इतिहासकार आज तक यह नहीं बता सका कि आर्य यदि आक्रांता थे तो उनका नेतृत्वकर्ता कौन था? क्या यह संभव है कि हारी हुई जाति विजेताओं की भाषा–संस्कृति को शब्दशः और समग्रतः आत्मसात कर ले? लोक–भाषाओं के स्फुट–स्वतंत्र– सहायक धाराओं के बावजूद क्या स ंस्कृत संपूर्ण भारत के ज्ञान–विज्ञान व साहित्य की भाषा नहीं रही? क्या दक्षिण के कण्व, अगस्त्य, शंकराचार्य, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, आदि ऋषि वैदिक संस्कृति के सर्वमान्य आचार्यों व दार्शनिकों में से एक नहीं? क्या सर्जक–पालक संहारक के रूप में ब्रह्मा–विष्णु–महेश, अवतारों के रूप में श्रीराम–श्रीकृष्ण, जीवन की आधारभूत शक्तियों के रूप में लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती, दुर्गा जैसी देवियों या इंद्र, वरुण, पवन, अग्नि, सूर्य, गणेश, कार्तिकेय आदि देवों के प्रति संपूर्ण भारतवर्ष में समान आस्था व श्रद्धा की भावना नहीं रही?

सत्य यह है कि निहित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य–द्रविड़ संघर्ष की संपूर्ण अवधारणा ही अंग्रेजों द्वारा विकसित की गई। वे इस सिद्धांत को स्थापित कर बाँटो और राज करो की अपनी चिर–परिचित नीति के अलावा ब्रिटिश आधिपत्य के विरुद्ध व्याप्त देशव्यापी विरोध की धार को कुंद करना चाहते थे। उन्होंने भारत के मूल एवं बहुसंख्यक समाज को आर्य–द्रविड़ में बाँटने की कुचेष्टा कर जहाँ एक ओर उन्हें सामाजिक–सांस्कृतिक एकता के तल पर दुर्बल करने का प्रयास किया तो वहीं सभ्यता के पथ–प्रदर्शक एवं विश्वगुरु के उसके स्वाभाविक दावे को भी खारिज करने की कोशिशें लगातार जारी रखीं। वस्तुतः वामपंथी विषबेल परकीय–औपनिवेशिक–खंडित विचार–भूमि पर ही पल–बढ़ सकती है, इसलिए उन्होंने सदैव उन सिद्धांतों का समर्थन किया, जो भारत की सांस्कृतिक एकता एवं अखंडता के मार्ग में बाधक हों।

और अब आईआईटी, खड़गपुर द्वारा जारी किए गए वर्ष 2022 के कैलेंडर में चित्रों के द्वारा हर महीने नई–नई जानकारी देकर भारत के इतिहास की जानकारी दी गई है। जनवरी मास में कैलाश पर्वत का चित्र देकर दर्शाया गया है कि उसका ग्लेशियर कई महत्त्वपूर्ण नदियों का मूल स्रोत रहा है, जिसके तट पर कई सभ्यताएँ फली–फूलीं। सिंधु घाटी, हड़प्पा पूर्व और पश्चात की सभ्यताएँ यहीं पनपीं और विकसित हुईं। ब्रह्मपुत्र नदी भी इसी ग्लेशियर से निकली। ऋग्वेद में सिंधु की कई सहायक नदियों का भी उल्लेख है, जिनके स्रोत शिवालिक की

ISSN No. 2581-3528

पहाड़ियाँ हैं। आईआईटी, खड़गपुर का अध्ययन एवं शोध इस ओर संकेत करता है कि कैसे अंग्रेज इतिहासकारों ने प्राचीन भारतीय सभ्यता के पूर्वी और पश्चिमी छोरों को समझने में भूल की और आर्यों के आक्रमण को लेकर जान–बूझकर या अनजाने में मिथ्या या भ्रामक निष्कर्ष दे बैठे।

कैलेंडर में फरवरी मास के पृष्ठ पर पवित्र स्वस्तिक चिह्न के माध्यम से समय के चक्र एवं पुनर्जन्म को समझाया गया है। स्वस्तिक की पद्धत्ति अ–रैखिक एवं चक्रीय है। जबकि पश्चिम मानता है कि 'समय रैखिक गति से चलता है' और भारतीय मनीषा कहती है कि 'समय चक्रीय गति से चलता है, हर उत्थान में पतन और हर पतन में उत्थान की संभावनाएँ निहित होती हैं।'

मार्च महीने के कैलेंडर में स्पेस–समय और कार्य–कारण सिद्धांत को समझाया गया है। इसमें बताया गया है कि सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों में जो मुहरें (सील) मिली हैं, वे आर्य–ऋषियों द्वारा प्रतिपादित किए गए सिद्धांत श्योग–क्षेमश से मिलते–जुलते हैं। ऋग्वेद (10.167. 1) में 'योगक्षेम विषय कर्म' और फिर 7.36 में 'योगेभि कर्मभिः' का उल्लेख है। 5.81.1 में योग को और अच्छे से समझाया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे योगी अपने मन एवं बुद्धि पर नियंत्रण रखते हैं। 'होने और हो रहे (धार्यते इति धर्मः)' के जरिए कॉस्मोलॉजी की वास्तविकता का आभास कराया गया है।

अप्रैल मास में बताया गया है कि 'समय के अ–रैखिक गति' और 'परिवर्तन–चक्र' का वैदिक सिद्धांत भी सिंधु घाटी सभ्यता से मिलता है। ऋग्वेद एवं संपूर्ण यजुर्वेद 'क्रिया–चक्र' और 'काल–प्रवाह' को चक्रीय परिवर्तन (साइक्लिक चेंज) के रूप में परिभाषित करता है। इसी परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए वैदिक ऋषियों ने 'षडऋतु–चक्र' की व्यवस्था दी। उन्होंने 4 ऋतुओं के अतिरिक्त शरद ऋतु और वर्षा ऋतु को विशेष रूप से परिभाषित किया। ये मौसम और संस्कृति का विशिष्ट या भारतीय इकोसिस्टम है।

मई के पृष्ठ पर स्वामी विवेकानंद के एक उद्धरण के माध्यम से उन्हीं के शब्दों में यह प्रश्न पूछा गया है कि 'यदि आर्य बाहर से आए तो वेद के किसी सूक्त में ऐसा क्यों नहीं लिखा?' उन्होंने कहा कि 'भारत का पूरा चिंतन पिछड़े एवं दुर्बल को केंद्र में रखकर किया जाता है, जबकि पश्चिम विजेता को ध्यान में रखकर नियमों–व्यवस्थाओं का निर्माण करता है।' मई के कैलेंडर में 'द मैट्रिक्स' के बारे में बात करते हुए इसे कॉस्मिक क्रियाकलापों का गर्भाशय बताया गया है। यही बात सिंधु घाटी की कलाकृतियों में भी परिलक्षित होती है। ऋग्वेद का सूक्त 1. 164.46 विविधता में एकता के सिद्धांत को आगे बढ़ाता है, 'यम' के रूप में मृत्यु के सिद्धांत का भी प्रतिपादन किया गया।

जून मास में वैदिक साहित्य में मिले एक सींग वाले घोड़े और हड़प्पा में एक सींग वाले जानवर की तुलना की गई है। रामायण में ऋष्यश्रृंग की चर्चा है, जिनका जन्म हिरण के सींग से हुआ था। सिंधु घाटी सभ्यता में भी एक सींग वाले जानवर की चर्चा है, जिसे शक्ति, और उसके सींग को ईश्वर के तलवार का प्रतीक माना गया है। यूनिकॉर्न का सिद्धांत ईसाई और चीनी मान्यता में भी था। ये भारत से बाकी जगह फैला था, बाहर से यहाँ नहीं आया। जुलाई महीने के कैलेंडर में बताया गया है कि कैसे पाश्चात्य अध्ययन ने शिव को गैर–आर्य देवता बताने की कोशिश की, जबकि वेदों में उनका उल्लेख है।

अगस्त महीने के कैलेंडर में 'Oscillation' के सिद्धांत के प्रतीक अश्विनियों की चर्चा की गई है। उनके बारे में लिखा था कि वो मधु देते हैं, जिससे मृत्यु पास भी नहीं फटकती। एशिया पैसिफिक और प्राचीन ग्रीस में भी इसी तरह दो देवताओं के साथ रह कर विचरण करने वाला सिद्धांत सामने आया। आधुनिक विज्ञान भी इस 'Duality' की बात करता है। मनुष्य के दिमाग के भी 'Analytical' और 'प्दजनपजपअम' वाले दो हिस्से हैं। सितम्बर महीने के कैलेंडर में बताया गया है कि महर्षि अरविन्द ने भी आर्य–आक्रमण सिद्धांत को पूर्णतया निरस्त कर दिया था। अक्टूबर मास के कैलेंडर में उल्लिखित है कि पुर्तगाली और ब्रिटिश आक्रांता भारतीय और यूरोपीय भाषा में कई समान शब्दों को लेकर अचंभित थे। इसीलिए, उन्होंने एक इंडो–यूरोपियन लैंग्वेज सिस्टम के विकास का निर्णय लिया और बुद्ध से पहले आर्य के आक्रमण की सिद्धांत रखी। उन्होंने लिखा कि भारत पर दूसरी बार 17वीं शताब्दी में उससे एक 'ऊँची शक्ति' ने आक्रमण किया। वे साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा भारत पर किए जाने वाले आक्रमणों और आधिपत्य को तार्किक आधार प्रदान करना चाहते थे। भारतीय, ग्रीक और लैटिन भाषाओं में समानता को लेकर अंग्रेजी विद्वान थॉमस स्टीफेंस ने भी अपने भाई को गोवा से एक पत्र सन् 1583 में लिखा था। अक्टूबर के ही विवरण से यह तथ्य भी सामने आता है कि वस्तुतः पाश्चात्य विद्वान एवं दार्शनिक येन–केन–प्रकारेण यह सिद्ध करना चाहते थे कि ज्ञान–विज्ञान एवं संस्कृति का प्रवाह (फ्लो) पश्चिम से पूरब की ओर हुआ है।

इस कैलेंडर में नवंबर व दिसंबर मास के विवरण में उल्लेख है कि 'आर्य–द्रविड़ संघर्ष' सिद्धांत के जनक मैक्समूलर थे, जिसे कालांतर में ऑर्थर दे गोबिनयउ और हॉस्टन स्टीवर्ट चौंबरलेन ने आगे बढ़ाया। और आगे चलकर इसी मिथकीय अवधारणा से नाजीवाद पनपा और हिटलर के नेतृत्व में तो नस्लों की कथित शुद्धता के नाम पर घृणा व नरसंहार के कारोबार को आगे बढ़ाया गया। यूरोप ने 'आर्य–अनार्य' मिथक को परिभाषित करते हुए आर्यों की तथाकथित 'शक्ति व श्रेष्ठता' तथा 'नस्ल की शुद्धता', 'औरों से भिन्नता' आदि का ऐसा अहंकारयुक्त–आक्रामक अभियान चलाया कि 1915 से 1945 के बीच दुनिया को दो–दो विश्वयुद्ध की विभीषिका झेलनी पड़ी, विश्व–मानवता लहूलुहान हुई और करोड़ों निर्दोष जनों का खून बहा।

निष्कर्षतः यह कैलेंडर आर्य–अनार्य के मिथकीय सिद्धांतों को तो पूरी तरह निरस्त करता ही है, यह भारत की प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता पर भी नया प्रकाश डालता है। यह उपनिवेशवादियों द्वारा स्थापित मनगढ़ंत मान्यताओं एवं मिथ्या अवधारणाओं को ध्वस्त करता है। इस कैलेंडर से यह सिद्ध होता है कि वैदिक संस्कृति केवल 2000 ईसा पूर्व पुरानी नहीं, अपितु उससे बहुत पहले की है। इस कैलेंडर में बताया गया है कि कौटिल्य से पहले भी भारत में अर्थव्यवस्था, कम्युनिटी प्लानिंग, कृषि उत्पादन, खनन और धातुओं, पशुपालन, चिकित्सा, वानिकी आदि पर बात की गई है। आईआईटी, खड़गपुर द्वारा तैयार किए गए वर्ष 2022 के कैलेंडर में जनवरी से दिसंबर तक के चित्रों–साक्ष्यों–संदर्भों का स्वागत किया जाना चाहिए, उसे भविष्य के विशद एवं व्यापक शोध के लिए दिशा–निर्देशक स्रोत के रूप में उपयोग करना चाहिए, न कि उसका विरोध कर नवीन सोच, मौलिक शोध एवं बहुपक्षीय विमर्श को बाधित करना चाहिए। ज्ञान–विज्ञान पर पहरे बिठाने या विचारधारा के खूँटे से बाँधे रखने की वामपंथी एवं औपनिवेशिक मानसिकता व हठधर्मिता आज के तार्किक एवं वैज्ञानिक दौर में कदापि नहीं स्वीकार की जा सकती।

(लेखक शिक्षा प्रशासक हैं) ■

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण संरक्षण कितना जरूरी

राहुल अरोड़ा

जीवन में कभी कभी आप ऐसे पलों से होकर गुजरते हैं या कुछ अविस्मरणीय पल आपको एक नई जीवन रचना की तरफ आकर्षित करते हैं और उसी विचार को लेकर आप कुछ समय के लिए उधेड़– बुन में लग जाते हैं। जीवन में प्रथम बार माताजी को एक तोरई का बीज रोपंन करते हुए देखा। मन में यह जानने की अति जिज्ञासा हुई कि यह बीज अंकुरित कैसे होगा मताजी ने बताया कि यह धरती में लगाया जाता है व इसको प्रतिदिन पानी देना होता है।

मात्र 7 वर्ष की आयु के अबोध बालक के यह काफी न था उसकी जिज्ञासा अभी शांत न हुई फिर अचानक एक दिन देखा कि भूमि में से बीज का अनुकरण होकर बीज बाहर निकला तो मानों खुशी का ठिकाना ही न रह हो। जब तोरी की बेल धीरे–धीरे बड़ी हुई बेल पर फूल आये तो हर बार आश्चर्यजनक हो जाना जब तोरी भोजन स्वरूप में प्राप्त हुई तो बहुत अधिक स्वादिष्ट लगी। आज बाजर की केमिकल वाली सब्जियों में स्वाद व ताजगी कहाँ प्राप्त होती है।

वर्ष 1997 में दिल्ली आना हुआ तब से लेकर अब तक निरंतरता के साथ पर्यावरण को लिए कार्यों में लिप्त रहे चाहे वह विद्यालय का इको क्लब हो या वृक्षारोपण के कार्यकम। इस कार्य को तीव्र गति वर्ष 2010 से प्राप्त हुई जब व्यवसायिक जीवन प्रारंभ हुआ, जिस कार्यालय में नौकरी मिली उस कार्यालय के बाहर एक छोटा सा आंगन था उसी आंगन में तोरी की बेल लगा दी गयी जब यह विषय अधिकारियों के समक्ष गया तो इसकी प्रशंसा भी हुई।

उसके पश्चात वृक्षारोपण जैसे कार्य सूक्ष्म स्तर पर निरतंर चलते रहे व इसके साथ ही अन्य गतिविधयां भी, जैसे कि... पानी बचाओ, ऊर्जा संरक्षण, गीला व सूखा कचरे का उचित प्रबंध करना, होम गार्डनिंग, अवैध होर्डिंग बैनर, जैसे विषयों पर स्थानीय निवासियों को वेलफेयर एसोसिएशन के माध्यम से जागरुक किया जाने लगा।

वर्ष 2020 में कोविड जैसे महामारी के समय में तुलसी वितरण को भी इसी आयाम में स्थान देकर शामिल किया। विद्यालय व कॉलेज में जाकर विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना। इसी कड़ी में एक शुभ अवसर तब प्राप्त हुआ जब अखिल भारतीय स्तर पर पर्यावरण के कार्य को करने वाले समाजसेवी (राकेश जैन जी) से संपर्क हुआ जिनका दायित्व सह संयोजक पर्यावरण गतिविधी प्रमुख है। राकेश जैन के द्वारा दिल्ली के डॉ राम मनोहर लोहिया अस्पताल में वृक्षारोपण जैसे कार्यकम 08 जुलाई 2021 को हुआ। जिसमें कुल 24 फलदार वृक्ष लगाये गए व इस कार्यक्रम में राकेश जैन जी द्वारा पर्यावरण के विषय पर डॉ राम मनोहर लोहिया अस्पताल के चिकित्सक टेक्निकल स्टाफ व अन्य कर्मचारी वर्ग को पर्यावरण का महत्व पर बौद्धिक देकर पर्यावरण के महत्व से अवगत कराया गया दिल्ली के डॉ राम मनोहर लोहिया अस्पताल में यह अपने किश्म का एक नया प्रयोग था।

वर्तमान में अपने कई ऐसे मित्र जो पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे रहे थे उनके साथ यमुना स्वच्छता अभियान, थैले वाला भारत एवं प्लास्टिक का उपयोग न किया जाए जैसे प्रमुख विषयों पर संक्षिप्त नाट्य कार्यक्रम द्वारा लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया। यमुना के किनारे पर मिलने वाले मृत जीव जैसे स्वान (कुत्ता), पक्षी इत्यादि के निस्तारण पर कार्य किया गया जैसे गड्ढा खोदकर भूमि में दबा देना। इसके साथ ही पॉलिथीन भगवान की मूर्तियां मेडिकल वेस्ट इत्यादि जैसे दूषित संक्रमित कचरे का यमुना के किनारे पाया जाना अत्यधिक चिंताजनक विषय है इसे आमजन को सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूक किया गया जिससे वह इस प्रकार का कोई भी कचरा यमुना में न फेंके। यमुना नदी की सफाई के बाद जो कचरा निकाला जाता है उसे दिल्ली विकास प्राधिकरण की सहायता से उठवा कर भिजवाने का कार्य भी पर्यावरण मित्रों द्वारा किया जाता है।

रविवार को अधिकतया यमुना क्लीनिंग ड्राइव कालिन्दी कुंज घाट पर की जाती रही है इसके साथ ही थैले वाला भारत जैसे कैम्पेन दिल्ली की व्यस्तम रहने वाली जगह सरोजनी नगर मार्किट में आयोजित किया जाने लगा earth warrior के द्वारा जब कभी भी आप घर से बाज़र जाये अपना साथ कपड़े का थैला अवश्य लेकर जाए जिससे आप अपनी दैनिक उपभोग व उपयोग की वस्तुओं को

ISSN No. 2581-3528

प्लाटिक की थैली में न लेकर प्लास्टिक का उपयोग काम कर सकते हैं व इसमें साथ ही शेर गधे खरगोश जैसे वेशभूषा को पहन कर भी पर्यावरण के महत्व को समझने का प्रयत्न किया गया जिसमें आमजन का काफी सहयोग भी मिलता रहा है। साथ ही छोटे–छोटे वीडियो क्लिप भी सोशल मीडिया के माध्यम से पर्यावण संरक्षण व जागरूकता के लिए बनाए जाने लगे। पेपर कप जिसे हम सभी अधिकतर कागज से बना हुआ ही समझते है यह हम सभी का भ्रम भी है इसी विषय मे IIT खड़गपुर की वर्ष 2020 में की गई रिसर्च के विषय से भी आम जन को सोशल मीडिया व बौद्विक देकर इस विषय पर जागरूक करने का प्रयास किया गया कि पेपर कप में जब कोई गर्म पदार्थ जैसे चाय काफी सूप इत्यादि का उपयोग किया जाता है 100 ML गर्म पदार्थ से 25000 माइक्रोप्लास्टिक हम सभी के शरीर में प्रवेश कर जाती है विशेष कर सरकारी दफ्तरों के कर्मचारियों से आग्रह किया आप प्रति दिन चाय काफी इत्यादि अपने निजी कप का इस्तेमाल करे न कि पेपर कप, प्लाटिक कप इत्यादि का उपयोग न करे। अवैध होर्डिंग बैनर के लिए स्थानीय नेताओं से आग्रह किया कि यह पर्यावरण के लिए बहुत ही हानिकारक है इसके विकल्प जैसे मुहल्ला सभा वेलफेयर एसोसिएशन इत्यादि का सहारा ले सकते है। वाहन चलाते समय हॉर्न का उपयोग केवल आवश्यक परिस्थितियों में ही किया जाना चाहिए इससे ध्वनि प्रदूषण कम होता है। सामाजिक कार्यक्रम जैसे भण्डारे, लंगर इत्यादि में कार्यक्रम के आयोजकों से मिलकर निवेदन करना कि प्लास्टिक व थर्माकोल के स्थान पर वृक्ष की सूखी पत्तियों से बने डोने व पत्तल का उपयोग करना जो कि पर्यावरण के अनुकूल होते है।

पर्यावरण की रक्षा सुरक्षा व संवर्धन हम सभी भारतीय जन–जन की जिमेवारी बनती है आओ वृक्ष लागये धारा को फिर से हम सभी मिलकर हरा–भरा बनाये। पर्यावरण को बेहतर बनाने से हम सभी का स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा और स्वच्छ व खुशहाल पर्यावरण मनुष्य को मानसिक व शारीरिक लाभ भी प्रदान करता है अतः पर्यावरण है तो हम है। आओ सभी मिलकर संकल्प ले, आओ पर्यवरण बचाओ।

(लेखक पर्यावरण मित्र हैं) ■

केशव संवाद मासिक पत्रिका के डिजिटल
प्लेटफॉर्म से जुड़ें एवं
केशव संवाद को सोशल मीडिया
पर **FOLLOW** करें।
केशव संवाद
FACEBOOK
Keshav Samvad @keshavsamvad @KeshavSamvad samvadkeshav

पत्रिका के जनवरी अंक की समीक्षा

डॉ. प्रियंका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

केशव संवाद पत्रिका के मार्च अंक समसामयिक विषयों के साथ प्रकाशित किया गया। जिसमें कई महत्वपूर्ण लेख पाठकों हेतु प्रस्तुत है। 'हिंदुत्व सनातन परंपरा, धर्म या पंथ नहीं' शीर्षक के अंतर्गत प्रो. अनिल कुमार निगम जी लिखते हैं यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि राजनेता देश के लोगों के मन मस्तिष्क में जहर घोलने और हिंदुत्व को लेकर भ्रम फैलाने का काम निरंतर करते रहते हैं। 'स्वतंत्रता आंदोलन के उत्प्रेरक पत्रकार' विषय पर श्री अशोक कुमार सिन्हा जी लिखते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन के समय जनमानस के मनोबल को बढ़ाने एवं उनके मार्गदर्शन के लिए पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। हाल ही में हुए हिजाब मामले के उग्र रूप पर अपने विचार व्यक्त किए हैं डॉ. वेद प्रकाश शर्मा जी जिसमें वे लिखते हैं कि कुछ मौन रहकर, कुछ सामने आकर, कुछ कानूनी तरीके से समर्थन देकर इस विवाद को बढ़ाया है तथा सामाजिक समरसता में विघ्न डालने का कार्य किया गया। वहीं इसी विषय से संबंधित डॉ. अनिल उत्पल जी लिखते हैं कि मुस्लिम देश में भी हिजाब प्रतिबंधित है मुस्लिम लड़कियां न पड़े इसलिए शैक्षिक संस्थाओं को निशाना बनाया जा रहा है। हिजाब के कारण उपजे विवाद से आशंकित श्री मृत्युंजय दीक्षित जी लिखते हैं हिजाब विवाद के जरिए भारत का तालिबानीकरण करने की गहरी साजिश रची जा रही है।

श्री नरेंद्र भदोरिया जी के लेख का शीर्षक 'इन्होंने गांधी जी की नहीं सुनी' स्मृतियों से परिपूर्ण है। अपने लेख के माध्यम से श्रीमती मोनिका चौहान जी ने स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। 'भारतीय संस्कृति दुनिया को जोड़ने का भारतीय तरीका' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं श्री पंकज जगन्नाथ जी ने। प्राचीन भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं उच्च कोटि के शिक्षण स्थल के रूप में विश्व विख्यात अखंड भारत की समृद्ध शाली विरासत तक्षशिला विश्वविद्यालय पर प्रो. हरेंद्र सिंह जी का लेख है। उत्तर प्रदेश उत्तराखंड राज्य में मार्च माह में बोई जाने वाली फसलों पर बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी दे रहे हैं डॉ.एस के त्यागी जी। भारतीय साम्यवादी और महान विचारक साहित्य साधक शहीद भगत सिंह जी की पुण्यतिथि पर अपने भाव व्यक्त किए हैं श्री मोहित कुमार जी ने।

हरिद्वार में हुए धर्म संसद में संतों ने अपने उद्बोधन में हिंदू समाज को स्वयं की रक्षा की बात की इन्हीं बातों को तथ्यों और प्रश्नों के साथ लेख के माध्यम से श्रीमती अनुपमा अग्रवाल जी ने रखा है क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता समुदाय विशेष के लिए आरक्षित है? सभी धर्मों को बराबर दृष्टि से देखे जाने की भावना केवल संविधान से ही नहीं प्राप्त होती अपितु सनातन संस्कृति का एक हिस्सा है और इसी विषय पर अपने लेख 'कब तक चलेगा यह धर्मांतरण' पर प्रकाश डाला है श्रीमती रंजना मिश्रा जी ने।

भारत की सनातन संस्कृति, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और विश्व में सशक्त होती भारत की भूमिका के प्रति सदैव संकुचित मानसिकता का परिचय देने वाले मोहम्मद हामिद अंसारी और उनकी भारत विरोधी मानसिकता को दर्शाया है डॉ. प्रताप निर्भय सिंह ने। 'उत्सव मंथन' में सुश्री नीलम भागी जी ने महाशिवरात्रि पर्व व नव संवत्सर की महिमा का वर्णन किया है।1 फरवरी 2022 को संसद में प्रस्तुत केंद्रीय बजट में पर्यावरणीय पहल पर लिए गए निर्णय को बता रहे हैं डॉ. आनंद मधुकर जी। 'पहनावा एक पहचान' शीर्षक के अंतर्गत बुर्का व हिजाब के विशेष संदर्भ की पृष्ठभूमि रखी है प्रो. विनोद सिंह भदोरिया जी ने। छद्म धर्मनिरपेक्षता और राजनैतिक महत्वाकांक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं डॉक्टर उर्विजा शर्मा जी ने भारत के प्राचीन पवित्र नगरीयों में से अयोध्या के पौराणिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर विस्तृत जानकारी दे रही हैं श्रीमती शिखा सिंह जी।

नीता सिंह

प्रधान संघ ब्लॉक अध्यक्ष
राठ (हमीरपुर)

हिन्दू नववर्ष
नव संवत्सर

विक्रम संवत्
2079

एवं
चैत्र नवरात्रि
की हार्दिक शुभकामनाएं